INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

HANDWRITTEN NOTES

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

RAS

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

भाग-4

भारत का इतिहास + राजव्यवस्था

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

(Rajasthan Administrative Service)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – 4

भारत का इतिहास + राजव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) Pre.**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Order Link - **https://bit.ly/ras-pre-notes**

WhatsApp Link- **https://wa.link/6r99q8**

Contact Us - 8233195718, 9694804063,7014366728,8504091672

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

प्राचीनकालीन भारत

1. भारत के सांस्कृतिक आधार 1

- सिन्धु एवं वैदिक काल: छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा और नये धार्मिक विचार- आजीवक, बौद्ध तथा जैन

2. प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ 22

- मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव एवं चोल

3. प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु 55

4. प्राचीन भारत में भाषा एवं साहित्य का विकास 76

- संस्कृत, प्राकृत एवं तमिल

मध्यकालीन भारत

1. अरबों का सिन्ध पर आक्रमण 83

2. सल्तनतकाल 87

- प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ
- विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

3. मुगलकाल 106

- राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा

4. मध्यकाल में कला एवं वास्तु 111

- चित्रकला एवं संगीत का विकास

5. भक्ति तथा सूफी आंदोलन 119

- धार्मिक एवं साहित्यिक योगदान

आधुनिक भारत का इतिहास

(प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 1964 तक)

1. आधुनिक भारत का विकास 127

- यूरोपीय कम्पनियों का आगमन
- मुग़ल साम्राज्य का पतन
- मराठा साम्राज्य
- गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय इत्यादि

2. राष्ट्रवाद का उदय 153

- 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह
- 1857 की क्रांति
- बौद्धिक जागरण; प्रेस; पश्चिमी शिक्षा।
- 19वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक -धार्मिक सुधार: विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ

3. स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन 184

- विभिन्न अवस्थाएँ, धाराएँ,
- महत्वपूर्ण योगदानकर्ता एवं देश के अलग-अलग हिस्सों का योगदान

4. स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण- राज्यों का भाषायी पुनर्गठन 246

- नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, विज्ञान एवं तकनीकी का विकास

भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था एवं शासन प्रणाली

1. संविधान सभा एवं ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि	255
2. भारतीय संविधान की विशेषताएं	267
3. संवैधानिक संशोधन	272
4. उद्देशिका (प्रस्तावना)	282
5. मौलिक अधिकार	292
6. नीति के निदेशक तत्व	305
7. मूल कर्तव्य	310
8. राष्ट्रपति	319
9. प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	349
10. भारतीय संसद	358
11. उच्चतम न्यायालय और न्यायिक पुनरावलोकन	373
12. निर्वाचन आयोग	383
13. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक	390
14. नीति आयोग	393
15. केन्द्रीय सतर्कता आयोग	396
16. लोकपाल	404
17. केन्द्रीय सूचना आयोग	408
18. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	415
19. भारत में लोकतांत्रिक राजनीति	417
20. गठबंधन सरकारें	424
21. राष्ट्रीय एकीकरण	430

भारत का इतिहास

अध्याय – 1

भारत के सांस्कृतिक आधार

- **सिन्धु घाटी सभ्यता**

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।
- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रान्ति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

- **सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -**
  - प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
  - भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।

- मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।

- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

  कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
  ह्वीलर - 2500-1700 ई.पू.
  मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

नदी में बाढ़ के कारण — मैके, मार्शल, एस.आर .राव

बाह्य आक्रमण — गार्डन चाइल्ड, व्हीलर, पिगट

जलवायु परिवर्तन — आरेल स्टाइन, अमला नन्द घोष

प्राकृतिक आपदा - केन्यू. आर. कनेडी

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

इस सभ्यता का विस्तार→

- इस सभ्यता का विस्तार **पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते हैं ।

मोहनजोदड़ों	हड़प्पा
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल

- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**
- **गुजरात**
  धौलावीरा, सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिखी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगत्रार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर

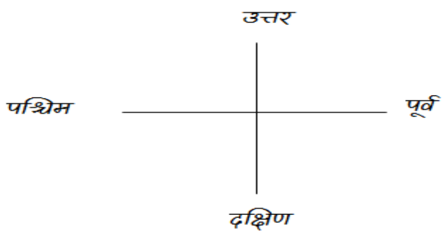

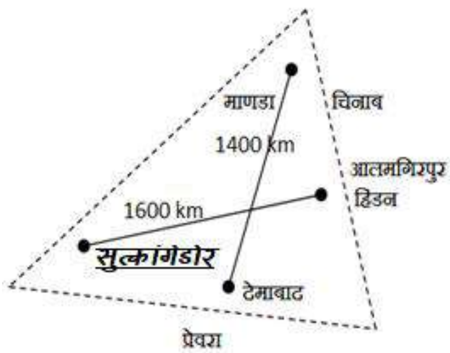

स्थल	**नदियों के नाम**	**उत्खन्न का वर्ष**	**उत्खननकर्ता**	**वर्तमान स्थिति**
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटद्दीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955 तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंड़न	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)
बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मदसार	1990-91	रविन्द्र नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।
- सिन्धु सभ्यता के 7 नगर
- हड़प्पा
- बनावली
- मोहनजोदड़ों
- धौलावीरा
- चन्हूदड़ों
- लोथल
- कालीबंगा

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

- **हड़प्पा**
  रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी।
  खोज- वर्ष **1921** में
  उत्खनन-

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा।
ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरुप वत्स द्वारा
iii. 1946 में मार्टीमर ह्वीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।

- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम व्हीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है।
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं।
  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा जोड़ा सही नहीं हैं?

A. ई. जे. एच. मैके - सुमेर से लोगों का पलायन

B. मार्टीमर व्हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवसन

C. अमलानंद घोष - हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता से हुआ

D. एम.आर. रफीक. मुगल - हड़प्पा सभ्यताने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।

उत्तर - D

मोहनजोदड़ों

- **सिन्धु नदी** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  मार्शल
  जे.एच. मैके
  जे.एफ. डेल्स
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- मृतकों का टीला
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले **चाँदी के दो सिक्के** मिले हैं।
- **वस्त्र निर्माण** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण - मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है। (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खम्भों वाला सभाभवन** मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- बहुमंजिली इमारतों के साक्ष्य, पुरोहित आवास, पुरोहितों का विद्यालय, पुरोहित राजा की मूर्ति, कुम्भकारों की बस्ती के प्रमाण भी मोहनजोदड़ों से मिले हैं।
- बड़ी संख्या में **कुओं** की प्राप्ति ।
- 8 कक्षों वाला **विशाल स्नानागार** भी यहीं से प्राप्त हुआ है।
  मार्शल- आश्चर्यजनक निर्माण

कालीबंगा-

- खोज **अमलानन्द घोष** द्वारा **गंगानगर** में
- **सरस्वती नदी** (वर्तमान **घग्घर** के तट पर)
- कालीबंगा **वर्तमान में हनुमानगढ़** में है।
- **उत्खनन - बी.बी लाल** 1953 में
  वी. के. थापड़
- कालीबंगा - काले रंग की चूड़ियाँ
- कालीबंगा - सैंधव सभ्यता की तीसरी राजधानी है।
- एक साथ **दो फसलों की बुवाई** तथा जालीदार जुताई के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा से प्राप्त दुर्ग दो भागों में बंटा हुआ- द्विभागीकरण है।
- **सड़कों को पक्का** बनाने का प्रमाण कालीबंगा से प्राप्त हुआ है।
- **युग्म शवाधान** का साक्ष्य शवों का अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों के साक्ष्य यहाँ से प्राप्त हुए हैं।

- ***भूकम्प*** *आने के प्राचीनतम प्रमाण यहीं से प्राप्त हुए हैं।*
- ***वृषभ की ताम्रमूर्ति*** *भी कालीबंगा से प्राप्त हुई है।*
- *यहाँ से प्राप्त लेखयुक्त बर्तन से स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी।*

चन्हूदड़ों-

- *खोज-* ***एन. जी. मजूमदार*** *– सिन्धु तट पर डकैतों ने हत्या कर दी।*
- *उत्खनन -****मैके*** *ने किया।*
- *सिन्धु सभ्यता का यह* ***औद्योगिक शहर*** *था।*
- *यहाँ* ***मणिकारी, मुहर बनाने, भार-माप*** *के बटखड़े बनाने का काम होता था।*
- *सिन्धु संस्कृति के बाद विकसित झूकर- झांगर संस्कृति के अवशेष यहाँ से ही मिले।*

लोथल

- ***साबरमती एव भोगवा नदी के संगम*** *पर ज्यादातर हिस्सा भोगवा के तट पर*
- *खोज एस. आर. राव* ***(रंग नाथ राव)***
  - *लघु हड़प्पा*
  - *लघु मोहनजोदड़ों की संज्ञा*
- *बन्दरगाह या जल भण्डार या* ***गोदीबाड़ा*** *यहाँ की सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है।*
- *लोथल का बन्दरगाह ही सिन्धु सभ्यता की सबसे बड़ी इमारती संरचना है।*
- *लोथल से वृत्ताकार या चतुर्भुजाकार* ***अग्निवेदी*** *पाई गई हैं।*
- *लोथल का मिश्र एवं मेसोपोटामिया के साथ सीधा व्यापार होता था।*
- *लोथल का दुर्ग शासक का आवास था ।*

धौलावीरा

- *खोज-* ***जे.पी. जोशी*** *द्वारा - (1967-68) में मनहर एवं मानसेहरा नदियों के बीच कादिर द्वीप पर खोज की।*
- *धौलावीरा एक* ***आयताकार नगर*** *था। जो तीन भागों में विभक्त था।*
- *धौलावीरा से* ***जल-प्रबंधन के साक्ष्य*** *प्राप्त हुये हैं।*
- *भारत के विशालतम सिन्धु सभ्यता स्थल धौलावीरा तथा राखीगढ़ी है।*
- *धौलावीरा से* ***घोड़े की कलाकृतियों*** *के अवशेष मिले हैं।*

सुरकोटड़ा

- ***घोड़े की अस्थियों*** *के साक्ष्य मिले हैं।*
  - *मिट्टी से बनी घोड़े की आकृति- मोहनजोदड़ों*
  - *घोड़े की हड्डियां- सुरकोटड़ा*
  - ***तीन मृणमूर्तियाँ - लोथल***

बनावली

- ***रंगोई नामक नदी*** *के तट पर*
- *यहाँ से मिट्टी का हल, बटखरा तथा बहुत सारे* ***घरों में अग्निकुण्ड*** *के साक्ष्य मिले।*
- *बनावली* ***समृद्ध लोगों का नगर*** *था।*

रोपड़

- ***सतलज नदी के बायें तट*** *पर स्थित*
- ***आधुनिक नाम रूपनगर***
- *स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सैंधव सभ्यता का उत्खनित स्थल (भारत का)*
- *खोज-****बी.बी. लाल 1950***
- *उत्खनन-* ***यज्ञ दत्त शर्मा*** *1953-56*
- *रोपड़ से एक ऐसा कब्रिस्तान मिला है जहां* ***मनुष्य के साथ पालतू कुत्ता भी दफनाया*** *गया है।*

राखीगढ़ी

- *भारत में स्थित सबसे बड़ा सिन्धु सभ्यता स्थल*

मांडा - उ.प्र.

- *7 नवीनतम उत्खनित स्थल।*
- *टकसाल गृह का साक्ष्य।*
- *घोड़े की हड्डियों के साक्ष्य मिले हैं।*
  - *मिट्टी से बनी घोड़े की आकृति- मोहनजोदड़ों*
  - *घोड़े की हड्डियां- सुरकोटड़ा*
  - *तीन मृणमूर्तियाँ - लोथल*

अल्लाहदीनो

- *यह बिना सुरक्षा दीवार से घिरा हड़प्पा का एक गाँव है।*

कुन्तासी

- *भारत में प्राप्त विशालतम हड़प्पा कालीन बस्ती।*

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रश्न - वरकारी संप्रदाय की मुख्य पीठ अवस्थित है -

A. श्रृंगेरी में **B. पंढ़रपुर में**
C. नाडियाँ में **D. वाराणसी में**

उत्तर- B

प्रश्न - संप्रदाय, जो नियति के अटलता में विश्वास करता था?

A. आजीवक **B. चार्वाक**
C. बौद्ध **D. जैन**

उत्तर – A

"सारांश"

- मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल से हुई है।
- कालीबंगा की सभ्यता आद्य ऐतिहासिक काल की है । इस काल की लिपि को सर्पिलाकार लिपि कहते हैं।
- सिंधु घाटी सभ्यता को सर्वप्रथम हड़प्पा नाम दिया गया। इसकी खोज 1921 ई. में दयाराम साहनी ने की थी।
- हड़प्पा सभ्यता को काँस्ययुगीन सभ्यता भी कहा जाता है। इसका फैलाव रावी नदी के किनारे हैं।
- 1922 ई. में राखाल दास बनर्जी ने मोहनजोदड़ो की खोज की।
- राजस्थान में सिंधु घाटी सभ्यता के स्थल कालीबंगा, बालाथल, तरखान वाला ड़ेरा है।
- हड़प्पा से दुर्ग, रक्षा प्राचीन, निवासगृह, चबूतरा, अन्नागार तथा तांबे की मानव आकृति के साक्ष्य मिले हैं।
- मोहनजोदड़ो से कच्ची ईंटों के चबूतरे, स्तूप, चाँदी के 2 सिक्के, कपास के प्रमाण, कुँए, कक्षों का विशाल स्नानागार, सभा भवन आदि के साक्ष्य मिले हैं।
- कालीबंगा की खोज अमलानंद घोष द्वारा गंगानगर में की गई, लेकिन यह वर्तमान में हनुमानगढ़ में घग्गर नदी के तट पर है।
- कालीबंगा का उत्खनन 1953 ई. में बी. बी. लाल तथा वी. के. थापड़ ने किया था।
- कालीबंगा से दो फसलों की बुवाई, पक्की सड़कें, युग्म शवाधान, भूकंप, वृषभ की ताम्रमूर्ति, लेखयुक्त बर्तन आदि के साक्ष्य मिले हैं।
- चन्हुदड़ो की खोज N.G मजूमदार ने तथा उत्खनन मैंके ने किया था यह एक औद्योगिक शहर था।
- लोथल साबरमती व भोगवा नदी के संगम पर स्थित है, इसकी खोज R.N राव ने की। यहां से अग्निवेदी प्राप्त हुई हैं।
- सिंधुवासी शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों थे। यहाँ से गेहूँ, जौ, चावल, तेल, सरसों, दाल, आदि फसलों के साक्ष्य मिले हैं।
- भारत में आर्यों की जानकारी ऋग्वेद से मिलती है।
- ऋग्वेद में 10 मंडल, 1028 सूक्त, 10580 श्लोक है। यह सबसे प्राचीन वेद है।
- वेद-4, उपनिषद्- 108, पुराण-18 की संख्या में पाए जाते हैं।
- सामवेद संगीत का प्राचीनतम स्रोत है, इसके मंत्र सूर्य देवता को समर्पित है।
- पुनर्जन्म की अवधारणा सर्वप्रथम वृहदारण्यक उपनिषद से आयी।
- बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिए गये।
- नालंदा विश्वविद्यालय गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थकर हुए,जो कि वर्धमान महावीर थे (24वें) संस्थापक एवं प्रथम ऋषभदेव थे।

• महत्त्वपूर्ण प्रश्न –

प्रश्न-1. मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की पुरातात्विक खुदाई के प्रभारी कौन थे ?

A. लार्ड मैकाले B. सर जॉन मार्शल
C. क्लाइव D. कर्नल जेम्स टॉड

उत्तर – B

प्रश्न-2. सिंधु घाटी सभ्यता के किस स्थान की सर्वप्रथम खुदाई की गई?

A. मोहनजोदड़ो B. कालीबंगा
C. हड़प्पा D. लोथल
उत्तर – C

प्रश्न-3. वह सील जिस पर एक योगी की आकृति बनी हुई है, जो पशुपति शिव जैसी दिखाई देती है मिली है?
A. मोहनजोदड़ो B. हड़प्पा
C. लोथल D. कालीबंगा
उत्तर – A

प्रश्न-4. सर्वप्रथम मानव ने निम्न किस धातु का उपयोग किया?
A. सोना B. चाँदी
B. C. तांबा D. लोहा
उत्तर – C

प्रश्न-5. किस हड़प्पा स्थल से एक साथ दो फसलें उगाई जाने के साक्ष्य मिलते हैं?
A. हड़प्पा B. रोपड़
C. बणावली D. कालीबंगा
उत्तर - D

प्रश्न-6. 'यज्ञ' संबंधी विधि विधानों का पता चलता है?
A. ऋग्वेद से B. सामवेद से
C. ब्राह्मण ग्रंथों से D. यजुर्वेद से
उत्तर – D

प्रश्न-7. प्रजापति की पुत्रियों के नाम हैं?
A. ऊषा व अदिति B. सभा व समिति
C. घोषा व अपाला D. उमा व सरस्वती
उत्तर – B

प्रश्न-8. ऋग्वेद में आर्य शब्द किसका वाचक है?
A. जाति B. धर्म
C. व्यवसाय D. गुण
उत्तर – D

प्रश्न-9. चारों आश्रमों का उल्लेख किस उपनिषद् में हुआ है?
A. मुण्डकोपनिषद् B. छान्दोग्योपनिषद्
C. वृहदारण्यकोपनिषद् D. जाबालोपनिषद्
उत्तर – D

प्रश्न-10. 16 महाजनपदों की सूची किस बौद्ध ग्रंथ में मिलती है?
A. त्रिपिटक B. अंगुत्तर निकाय
C. ललित विस्तार D. दीप वंश
उत्तर – B

प्रश्न-11. निम्नलिखित में से कौन - सा सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित नहीं है?
A. स्यादवाद B. अनेकांतवाद
C. सर्वास्तिवाद D. पंचमहाव्रत
उत्तर – C

प्रश्न-12. योगाचार्य दर्शन संप्रदाय संबंधित है?
A. सांख्य योग से B. शंकर वेदांत से
C. हीनयान से D. महायान से
उत्तर - D

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- कनिष्क का चीन के शासक पान चाओ से युद्ध हुआ था जिसमें पहले उसकी पराजय हुई पर बाद में उसकी विजय हुई ।
- कनिष्क के समय कश्मीर के कुण्डलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ, जिसमें बौद्ध धर्म हीनयान व महायान में विभाजित हो गया ।
- संगीति के अध्यक्ष वसुमित्र तथा उपाध्यक्ष अश्वघोष थे ।
- कनिष्क नए कश्मीर को जीतकर वहाँ कनिष्कपुर नामक नगर बसाया इसे द्वितीय अशोक भि कहा जाता है ।
- इसके शासन काल में **गंधार एवं मथुरा कला शैली का जन्म हुआ ।**
- इसके दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन तथा चरक विद्यमान थे । आयुर्वेदाचार्य चरक, कनिष्क का वैद्य था ।
- कनिष्क भारतीय इतिहास में अपनी विजय, धार्मिक प्रवृत्ति, साहित्य तथा कला का प्रेमी होने के नाते विशेष स्थान रखता है।
- **कल्हण ने भी अपनी 'राजतरंगिणी'** में कनिष्क, झुष्क और हुष्क द्वारा कश्मीर पर राज्य तथा वहाँ अपने नाम पर नगर बसाने का उल्लेख किया है।
- इनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि सम्राट कनिष्क का राज्य कश्मीर से उत्तरी सिन्ध तथा पेशावर से सारनाथ के आगे तक फैला था।

कनिष्क के उत्तराधिकारी

- कनिष्क के उत्तराधिकारी हुविष्क ने कश्मीर में हुष्कपुर नामक नगर की स्थापना करवाई ।
- इसके समय कुषाण सत्ता का प्रमुख केन्द्र पेशावर से हटकर मथुरा पहुँच गया ।
- इसके सिक्कों पर शिव, स्कन्द तथा विष्णु की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं ।
- इसके बाद कनिष्क द्वितीय एवं वासुदेव शासक हुए । वासुदेव शैव था, जिसकी मुद्राओं पर शिव और बैल की आकृति उत्कीर्ण है ।
- कुषाणों ने शुद्ध सोने के सिक्के (124 ग्रेन) जारी किये । इन्हें सर्वाधिक ताम्र सिक्के चलाने का श्रेय भी प्राप्त है ।
- भारतीयों के लिए महान **सिल्क मार्ग कनिष्क ने आरम्भ किया था ।** कनिष्क के सिक्कों पर बुद्ध का अंकन मिलता है ।

- **सातवाहन राजवंश**

'सातवाहन' शब्द का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में है । इस शब्द की अनेक व्याख्याएँ प्राप्त होती है । **कथा सरित्सागर में 'सात' नामक यक्ष पर चढ़ने वाले को सातवाहन कहा गया है ।**

- अभिलेखों में वर्णित सातवाहनों और पुराणों में वर्णित आन्ध्रों को एक ही समझा जाता है ।
- पुराण केवल आन्ध्र शासन का उल्लेख करते है। सातवाहन शासन का नहीं दूसरी ओर सातवाहन अभिलेखों में आन्ध्र का नाम तक नहीं मिलता
- कुछ पुराणों के अनुसार आन्ध्रों ने कुल मिलाकर 300 वर्षों तक शासन किया और यह वहीं समय है जिसे सातवाहन शासन का युग माना जाता है ।

अशोक के शिलालेखों से पता चलता है कि आन्ध्र प्रदेश और वहाँ के लोग उसके अधीन थे।

- कुछ आधुनिक विद्वानों की राय है कि सातवाहन वंश के राजा मूलतः महाराष्ट्र के रहने वाले थे ।
- पठान या प्रतिष्ठान नामक स्थान उनकी राजधानी थी । उन्होंने शीघ्र ही आन्ध्र को भी जीत लिया और अपने साम्राज्य का अंग बना लिया। लेकिन शकों ने उनसे महाराष्ट्र का अधिकांश भाग छीन लिया और वे धीरे-धीरे आन्ध्र तक ही सीमित रह गये
- अतः कालान्तर में उन्हें आन्ध्र कहा जाने लगा । कुछ विद्वानों की राय है कि सातवाहन मूलतः पश्चिम-दक्षिण वासी थे ।
- सातवाहन वंश का प्राचीनतम अभिलेख दक्षिण-पश्चिम से प्राप्त हुआ, अतः यह मत भी ठीक हो सकता है कि वे प्रारम्भ में दक्षिण-पश्चिम में रहते हों तथा बाद में पूर्व की ओर बढ़ गये हों । अतः कालान्तर में उन्हें आन्ध्र कहा जाने लगा ।

सातवाहन वंश के शासन का प्रारम्भ एवं साम्राज्य विस्तार

- पुराणों के अनुसार आन्ध्र कण्वों के भृत्य (नौकर) थे। सम्भवतः वे मगध के सम्राट कण्वों के सामन्त और अमात्य थे, वस्तुतः जिन शासकों का अभिलेखों में सातवाहन नाम से उल्लेख है।
- पुराणों में उन्हें **आन्ध्र भृत्य** कहा गया है । कुछ विद्वानों की राय है कि सातवाहन वंश के शासक पहले आन्ध्रवंशीय राजाओं के भृत्य थे ।

- यही विद्वान मेगस्थनीज के विवरण का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि आन्ध्रों को मौर्योत्तर काल का नहीं बल्कि मूलतः मौर्यों से पूर्व या समकालीन मानना उचित होगा।
- वे कहते हैं कि यूनानी यात्री मेगस्थनीज के अनुसार (जो स्वयं चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में रहा) भारत मौर्यों के बाद उस समय सबसे बड़ी सेना आन्ध्रों की ही थी और उनके राज्य में तीस बड़े-बड़े नगर थे।
  - इस समय आंध्रों की राजधानी श्रीकाकुलम थी। सम्भवतः चन्द्रगुप्त मौर्य या बिन्दुसार ने उन्हें पराजित किया क्योंकि बिन्दुसार के समय आन्ध्र निःसन्देह मगध का अंग बन चुका था।
  - किन्तु अशोक के अयोग्य उत्तराधिकारियों के काल में वह फिर स्वतन्त्र हो गया।
  - वे पूर्व से पश्चिम की ओर आन्ध्र तक बढ़ते चले गये तथा महाराष्ट्र तक का क्षेत्र उनके अधिकार में आ गया।
  - उनकी दूसरी राजधानी पैठान या प्रतिष्ठान (गोदावरी के किनारे पैठन) बनी।
  - इधर आने के बाद ही इन्हें सातवाहन (शात वाहन, सिंह है वाहन जिनका) कहलाने लगे।
  - इसीलिए इतिहास ने इन्हें सुविधा के लिए आन्ध्र -सातवाहन भी कहा है।

आन्ध्र-सातवाहन वंश के शासक

शिमुक

- पुराणों के प्रमाण के अनुसार 28 ई.पू. शिमुक (या शिमुक या सिन्धुक) नामक आन्ध्र ने (जो सम्भवतः कण्व शक्ति का नायक या सेनापति था) ने कण्व वंश के अन्तिम राजा सुशर्मन की हत्या करके सत्ता हथिया ली।
- सम्भवतः उसने शुंगो (कण्वों के पूर्व शासक वंश) के कुछ वंशजों को भी मारा जो मध्य भारत और दक्षिण बिहार में रह रहे थे। उसने 23 वर्ष तक शासन किया।

कृष्ण

- पुराणों के अनुसार शिमुक का उत्तराधिकारी उसका भाई कृष्ण (कन्ह) था जिसने 18 वर्ष तक राज किया।
- नासिक में मिले एक शिलालेख में उसका नाम मिलता है। इसी आधार पर विद्वानों की राय है कि कृष्ण के काल में सातवाहन राज्य पूर्व और पश्चिम समुद्र के बीच फैला हुआ था।

शातकर्णी

- कृष्ण के बाद शिमुक का पुत्र शातकर्णी सिहांसन पर बैठा। वह एक महान विजेता और अपने वंश का प्रतापी शासक था,
- वीर चरित नाम के बौद्ध ग्रन्थ में उसका वर्णन प्रतिष्ठान के शासक के रूप में किया गया है।
- उसने महाराष्ट्र के महारथी त्रणकयिरों की कन्या नागनिका से विवाह कर अपना प्रभाव बढ़ाया
- उसने दक्षिणापथ के अनेक प्रदेशों को आन्ध्रों के अधीन किया और दो बार अश्वमेध यज्ञ कराये।

नागनिका

- शतकर्णी की मृत्यु के समय उसके दो पुत्र वेद्न्श्री और शक्तिश्री नाबालिग थे, इसलिए उनकी माँ नागनिका ने उनकी संरक्षिका बनकर राज्यकार्य का संचालन किया।
- सातवाहन वंश का इसके आगे का इतिहास अन्धकारमय है।
- यद्यपि इस 100 वर्ष के शासकों के नामों में हकुश्री, सातिश्री, स्कंद स्तम्भि, शातकर्णी द्वितीय, अपीलक, हाल आदि के नाम प्राप्त होते हैं
- इसी काल में लगभग 78 ई. में शकों का दूसरा आक्रमण भारत पर हुआ और शकों ने महाराष्ट्र पर अधिकार कर लिया।
- **महाराष्ट्र में शकों का जो राजवंश स्थापित हुआ था, उसका नाम क्षहरात था।**
- शक क्षत्रप नहपान के जो सिक्के एवं अभिलेख नासिक प्रदेश के आस-पास से प्राप्त हुए हैं वे भी इस बात के प्रमाण हैं कि प्रथम शताब्दी के अन्त अथवा दूसरी शताब्दी के प्रारम्भ में इस क्षेत्र पर शक अधिकार कर चुके थे।

गौतमीपुत्र शातकर्णी

- लगभग 100 वर्षों के पराभव काल के व्यतीत हो जाने बाद गौतमीपुत्र शातकर्णी नामक सातवाहन के राजा ने (पुराणों के अनुसार वह सातवाहन वंश का 23वाँ राजा था) अपने वंश की खोयी हुई प्रतिष्ठा एवं ऐश्वर्य को पुनः प्राप्त कर लिया।

- उसने सन् 106 ई. से 130 ई. तक राज किया। उसने स्वयं को ब्राह्मण बताया उसने शकों, यवनों, पार्थियनों, आदि का नाश किया।
- इतिहासकार गौतमी पुत्र शातकर्णी को इस बात का श्रेय देते हैं कि उसने विदेशियों को अपने राज्य से भगा दिया तथा सातवाहन शासन को दक्षिण में सुदृढ़ किया।

शिष्ठीपुत्र श्री पुलभावि

- गौतमीपुत्र शातकर्णी के बाद उसका पुत्र पुलभावि (130-159 ई.)राजा बना।
- शक राजा रुद्रदामन के साथ इसका दो बार संघर्ष हुआ तथा दोनों बार उसे पराजित किया परन्तु बाद में सन्धि के द्वारा शक राजा ने अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया
- पुलभावि के सिक्कों और अभिलेखों से प्राप्त जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि उसके शासनकाल में आन्ध्र प्रदेश सातवाहन राज्य के अधीन था।
- उसने **औरंगाबाद को अपनी राजधानी** बनाया। उसके समय में सातवाहन वंश का विस्तार हुआ।
- उसने पूर्व तथा दक्षिण में चोल शासकों को पराजित किया।
- उसके सिक्के सुदूर दक्षिण में भी अनेक बार स्थानों पर उपलब्ध हुए हैं। उसके सिक्कों से दो जानकारियाँ मिलती हैं - प्रथम, उसका साम्राज्य सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ था।
- दूसरा, सिक्कों पर बने मजबूत मस्तूल वाले जहाजों से हमें पता चलता है कि उसकी समुद्री शक्ति अत्यधिक बढ़ी हुई थी
- सम्भवतः इसके काल में भारत के लोग समुद्र को पार करके अपने उपनिवेश बसाने के लिए विदेशों में गये।
- उसने पूर्वी एशिया में भी अपने कई उपनिवेश बसाये।

यज्ञ श्री शातकर्णी

- पुलभावि के उत्तराधिकारी कमजोर थे इस वंश का अन्तिम महान तथा उल्लेखनीय शासक यज्ञ श्री शातकर्णी (165-194) था
- सम्भवतः इसी के काल में सातवाहनों ने करीम नगर तथा वारंगल के लौह अयस्कों का प्रयोग किया होगा।
- इन दोनों जिलों में **लोहे की खदानों के महापाषाण काल में होने के संकेत प्राप्त हुए** हैं।
- वह नौ परिवहन का बहुत प्रेमी था। उसके प्राप्त सिक्कों पर जहाज के चित्र इस बात की पुष्टि करते हैं।
- उसने उत्तर कोंकण और मालवा शक राजाओं से वापस प्राप्त किये। यज्ञ श्री शातकर्णी के उत्तराधिकारी निकम्मे थे
- धीरे-धीरे सातवाहन वंश कमजोर होता चला गया। करीब 225 ई. में इस वंश का शासन पूरी तरह समाप्त हो गया।
- सातवाहनों के स्थान पर कई सामंत मुखियों ने स्वतन्त्र रूप से अपने-अपने वंशों को राजवंशो के रूप में शुरू किया।

सातवाहन वंश की भौतिक संस्कृति के पहलू

कृषि

- सातवाहन वंश के अधीन राज्य के अधिकांश लोग कृषि कार्य जानते थे। परन्तु **कृषि में चावल की उपज ही उनकी प्रधान पैदावार थी।** वे धान की रोपनी करना जानते थे। चावल के साथ वे कपास की खेती करते थे।
- कृष्णा और गोदावरी नदियों के डेल्टाओं पर चावल की खेती की जाती थी। दक्कन के लोग बढ़िया किस्म का कपास पैदा करते थे क्योंकि विदेशी विवरणों के आधार पर कहा जा सकता है कि आन्ध्र को अपनी कपास की वस्तुओं के लिए अनेक देशों में ख्याति प्राप्त थी।
- इस प्रकार दक्कन के एक बड़े भाग में एक अत्यन्त उन्नत ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास हुआ था।
- ईसा की प्रथम दो और तीन शताब्दियों में ऐसे उपकरणों की संख्या अत्यधिक बढ़ गई उत्खनन में करीमनगर जिले में एक स्थान पर लुहार की एक दुकान भी मिली है
- सम्भवतः सातवाहनों ने करीमनगर तथा वारंगल के लौह अयस्कों का प्रयोग किया होगा
- इन दोनों जिलों में लोहे की खदानों के महापाषाण काल में होने के संकेत प्राप्त हुए हैं सातवाहन वंश के नरेशों ने सिंचाई की ओर विशेष ध्यान दिया।
- उन्होंने **सिंचाई के लिए कुएँ, तालाब, आदि के निर्माण के लिए ध्यान दिया।**

सामाजिक जीवन

वर्ण

- विद्वानों की राय है कि सातवाहन मूलतः दक्कन के एक कबीला थे। मगर कालान्तर में वैदिक धर्म में दीक्षित हो गये।
- वर्ण से ब्राह्मण तथा सम्प्रदाय से वे वैदिक धर्मानुयायी थे।
- उनके सबसे प्रसिद्ध शासक गोतमीपुत्र शातकर्णी ने स्वयं को ब्राह्मण कहा है अगर उसी के दावे को सत्य मान लिया जाये तो यह मानना पड़ेगा कि उसने सातवाहन समाज में पुनः चार वर्णों की व्यवस्था को स्थापित किया।
- इसी काल में लिखी हुई याज्ञवल्क्य स्मृति में चारों वर्णों – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तथा चारों आश्रमों – ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास के आचार और कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है।
- ऐसा लगता है कि इस काल में राजा का पद तो ब्राह्मणों के पास था लेकिन क्षत्रियों का सम्मान उनसे कम नहीं था क्योंकि आन्ध्रों और उनकी समकालीन शक्तियों के अभिलेखों के आधार पर चार वर्णों के अतिरिक्त और भी वर्णों का उल्लेख मिलता है, जो सरकारी नौकरियों तथा व्यवसायों के आधार पर बने हुए थे।
- इस काल में शिल्प, वाणिज्य तथा व्यापार बढ़ने के फलस्वरूप अनेक शिल्पकार, सौदागर तथा व्यापारी सामने आये उन्होंने अपने नाम के साथ शहरों का नाम अपनाना शुरू कर दिया तथा वे इस प्रकार के उपनाम लिखने में गर्व अनुभव करते थे।
- उदाहरण के लिए **इत्र बनाने तथा बेचने वाले अपने को गंधिको कहने लगे।** कहा जाता है कि आधुनिक **"गाँधी" शब्द** इसी प्राचीन शब्द से निकला है।

परिवार

समाज की इकाई कुटुम्ब था, इसके **प्रधान को कुटुम्बियन** कहते थे सभी परिवार के सदस्य उसकी आज्ञा का पालन करते थे। परिवार संयुक्त तथा **पितृसत्तात्मक** ही थे।

स्त्रियों की स्थिति

- **सातवाहन वंश के परिवार में उत्तर भारत के विपरीत स्त्रियों को बहुत सम्मान प्राप्त है।**
- कुछ विद्वान सातवाहन परिवार को मातृसत्तात्मक परिवार तक बताते हुए लिखते हैं कि "उत्तर भारत में आर्यों के समाज में पिता का महत्त्व माता से अधिक था, परन्तु सातवाहन लोगों में ऐसे सामाजिक ढाँचे के चिन्ह दिखते हैं, जिनके अंतर्गत वंश परम्परा में मां को प्रधानता थी।
- अपने राजा का नाम उसकी मां के नाम पर रखने की प्रथा थी। उनके अनुसार गौमतीपुत्र और वसिष्ठीपुत्र जैसे नाम इस बात के संकेत हैं।
- वस्तुतः हम इन इतिहासकारों के विचार से सहमत नहीं हैं निःसन्देह सातवाहन समाज में स्त्रियों को उत्तर भारत या आर्य समाज की तुलना में बहुत अधिक सम्मान प्राप्त था लेकिन वहाँ का समाज पितृसत्तात्मक था क्योंकि राज- सिंहासन का उत्तराधिकारी पुरुष सदस्यों में से ही होता था।
- एक अभिलेख से भी पता चलता है कि पत्नी अपने पति के साथ यज्ञों में भाग लेती थी।
- अवसर आने पर वह परिवार की संरक्षिका बन जाती थी तथा विधवा होने पर उसे कष्ट नहीं उठाने पड़ते थे।

विवाह

- इस राज्य में **अन्तर्जातीय विवाह के अनेक उदाहरण मिलते हैं.** जैसे कि उल्लेख किया जा चुका है **सातवाहन शासक ब्राह्मण थे।**
- उनमें से प्रथम शातकर्णी ने क्षत्रिय वर्ण के अंगकुलीय महारानी की कन्या नामनिका तथा वसिष्ठीपुत्र पुलभावि ने शक महाक्षत्रप रुद्रदामा (रुद्रदमन) को लड़की से विवाह किया।

प्रश्न- निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए-

	राजवंश		राजधानी
(a)	शुंग	(i)	महोबा
(b)	सातवाहन	(ii)	बनवासी
(c)	कदम्ब	(iii)	पैठन
(d)	चंदेल	(iv)	पाटलिपुत्र
(e)			

सही कूट का चयन कीजिए -

	a	b	c	d
(A)	iv	iii	ii	i
(B)	iv	ii	iii	i
(C)	i	iv	ii	iii
(D)	i	i	iii	iv

उत्तर- A

स्कन्दगुप्त के बाद इस साम्राज्य में निम्नलिखित प्रमुख राजा हुए :-

- पुरुगुप्त (467-473)
- कुमारगुप्त द्वितीय (473-476)
- बुधगुप्त (476-495)
- नरसिंह गुप्त (495)
- कुमारगुप्त तृतीय

गुप्तकालीन मंदिरों की विशेषताएँ

- गुप्त कालीन मंदिरों की अपनी ही अलग विशेषताएं थी जो निम्न है –
- गुप्तकालीन मंदिरों को **ऊँचे चबूतरों** पर बनाया जाता था, जिनमें **ईंट तथा पत्थर** जैसी स्थायी सामग्रियां प्रयोग में लायी जाती थीं । जिस पर चढ़ने के लिये चारों ओर से सीढ़ियाँ बनीं होती थी तथा मंदिरों की **छत सपाट** होती थी।
- आरंभिक गुप्तकालीन मंदिरों में शिखर नहीं होते थे। मंदिरों का गर्भगृह बहुत साधारण होता था। गर्भगृह में देवताओं को स्थापित किया जाता था।
- शुरुआती गुप्त मंदिरों में अलंकरण देखने को नहीं मिलता है, परन्तु बाद के स्तम्भों, मंदिरों की दीवार चौखट आदि पर मूर्तियों द्वारा अलंकरण देखने को मिलता है।
- विष्णु मंदिर नक्काशीदार है। इसके प्रवेश द्वार पर मकरवाहिनी गंगा, यमुना, शंख व पद्म की आकृतियाँ बनी हैं।
- कई मंदिरों में गुप्तकालीन स्थापत्य कला देखने को मिलती है, गुप्तकालीन **मंदिरों की विषय-वस्तु रामायण, महाभारत और पुराणों से ली गई हैं।**
- प्रारंभिक मंदिरों की छतें चपटी होती थी, किन्तु आगे चलकर शिखर भी बनाये जाने लगे ।
- मंदिर के वर्गाकार स्तम्भों के शीर्ष भाग पर चार सिंहों की मूर्तियाँ एक दूसरे से पीठ सटाये हुए बनाई गयी हैं।
- गुप्तकाल के अधिकांश मंदिर पाषाण निर्मित हैं। केवल भीतरगाँव तथा सिरपुर के मंदिर ही ईंटों से बनाये गये हैं।

गुप्त काल के कुछ प्रमुख मंदिर इस प्रकार हैं –

- गुप्त राजवंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था।
- मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ईस्वी में तीन राजवंशो का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं।
- मौर्य वंश के पतन के पश्चात नष्ट हुई राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है।

गुप्त वंश का पतन

- 5वीं शताब्दी के आसपास उत्तरी भारत में गुप्त वंश का पतन आरम्भ हो गया था, गुप्त काल के समय के राज्य, छोटे-2 स्वतंत्र राज्यों में बंट गये व विदेशी हूणों का आक्रमण भी इसके पतन में एक महतवपूर्ण भूमिका निभाता है।
- हूणों का नेता तोरामोरा था जो गुप्त साम्राज्य के बड़े हिस्से हड़पने में सफल रहा। उसका पुत्र मिहिराकुल बहुत निर्दय व बर्बर तथा सबसे तानाशाह व्यक्ति था। दो स्थानीय शक्तिशाली राजकुमारों मालवा के यशोधर्मन और मगध के बालादित्य ने उसकी शक्ति को कुचला तथा भारत में उसके साम्राज्य को समाप्त कर दिया ।

गुप्त काल की प्रमुख साहित्यिक रचनायें

- गुप्तकाल को संस्कृत साहित्य का स्वर्ण युग माना जाता है। **बार्नेट के अनुसार** 'प्राचीन भारत के इतिहास में गुप्त काल का वह महत्त्व है जो यूनान के इतिहास में पेरिक्लीयन युग का है।'
- **स्मिथ ने गुप्त काल की तुलना ब्रिटिश इतिहास के 'एलिजाबेथन' तथा 'स्टुअर्ट'** के कालों से की है।
- गुप्त काल को श्रेष्ठ कवियों का काल माना जाता है।

हरिषेण

- हादण्डनायक ध्रुवभूति का पुत्र हरिषेण समुद्रगुप्त के समय में सन्धि विग्रहिक कुमारामात्य एवं महादण्डनायक के पद पर कार्यरत था।
- हरिषेण की शैली के विषय में जानकारी 'प्रयाग स्तम्भ' लेख से मिलती है।
- हरिषेण द्वारा स्तम्भ लेख में प्रयुक्त छन्द कालिदास की शैली की याद दिलाते हैं।

- हरिषेण का पूरा लेख **'चंपू (गद्यपद्य-मिश्रित) शैली'** का एक अनोखा उदाहरण है। इनके द्वारा रचित **महाकाव्य –**
शाव (वीरसेन)
- **चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य** के समय में सन्धिविग्रहिक अमात्य पद पर कार्यरत शाव की **काव्य शैली** के विषय में जानकारी **एकमात्र स्त्रोत 'उदयगिरि गुफा की दीवार पर उत्कीर्ण लेख है।** लेख के आधार पर यह माना जाता है कि शाव व्याकरण, न्याय एवं राजनीति का ज्ञाता एवं पाटिलिपुत्र का निवासी था।

वत्सभट्टि

इनकी काव्य शैली के विषय में जानकारी मालव संवत् के **'मंदसौर के स्तम्भ'** लेख से मिलती है। इस लेख में कुल 44 श्लोक हैं, जिनमें पहले तीन श्लोकों में सूर्य स्तुति की गई है।
वासुल ने मंदसौर प्रशस्ति की रचना यशोधर्मन के समय में की। कुल 9 श्लोकों वाला यह लेख श्रेष्ठ काव्य का अनोखा उदाहरण है।

कालिदास

- संस्कृत साहित्य के इस महान कवि की महत्त्वपूर्ण कृतियां हैं- ऋतुसंहार, मेघदूत, कुमारसंभव एवं रघुवंश महाकाव्य।
- कालिदास की सर्वोत्कृष्ट कृति उनका नाटक **'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'** है। इसके अतिरिक्त उन्होंने **मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम् नाटक की भी रचना की है।**

भारवि

'किरातार्जुनीयम्' महाभारत के वनपर्व पर आधारित है इसमें कुल 18 सर्ग है।

भट्टि

इनके द्वारा रचित **'भट्टिकाव्य'** को 'रावणवध' भी कहा जाता है। **रामायण** की कथा पर आधारित इस काव्य में कुल 22 सर्ग तथा 1624 श्लोक हैं।

गुप्तकालीन नाटक एवं नाटककार

नाटक	**नाटककार**	**नाटक का विषय**
मालविकाग्निमित्रम्	**कालिदास**	अग्निमित्र एवं मालविका की प्रणय कथा पर आधारित है।
विक्रमोर्वशीयम्	**कालिदास**	सम्राट पुरुरवा एवं उर्वशी अप्सरा की प्रणय कथा पर आधारित है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	**कालिदास**	दुष्यन्त तथा शकुन्तला की प्रणय कथा पर आधारित
मुद्राराक्षसम्	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त मौर्य के मगध के सिंहासन पर बैठने की कथा वर्णन है।
देवीचन्द्रगुप्तम	विशाखदत्त	इस ऐतिहासिक नाटक में चन्द्रगुप्त द्वारा शकराज का वध पर ध्रुव-स्वामिनी से विवाह का वर्णन है।
मृच्छकटिकम्	शूद्रक	इसमें नायक चारुदत्त, नायिका वसन्तसेना, राजा, ब्राह्मण, जुआरी, व्यापारी, वैश्या, चोर, धूर्तदास का वर्णन है।
स्वप्नवासवदत्तम	भास	इसमें महाराज उदयन एवं वासवदत्ता की प्रेमकथा का वर्णन किया गया है।
प्रतिज्ञायौगंधरायणकम्	भास	महाराज उदयन के यौगंधरायण की सहायता से वासवदत्ता को उज्जयिनी से लेकर भागने का वर्णन है।
चारुदत्तम्	**भास**	इस नाटक का नायक चारुदत्त मूलतः भास की कल्पना है।

मातृगुप्त

इनके विषय में जानकारी कल्हण के राजतरंगिणी से मिलती है। संभवतः मातृगुप्त ने भारत के नाट्य-शास्त्र पर कोई टीका लिखी थी।

भर्तृभेण्ठ

'हस्तिपक' नाम से भी जाने वाले इस कवि ने 'हयग्रीववध' काव्य की रचना की।

विष्णु शर्मा

- विष्णु शर्मा के द्वारा रचित काव्य 'पंचतंत्र' के विश्व की लगभग 50 भाषाओं में 250 भिन्न भिन्न संस्करण निकल चुके हैं।
- **पंचतंत्र की गणना संसार के सर्वाधिक प्रचलित ग्रन्थ 'बाइबिल' के बाद दूसरे स्थान पर की जाती है।**
- 16 वीं शताब्दी के अंत तक इस ग्रन्थ का अनुवाद यूनान, लैटिन, स्पेनिश, जर्मन एवं अंग्रेजी भाषाओं में किया जा चुका था।
- **पंचतत्र 5 भागों में बंटा है-**

1. मित्रभेद,
2. मित्रलाभ,
3. सन्धि-विग्रह,
4. लब्ध-प्रणाश,
5. अपरीक्षाकारित्व।

गुप्तकाल के धार्मिक ग्रन्थ

पुराण

- पुराणों के वर्तमान रूप की रचना गुप्त काल में ही हुई, इनमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख मिलता है। पुराणों का अंतिम रूप से संकलन भी गुप्त काल में हुआ है।
- दो महान गाथा काव्य रामायण और महाभारत ईसा की चौथी सदी (गुप्तकाल) में पूरे हो चुके थे। अतः इनका संकलन गुप्त युग में ही हुआ। 'रामायण' में परिवार रूपी संस्था का आदर्श रूप वर्णित है। 'महाभारत' में दुष्ट शक्ति पर इष्ट शक्ति की विजय दिखाई गई है।
- 'भगवतगीता' प्रतिफल की कामना के बिना कर्तव्य पालन के निर्देश देती हैं।

स्मृतियां

- गुप्त काल में **याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन, एवं बृहस्पति की स्मृतियां लिखी गई।** इनमें 'याज्ञवल्क्य स्मृति' सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।
- इस स्मृति में आचार, व्यवहार, प्रायश्चित आदि का उल्लेख है। हीनयान (बौद्ध धर्म) शाखा के 'बुद्ध घोष' ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा, इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'विसुद्दिभग्ग' है।
- जैन दार्शनिक आचार्य 'सिद्धसेन' ने **न्याय दर्शन** पर 'न्यायवताम्' ग्रन्थ लिखा है।

गुप्तकालीन तकनीक ग्रन्थ

रचनाकार	**रचना**
चन्द्रगोमिन	चन्द्र व्याकरण
अमर सिंह	अमरकोष (संस्कृत का प्रमाणित कोष)
कामन्दक	**नीतिसार** (कौटिल्य के अर्थशास्त्र से प्रभावित)
वात्स्ययान	**कामसूत्र**

विज्ञान

गुप्त काल में खगोल शास्त्र, गणित तथा चिकित्सा शास्त्र का विकास भी अपने उत्कर्ष पर था।

वराहमिहिर

मुख्य लेख : वराहमिहिर

गुप्त काल के **प्रसिद्ध खगोलशास्त्री वराहमिहिर** है। इनके **प्रसिद्ध ग्रन्थ वृहत्ससंहिता तथा पञ्चसिद्धान्तिका है।** वृहत्संहिता में नक्षत्र-विद्या, वनस्पतिशास्त्रम्, प्राकृतिक इतिहास, भौतिक भूगोल जैसे विषयों पर वर्णन है।

आर्यभट्ट

मुख्य लेख : आर्यभट्ट

- **'आर्यभट्टीय' नामक ग्रन्थ की रचना करने वाले आर्यभट्ट अपने समय के सबसे बड़े गणितज्ञ थे। इन्होनें**

अध्याय – 3

मुग़ल काल (1526-1707)

राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह -

अफगान

- पानीपत के मैदान में 21 अप्रैल, 1526 को इब्राहिम लोदी और चुगताई तुर्क जलालुद्दीन बाबर के बीच युद्ध लड़ा गया, जिसमें लोदी वंश के अंतिम शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर खानाबदोश बाबर ने तीन शताब्दियों से सत्तारूढ़ तुर्क अफगानी सुल्तानों की - दिल्ली सल्तनत का तख्ता पलटकर रख दिया और मुग़ल साम्राज्य और मुग़ल सल्तनत की नींव रखी। **गुप्त वंश के पश्चात् मध्य भारत में केवल मुग़ल साम्राज्य ही ऐसा साम्राज्य था, जिसका एकाधिकार हुआ था।**
- **मुग़ल वंश का संस्थापक बाबर था,** अधिकतर मुग़ल शासक तुर्क और सुन्नी मुसलमान थे, **मुग़ल शासन 17 वीं शताब्दी के आखिर में और 18 वीं शताब्दी की शुरुआत तक चला और 19 वीं शताब्दी के मध्य में समाप्त हुआ।**

बाबर का शासन काल (1526 – 1530 ई.)

- **बाबर का जन्म छोटी सी रियासत 'फरगना में 1483 ई. में हुआ था। जो फ़िलहाल उज्बेकिस्तान का हिस्सा है।**
- बाबर अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बन गया था। **बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा आलम खाँ लोदी ने भेजा था।**
- **पानीपत का प्रथम युद्ध 21 अप्रैल, 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **खनवा का युद्ध 17 मार्च 1527 ई. में राणा सांगा और बाबर के बीच हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई।**
- **चंदेरी का युद्ध 29 मार्च 1528 ई. में मेदिनी राय और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई।
- **घाघरा का युद्ध 6 मई 1529 ई. में अफगानों और बाबर के बीच हुआ,** जिसमें बाबर की जीत हुई। **नोट :- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने पहली बार तुगलमा / तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।**
- **उसकी विजय का मुख्य कारण उसका तोपखाना और कुशल सेना प्रतिनिधित्व था। भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने ही किया था।**
- **पानीपत के इस प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की 'तुलगमा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने के लिए 'उस्मानी विधि जिसे 'रूमी विधि' भी कहा जाता है, का प्रयोग किया था।**
- बाबर ने दिल्ली सल्तनत के पतन के पश्चात् उनके शासकों 'को (दिल्ली शासकों) सुल्तान' कहे जाने की परम्परा को तोड़कर **अपने आप को 'बादशाह' कहलवाना शुरू किया।**
- **पानीपत के युद्ध के बाद बाबर का दूसरा महत्वपूर्ण युद्ध राणा सांगा के विरुद्ध 17 मार्च, 1527 ई. में आगरा से 40 किमी दूर खानवा नामक स्थान पर हुआ था। जिसमें विजय प्राप्त करने के पश्चात् बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण** की थी। इस युद्ध के लिए **अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिये बाबर ने 'जिहाद' का नारा दिया था।**
- साथ ही **मुसलमानों पर लगने वाले कर तमगा की समाप्ति की घोषणा की थी,** यह एक प्रकार का व्यापारिक कर था। राजपूतों के विरुद्ध इस 'खानवा के युद्ध का प्रमुख कारण बाबर द्वारा भारत में ही रुकने का निश्चय था।
- 29 जनवरी, 1528 को बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनी राय पर आक्रमण कर उसे पराजित किया था। यह विजय बाबर को मालवा जीतने में सहायक रही थी।
- इसके बाद बाबर ने 06 मई, 1529 में 'घाघरा का युद्ध लड़ा था। जिसमें बाबर ने बंगाल और बिहार की संयुक्त अफगान सेना को हराया था।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' का निर्माण किया था, जिसे तुर्की में 'तुजुक-ए- बाबरी' कहा जाता है। जिसे बाबर ने अपनी मातृभाषा चगताई तुर्की में लिखा है।
- इसमें बाबर ने तत्कालीन भारतीय दशा का विवरण दिया है, जिसका फारसी अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना ने किया है और अंग्रेजी अनुवाद श्रीमती बेवरिज द्वारा किया गया है।

- **बाबर ने अपनी आत्मकथा में 'बाबरनामा कृष्णदेव राय तत्कालीन विजयनगर के शासक को समकालीन भारत का शक्तिशाली राजा कहा है।** साथ ही पांच मुस्लिम और दो हिन्दू राजाओं मेवाड़ और विजयनगर का ही जिक्र किया है।
- बाबर ने 'रिसाल-ए-उसज' की रचना की थी, जिसे 'खत-ए बाबरी ' भी कहा जाता है। बाबर ने एक तुर्की काव्य संग्रह 'दिवान का संकलन भी करवाया था। बाबर ने 'मुबइयान' नामक पद्य शैली का विकास भी किया था।
- बाबर ने संभल और पानीपत में मस्जिद का निर्माण भी करवाया था। **साथ ही बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में मंदिरों के बीच 1528 से 1529 के मध्य एक बड़ी मस्जिद का निर्माण करवाया था, जिसे बाबरी मस्जिद के नाम से जाना गया।**
- बाबर ने आगरा में एक बाग का निर्माण करवाया था, जिसे 'नर-ए-अफगान' कहा जाता था, जिसे वर्तमान में **'आरामबाग'** के नाम से जाना जाता है। इसमें **चारबाग शैली का प्रयोग किया गया है।**
- यहीं पर 26 दिसम्बर, 1530 को बाबर की मृत्यु के बाद उसको दफनाया गया था। परन्तु कुछ समय बाद बाबर के शव को उसके द्वारा ही चुने गए स्थान काबुल में दफनाया गया था।

हुमायूँ (1530 ई. - 1556 ई.)

- बाबर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र हुमायूँ मुग़ल वंश के शासन पर बैठा ।
- हुमायूँ ने अपने साम्राज्य का विभाजन भाइयों में किया था। उसने कामरान को काबुल एवं कंधार, अस्करी को संभल तथा हिंदाल को अलवर प्रदान किया था।
- **हुमायूँ का सबसे बड़ा प्रतिद्वंदी अफगान नेता शेर खां था, जिसे शेरशाह शूरी भी कहा जाता है।**
- हुमायूँ का अफगानों से **पहला मुकाबला 1532 ई. में दौहरिया** 'नामक **स्थान पर** हुआ। इसमें **अफगानों का नेतृत्व महमूद लोदी ने किया था। इस संघर्ष में हुमायूँ सफल रहा।**
- 1532 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीन पनाह' नामक नगर की स्थापना की।
- 1535 ई. में ही उसने बहादुर शाह को हराकर गुजरात और मालवा पर विजय प्राप्त की।
- शेर खां की बढ़ती शक्ति को दबाने के लिए हुमायूँ ने 1538 ई. में चुनारगढ़ के किले पर दूसरा घेरा डालकर उसे अपने अधीन कर लिया।
- 1538 ई. में हुमायूँ ने बंगाल को जीतकर मुग़ल शासक के अधीन कर लिया। बंगाल विजय से लौटते समय 26 जून, 1539 को चौसा के युद्ध में शेर खां ने हुमायूँ को बुरी तरह पराजित किया।
- शेर खां ने 17 मई, 1540 को बिलग्राम के युद्ध में पुनः हुमायूँ को पराजित कर दिल्ली पर बैठा। हुमायूँ को मजबूर होकर भारत से बाहर भागना पड़ा।
- 1545 ई. में हुमायूँ ने कामरान से काबुल और गंधार छीन लिया।
- 15 मई, 1555 को मच्छीवाड़ा तथा 22 जून, 1555 को सरहिन्द के युद्ध में सिकन्दर शाह सूरी को पराजित कर हुमायूँ ने दिल्ली पर पुनः अधिकार लिया।
- 23 जुलाई, 1555 को हुमायूँ एक बार फिर दिल्ली के सिंहासन पर आसीन हुआ, परन्तु अगले ही वर्ष 27 जनवरी, 1556 ई. को पुस्तकालय की सिढ़ियों से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गयी।
- **लेनपूल ने हुमायूँ पर टिप्पणी करते हुए कहा, "हुमायूँ जीवन भर लड़खड़ाता रहा और लड़खड़ाते हुए उसने अपनी जान दे दी।"**
- बैरम खां हुमायूँ का योग्य एवं वफादार सेनापति था, जिसने निर्वासिन तथा पुनः राज सिंहासन प्राप्त करने में हुमायूँ की मदद की।

शेरशाह सूरी (1540 ई. - 1545 ई.)

- **बिलग्राम के युद्ध में हुमायूँ को पराजित कर 1540 ई. में 67 वर्ष की आयु में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।** इसने मुग़ल साम्राज्य की नींव उखाड़ कर भारत में अफगानों का शासन स्थापित किया।
- इसके बचपन का नाम फरीद था। शेरशाह का पिता हसन खां जौनपुर का एक छोटा जागीरदार था।
- **1539 ई. में बंगाल के शासक नुसरत शाह को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'हजरत-ए-आला' की उपाधि धारण की ।**
- 1539 ई. में चौसा के युद्ध में हुमायूँ को पराजित करने के बाद शेर खां ने 'शेरशाह' की उपाधि धारण की ।

- 1540 में दिल्ली की गद्दी पर बैठने के बाद शेरशाह ने सूरवंश अथवा द्वितीय अफगान साम्राज्य की स्थापना की।
- शेरशाह ने अपनी उत्तरी पश्चिमी सीमा की सुरक्षा के लिए 'रोहतासगढ़' नामक एक सुदृढ़ **किला बनवाया।**
- **1544 ई. में शेरशाह ने मारवाड़ के शासक मालदेव पर आक्रमण किया ।** इसमें उसे बड़ी मुश्किल से सफलता मिली। **इस युद्ध में राजपूत सरदार' जैता 'और' कुप्पा' ने अफगान सेना के छक्के छुड़ा दिए।**

- 1545 ई. में शेरशाह ने कालिंजर के मजबूत किले का घेरा डाला, जो उस समय कीरत सिंह के अधिकार में था, परन्तु 22 मई 1545 को बारूद के ढ़ेर में विस्फोट के कारण उसकी मृत्यु हो गयी।
- प्रसिद्ध ग्रैंड ट्रंक रोड (पेशावर से कलकत्ता) की मरम्मत, करवाकर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाया।
- शेरशाह का मकबरा बिहार के सासाराम में स्थित है, जो मध्यकालीन कला का एक उत्कृष्ट नमूना है।
- शेरशाह की मृत्यु के बाद भी सूर वंश का शासन 1555 ई. में हुमायूँ द्वारा पुनः दिल्ली की गद्दी प्राप्त करने तक कायम रहा ।

अकबर (1556 – 1605 ई.)

हुमायूँ की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अकबर का कलानौर नामक स्थान पर 14 फरवरी, 1556 को मात्र 13 वर्ष की आयु में राज्याभिषेक हुआ।

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर, 1542 को अमरकोट के राजा वीरमाल के प्रसिद्ध महल में हुआ था।

- **अकबर ने बचपन से ही गजनी और लाहौर के सूबेदार के रूप में कार्य किया था ।**
- भारत का शासक बनने के बाद 1556 से 1560 तक अकबर बैरम खां के संरक्षण में रहा।
- **अकबर ने बैरम खां को अपना वजीर नियुक्त कर खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की थी।**
- 5 नवम्बर, 1556 को पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का मुकाबला अफगान शासक मुहम्मद आदिल शाह के योग्य सेनापति हेमू की सेना से हुआ, जिसमें हेमू की हार एवं मृत्यु हो गयी।
- **1560 से 1562 ई. तक दो वर्षों तक अकबर अपनी धाय मां महम अनगा,** उसके पुत्र आदम खां तथा उसके सम्बन्धियों के प्रभाव में रहा। **इन दो वर्षों के शासनकाल को पेटीकोट सरकार की संज्ञा दी गयी है।**
- **अकबर ने 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की।** इस्लामी विद्वानों की अशिष्टता से दुखी: होकर **अकबर ने 1578 ई. में इबादतखाना में सभी धर्मों के विद्वानों को आमंत्रित करना शुरू किया।**
- 1582 ई. में अकबर ने एक नवीन धर्म तौहीद-ए-इलाही 'या' दीन-ए-इलाही' की स्थापना की, जो वास्तव में विभिन्न धर्मों के अच्छे तत्वों का मिश्रण था।
- **अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयत्न किया, साथ ही विधवा विवाह को क़ानूनी मान्यता दी।** अकबर ने लड़कों के विवाह की उम्र 16वर्ष और लड़कियों के लिए 14वर्ष निर्धारित की।
- अकबर **ने 1562 ई. में दास प्रथा का अंत किया** तथा **1563 में तीर्थ यात्रा पर से कर को समाप्त कर दिया।**
- अकबर ने 1664 ई. में **जजिया कर समाप्त कर** सामाजिक सद्भावना को सुदृढ़ किया।
- 1579 ई. में अकबर ने मजहर 'या अमोघवृत्त की घोषणा की।
- अकबर ने **गुजरात विजय की स्मृति में फतेहपुर सीकरी में' बुलन्द दरवाजा 'का निर्माण कराया** था।
- अकबर ने 1575-77 ई. में सम्पूर्ण साम्राज्य को 12 सूबों में बांटा था, जिनकी संख्या बराड़, खानदेश और अहमद नगर को जीतने के बाद बढ़कर 15 हो गयी।
- अकबर ने सम्पूर्ण साम्राज्य में एक सरकारी भाषा (फारसी), एक समान मुद्रा प्रणाली, समान प्रशासनिक व्यवस्था तथा बाँट, माप प्रणाली की शुरुआत की।
- **अकबर ने 1574 -75 ई. में मनसबदारी प्रथा' की शुरुआत किया ।**

जहाँगीर (1605 ई. - 1627 ई.)

(iv) दिल्ली की जामा मस्जिद - शाहजहाँ ने दिल्ली में लालकिले के निकट जामा मस्जिद बनवाई। यह लाल पत्थर की बनी हुई है।

(v) तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन)- शाहजहाँ ने मयूर की शक्ल का एक सिंहासन बनवाया था।

(7) औरंगजेब की स्थापत्य कला –

- दिल्ली की जिस एकमात्र इमारत से औरंगजेब का नाम सम्बन्धित है, वह है लालकिले में स्थित सफेद संगमरमर की मस्जिद । **औरंगजेब ने 1679 ई. में अपनी प्रिय बेगम रबिया-उद्-दौरानी का मकबरा दक्षिण में औरंगाबाद में बनवाया था। यह द्वितीय ताजमहल के नाम से प्रसिद्ध है।**
- ताज की नकल होते हुए भी यह डिजायन, कारीगरी और रचना में उससे कहीं भिन्न है। औरंगजेब द्वारा बनवाई गई लाहौर की बादशाही मस्जिद तथा बनारस एवं मथुरा की मस्जिदें भी उल्लेखनीय हैं।

दक्षिण भारतीय मध्य-कालीन स्थापत्य कला

- दक्षिण भारत में अलाउद्दीन खिलजी और फिर मुहम्मद बिन तुगलक की सेनाओं ने आक्रमण किया। मुहम्मद बिन तुगलक की अयोग्यताओं के कारण दक्षिण भारत स्वतंत्र हो गया और बहमनी और विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई ।

बहमनी साम्राज्य और दक्षिण भारतीय मुस्लिम सल्तनत

- बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1345 में हुई।
- **बहमनी साम्राज्य के समय गुलबर्गा के किले का निर्माण हुआ। इसकी मस्जिद स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है।** इसके अलावा, बहमनी साम्राज्य में कई मकबरों का निर्माण हुआ।
- कालांतर में बहमनी साम्राज्य टूटकर पाँच सल्तनतों में बंट गया- अहमदनगर, बीजापुर, बरार, बीदर, गोलकुंडा । यह सभी अपनी अपनी स्थापत्य कला के लिए जाने जाते हैं।
- बरार सल्तनत के शासक फ़थुल्लाह इमादउल -मुल्क द्वारा गाविलगढ़ किला बनवाया गया। **गोलकुंडा में कुतुबशाही सल्तनत के मकबरे स्थित हैं।**
- **हैदराबाद स्थित चारमीनार का निर्माण 1591 में मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने कराया।** इसमें चार दरवाजे स्थित हैं। गोलकुंडा की स्थापत्य कला के अन्य उदाहरण मक्का मस्जिद, खैरतबाद मस्जिद खेरुन्नीसा (बेगम) द्वारा बनवाई गयी (, हयात बक्शी मस्जिद, तारामती बरादरी, टोली मस्जिद इत्यादि हैं।
- बीजापुर के आदिलशाही सल्तनत में भी स्थापत्य कला का बहुत विकास हुआ । इसमें **मुहम्मद अदिल शाह का मकबरा सर्वाधिक प्रमुख है, इसे बनाने में 30 वर्ष लगे थे। इस मकबरे को गोल गुंबज कहा जाता है।**

प्रश्न - सुमेलित कीजिए

वास्तु शैली	संबंधित राजवंश
a. मेहराब की निचली सतह पर कमलकलि की झालर	(i) शर्की
b. अष्टभुजीय मकबरों का उदय	(ii) विजयनगर
c. स्तंभों में बोदिगोई का प्रयोग	(iii) खिलजी
d. झुकी हुई दीवारों के साथ विशाल मुख्य द्वार	(iv) तुगलक

कूट :-	a	b	c	d
A.	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
B.	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
C.	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
D.	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

उत्तर – D

मध्यकालीन हिन्दू मंदिर

- मध्यकालीन भारत में कई हिन्दू मंदिरों का भी निर्माण कराया गया था। इसमें से **सबसे प्रमुख मीनाक्षी मंदिर मदुरई में स्थित है।** इसे मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर कहा गया है। यहाँ एक पुराना मंदिर था जिसे मलिक काफ़ूर ने नष्ट कर दिया था।
- इसका पुनर्निर्माण 16वीं -17वीं सदी में नायक राजा विश्वनाथ नायक ने कराया। यह शिव के रूप सुंदरेश्वर और पार्वती के रूप मीनाक्षी को समर्पित है।
- श्रीरंगनाथ स्वामी मंदिर - यह तमिलनाडु के तुरुचिरपल्ली में स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा मंदिर है। यहाँ के पुराने मंदिर को भी अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफ़ूर ने नष्ट कर दिया था।

- **मध्यकालीन संगीत परंपरा के आदि संस्थापक अमीर खुसरो थे। सर्वप्रथम उन्होंने भारतीय संगीत में कव्वाली गायन को प्रचलित किया।** खुसरो को तिलक, साजगिरि, सरपदा, औमन, घोर, सनम आदि रागों को प्रचलित करने के कारण उसे नायक की उपाधि प्रदान की गई थी।
- **अमीर खुसरो को सितार तथा तबले के निर्माण का भी श्रेय प्रदान किया जाता है।**
- तुर्क (मुसलमान) अपने साथ सारंगी आदि जैसे संगीत वाद्य लाये परंतु यहाँ आकर उन्होंने सितार तथा तबला जैसे वाद्यों को अपनाया।
- **अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत के महान संगीतज्ञ गोपाल को अपने दरबार में बुलाया तथा अमीर खुसरो को संरक्षण प्रदान किया।**
- फिरोज तुगलक के शासन काल में संगीत के एकीकरण की प्रक्रिया अनवरत चलती रही, इसी समय शास्त्रीय रचना रागदर्पण का फारसी में अनुवाद हुआ।
- जौनपुर के सभी शर्की सुल्तान संगीत प्रेमी थे। **हुसैन शाह शर्की ने राग ख्याल को भारतीय संगीत में सम्मिलित किया। उसके संरक्षण में संगीत शिरोमणि नामक ग्रंथ की रचना हुई।**
- हसन-ए-देहलवी को उसकी उच्च गजलों के कारण उसे **भारत का सीदी** कहा गया है।
- मालवा का शासक बाज बहादुर संगीत में रुचि रखता था। ग्वालियर के राजा मानसिंह ने संगीत को संरक्षण प्रदान किया तथा उन्हीं के संरक्षण में मान कौतूहल नामक संगीत ग्रंथ की रचना हुई तथा ध्रुपद का सृजन हुआ। मान कौतूहल में मुस्लिमों द्वारा प्रचलित नयी संगीत पद्धतियाँ भी सम्मिलित की गई थी।

- **चिन्तामण नामक संगीतज्ञ को बिहारी बुलबुल की उपाधि दी गई।** असम में उस समय शंकर नामक संगीतज्ञ का नाम बहुत विख्यात हुआ।
- जौनपुर के सूफी संत पीर बोधन भी उस काल का एक महान संगीतज्ञ था।
- **गुनयात्त-उत-मुनयास का संकलन भारतीय मुस्लिम विद्वान की भारतीय संगीत संबंधी प्रथम रचना है।** यह जौनपुर के शर्की शासकों के संरक्षण में लिखी गई।
- दक्षिण भारत के विभिन्न शासकों ने भी संगीत कला को संरक्षण प्रदान किया। **बहमनी राज्य के शासकों में से फिरोजशाह और महमूद शाह तथा बीजापुर के यूसुफ आदिलशाह ने संगीत कला को विशेष संरक्षण प्रदान किया।**
- सूफी संतों ने भी सामूहिक गान की परंपरा को स्वीकार करके संगीत कला को लोकप्रिय बनाने में बहुत सहयोग दिया। इस काल में धर्म निरपेक्ष तथा आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार का संगीत एक श्रेष्ठ स्थिति को प्राप्त कर सका था।
- **गजल और कव्वाली दोनों की गायन शैलियाँ सुल्तानों और सूफियों में समान रूप से प्रचलित थी। गजल का संग्रह दीवान कहलाता था।**
- मुहम्मद तुगलक भी बड़ा संगीत प्रेमी था। कहा जाता है कि उसके दरबार में बारह सौ गायक थे जो गाते भी थे और गाने की शिक्षा भी देते थे।
- लोदी वंश के राज्यकाल में भारतीय संगीत ने पुनः करवट ली। इसी काल में जनता में संगीत के प्रति काफी उत्साह था। इसी काल में अनेक मुस्लिम कलाकार पैदा हुए।
- **बंगाल के चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन-शैली को जन्म दिया, जो उत्तर भारत में भी लोकप्रिय हो गई।**

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

सारांश:

- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था।
- पानीपत का युद्ध 21 अप्रैल 1526 ई. को इब्राहिम लोदी और बाबर के मध्य हुआ, जिसमें बाबर की जीत हुई। जिसमें बाबर ने पहली बार तुलगमा युद्ध नीति का इस्तेमाल किया।
- भारत में तोप का सर्वप्रथम प्रयोग बाबर ने किया।
- बाबर के सेनापति मीर बाकी ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद का निर्माण करवाया।
- 1539 ई. में चौसा के 'में युद्ध में हुमायूँ को पराजित करने के बाद 'शेरशाह' की उपाधि धारण की।
- अकबर ने 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की।

- अकबर ने 1562 ई. में दास प्रथा का अंत किया तथा जजिया कर भी समाप्त किया।
- अकबर ने 1574-75 ई. में मनसबदारी व्यवस्था की शुरुआत की।
- जहाँगीर ने महरुनिसा को नूरमहल से नूरजहाँ की उपाधि दी।
- 1626 ई. में महावत खाँ ने विद्रोह किया तथा जहाँगीर को बंदी बना लिए, जो कि नूरजहाँ की सहायता से आजाद हुआ।
- जहाँगीर ने तुजुक - ए जहाँगीरी नाम से अपनी आत्मकथा लिखी।
- नूरजहाँ की माँ अस्मत बेगम ने इत्र बनाने की विधि का अविष्कार किया।
- जहाँगीर ने सूरदास को अपने दरबार में आश्रय दिया, जिसने सूरसागर की रचना की।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में लाल किला और जामा मस्जिद तथा आगरा में ताजमहल का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने सिक्खों के नवें गुरु तेग बहादुर की हत्या करवा दी।
- अकबर के तस्वीरखाना में 17 कलाकार थे। जिनमें दसवंत सबसे प्रमुख था। इसने रज्मनामा का चित्रण किया।
- अकबर के दरबार में तानसेन प्रमुख गायक था, जो ध्रुपद गायक था।
- अमीर खुसरो ने सर्वप्रथम भारतीय संगीत में कव्वाली गायन को प्रचलित किया । इन्हें सितार तथा तबले के निर्माण का श्रेय भी दिया जाता है।
- चैतन्य महाप्रभु ने कीर्तन शैली को जन्म दिया तथा उत्तर भारत में लोकप्रिय किया ।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न :-

प्रश्न-1. भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक किसे कहा जाता है?

A. बाबर B. हुमायूँ
C. शेरशाह D. अकबर
उत्तर - A

प्रश्न-2. मुगल शासक बाबर द्वारा लिखी पुस्तकें किस भाषा में है।

A. फारसी B. उर्दू
C. अरबी D. तुर्की
उत्तर - D

प्रश्न-3. भारत में चार बाग शैली का पहला मकबरा है?

A. हुमायूँ का मकबरा
B. अकबर का मकबरा
C. जहाँगीर का मकबरा
D. औरंगजेब का मकबरा
उत्तर - A

प्रश्न-4. अकबर के काल में महाभारत का फारसी अनुवाद किसके निर्देशन में हुआ ?

A. उतबी B. नाजिरी
C. अबुल फजल D. फैजी
उत्तर - D

प्रश्न-5. तुलसी द्वारा रामचरित मानस की रचना किसके शासन में की गई?

A. अकबर B. अलाउद्दीन खिलजी
C. हर्ष D. कृष्णदेव राय
उत्तर - A

प्रश्न-6. मुगल सम्राट अकबर के समय का प्रसिद्ध चित्रकार था।

A. अबुल हसन B. दसवंत
C. किशनदास D. उस्ताद मंसूर
उत्तर - B

प्रश्न-7. किसने अकबरनामा लिखा है?

A. अकबर B. बीरबल
C. अबुल फजल D. बैजू बावरा
उत्तर - C

प्रश्न-8. अकबर के नवरत्नों में राजस्थान के कौन से कवि थे?

A. चंदबरदाई B. सूर्यमल्ल
C. अबुल फजल D. तानसेन
उत्तर - C

प्रश्न-9. निम्न मुसलमान विद्वानों में से हिंदी साहित्य के लिए किसका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान है?

A. अबुल फजल
B. फैजी

- मुगलानी बेगम मुग़ल बादशाह आलमगीर द्वितीय के समय पंजाब की एक महिला सूबेदार थीं।
- रुहेला सरदार, नजीब खाँ अहमदशाह अब्दाली का विश्वासपात्र था।

प्रश्न - अजमेर में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर नजर (भेंट) भेजने वाले प्रथम मराठा सरदार कौन थे? (RAS. 2015)

A. राजा साहू, शिवानी के पौत्र

B. पेशवा बालाजी विश्वनाथ

C. नवाब बालाजी राव

D. नवाब अली बहादुर, पेशवा बालाजी राव प्रथम का पौत्र (मस्तानी नामक पत्नि से)

उत्तर - A

• मराठा साम्राज्य

- मराठा शब्द की उत्पत्ति राठा शब्द से हुई है।
- महाराष्ट्र में इनकी शक्ति का उदय हुआ।
- **दक्षिण-पश्चिम भारत का वह भाग जो पश्चिम में अरब सागर से लेकर उत्तर में सतपुडा पर्वत तक फैला हुआ है और जिसमें बम्बई, कोंकर्ण, बरार, मध्य भारत का कुछ भाग और हैदराबाद राज्य का एक तिहाई भाग सम्मिलित है, मराठा बाड़ा के नाम से जाना जाता था।**
- **ग्रांड टफ के अनुसार, "मराठों का उदय आकस्मिक अग्निकांड की भाति हुआ।"**

शिवाजी (1627-1680 ई.)

- शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल 1627 ई. की शिवनेर के पहाड़ी दुर्ग (पूना) में हुआ था।
- इनके **पिता का नाम शाह जी भोंसले और माता का नाम जीजाबाई था।**
- शिवाजी के **गुरु समर्थ गुरु रामदास थे ।**
- शिवाजी के संरक्षक दादाजी कोंण्डदेव थे।
- शिवाजी का प्रथम राज्याभिषेक 16 जून 1674 को (रायगढ़) में हुआ था।
- श्री गंगा भट्ट द्वारा हुआ था।
- शिवाजी का द्वितीय राज्याभिषेक 24 सितम्बर 1674 ई. को तांत्रिक विधि से कांची के निश्चलपुरी गोस्वामी तांत्रिक द्वारा कराया गया।
- **छत्रपति, हिन्दू धर्मोधारक, राजा शिवाजी की उपाधियां थी।**

शिवाजी की प्रारम्भिक विजय

- सर्वप्रथम शिवाजी ने 1646 ई. में तोरण दुर्ग को जीता।
- शिवाजी की दूसरी विजय 1646 ई. में ही मुरम्बगढ़ किले की थी ।
- इसके बाद शिवाजी ने 1654 ई. में पुरंदर का किला जीता ।
- 1656 ई. में शिवाजी ने जावली एवं रायगढ़ पर अधिकार किया ।
- **1657 ई. में पहली बार शिवाजी का मुकाबला मुगलों से हुआ।**
- 1657 ई. में शिवाजी ने, कोंकण प्रदेश के कल्याण, भिवण्डी एवं माहुल के किलों को जीता ।

अफज़ल खाँ की हत्या

- बीजापुर के सुल्तान ने 1659 ई. में अपने प्रधान सेनापति अफजल को शिवाजी के विरुद्ध भेजा।
- भरे दरबार में अफजल खाँ ने कहा कि, "अपने घोड़े से बिना उतरे ही उस पहाड़ी चूहे को बन्दी बना लूँगा।"
- शिवाजी के दो अंगरक्षक जीवमहल और सम्भूजी कावजी थे।
- शिवाजी ने 1659 ई. में ही अफजल खाँ की हत्या कर दी।
- 1659 ई. में औरंगजेब ने शिवाजी को समाप्त करने के लिए 'शाइस्ता खाँ को दक्षिण का सूबेदार नियुक्त किया परन्तु 1663 ई. में शिवाजी ने रात में पूना के महल पर आक्रमण किया और शाइस्ता-खाँ भाग गया।

सूरत की प्रथम लूट

- **शाइस्ता खाँ को हराने के बाद शिवाजी ने 1664 ई. में सूरत बंदरगाह को लुटा।**
- **शिवाजी ने सेठ साहूकारों को लूटा किन्तु अंग्रेजों एवं डचों की कोठियों को कोई हानि नहीं पहुँचायी।**
- इस लूट में शिवाजी को एक करोड़ से अधिक धनराशि मिली।

पुरन्दर की संधि (1665 ई.)

- शाइस्ता खाँ की असफलता और सूरत की लूट से त्रस्त होकर औरंगजेब ने शिवाजी का दमन करने के लिए आमेर के राजा जयसिंह को भेजा।
- **जयसिंह के साथ युद्ध में शिवाजी की हार हुई तथा शिवाजी ने 22 जून 1665 ई. को 'पुरन्दर की सन्धि' कर ली।**
- इस संधि के तहत शिवाजी ने 23 किले मुगलों को दे दिये और 12 किले अपने पास रखे।
- शिवाजी ने बीजापुर के सुल्तान के विरुद्ध मुग़ल सम्राट की सहायता देने का वचन दिया।
- 1666 ई. में राजा जयसिंह के आश्वासन पर शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा आये परन्तु उचित सम्मान न मिलने पर वे उठकर चल दिये। इससे नाराज होकर औरंगजेब ने शिवाजी को जयपुर भवन (आगरा) में कैद कर के रखा।
- औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि प्रदान की थी।
- **1670 ई. में शिवाजी ने पुनः मुगलों से युद्ध शुरु किया और पुरंदर की सन्धि द्वारा खोये हुए अनेक किलों को जीत लिया।**
- 1670 ई. में शिवाजी ने सूरत को दूसरी बार लूटा।
- 1672 ई. में शिवाजी ने सूरत को तीसरी बार लूटा।
- 1672 ई. में शिवाजी ने पन्हाला के दुर्ग पर अधिकार कर लिया।
- 1670-1674 ई. तक शिवाजी ने अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त कर लिया।

शिवाजी का कर्नाटक अभियान (1677 ई.)

- **शिवाजी का अंतिम और उनके जीवन का सबसे बड़ा अभियान कर्नाटक पर आक्रमण था। जिसमें बैलोर, तंजौर और जिंजी आदि प्रमुख नगर थे।**
- 1678 ई. में शिवाजी ने जिंजी के किले को जीता, यह उनकी अन्तिम विजय थी।
- **शिवाजी ने 'जिंजी' को अपने दक्षिण भारत की राजधानी बनाया।**
- **सिंदियों पर अधिकार करने के लिए शिवाजी ने नौसेना का निर्माण किया परन्तु शिवाजी पुर्तगालियों से गोआ तथा सिंदियों से चोल और जंजीरा को ना जीत सके।**
- 13 अप्रैल 1680 ई. को शिवाजी ज्वर से पीड़ित हो गये और अन्त में उनकी मृत्यु हो गई।
- पुतली बाई शिवाजी की मृत्यु के बाद सती हो गई।

शिवाजी का प्रशासन

- **शिवाजी का प्रशासन अष्टप्रधान अर्थात् आठ (8) मंत्रियों की एक परिषद द्वारा चलाया जाता था।**
- अष्टप्रधान परिषद का प्रत्येक मंत्री अपने विभाग का प्रमुख होता था, सभी मंत्री शिवाजी के उच्च सचिव के समान कार्य करते थे।

अष्टप्रधान (मंत्रिपरिषद्)

(i) पेशवा (प्रधानमंत्री)

- यह राजा का प्रधानमंत्री होता था। इसका कार्य सम्पूर्ण राज्य की देखभाल करना, सरकारी पत्रों तथा दस्तावेजों पर राजा के नीचे मुहर लगाता था।

(ii) अमात्य (पन्त व मजूमदार)

- यह **वित्त एवं राजस्व मंत्री** होता था । शिवाजी के अमात्य रामचंद्र पंत थे।

(iii) वाकियानवीस (मंत्री)

- राजा एवं दरबार के दैनिक कार्यों की देखभाल करना । **यह वर्तमान समय के गृहमंत्री की भांति होता था।**

(iv) सुमंत (दबीर)

- यह राज्य का विदेश मंत्री होता था।

(v)चिटनिस / सचिव/ शुरुनवीस

- यह पत्राचार विभाग का प्रमुख था। इसका कार्य राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य देखना तथा परगनों के हिसाब की जाँच करना था।

(vi) सेनापति (सर-ए- नौबत)

- सेना की भर्ती, संगठन, रसद आदि का प्रबन्ध करना इसका प्रमुख कार्य था।

(vii) पण्डितराव (सद्र)

- धार्मिक मामलों में यह राजा को परामर्श देता था।

(viii) न्यायाधीश

- राजा के बाद यह मुख्य न्यायाधीश होता था इसके अधिकार क्षेत्र में राज्य के सभी दीवानी तथा फौजदारी मामले आते थे।
- **पण्डितराव एवं न्यायाधीश को छोड़कर सभी युद्ध में भाग लेते थे ।**

प्रांतीय शासन

- शिवाजी ने अपने राज्य को चार प्रान्तों में बाँट रखा था।
- प्रत्येक प्रान्त सर-ए-सूबेदार के अधीन होता था ।

उत्तरी प्रान्त :- बम्बई के उत्तर में सूरत व 'सल्हेर दुर्ग से लेकर पूना' तक का भाग शामिल था। उत्तरी प्रान्त मोरो त्र्यम्बयक पिंगले के अधीन था।

दक्षिण-पश्चिमी प्रान्त :- इसमें दक्षिणी कोकण प्रदेश या समुद्रीतट सम्मिलित था। यह क्षेत्र अन्नाजी दत्तो के अधीन था ।

दक्षिण पूर्वी प्रान्त :- इस क्षेत्र में सतारा, कोल्हापुर, शामली आदि क्षेत्र शामिल थे। यह क्षेत्र दत्तो जी पंत के अधीन था ।

दक्षिण प्रान्त :- इसमें जिंजी और आस-पास का क्षेत्र शामिल था। इसका प्रमुख रघुनाथ पंथ हनुमन्ते था।

- शिवाजी ने देश को खूबों, सरकारों, परगनों और मौजों में बाँटने की पुरानी प्रणाली के बदले प्रान्तों को महालों में विभक्त किया।
- महालों को तर्फो तथा तर्फो को मौजों में बाँटा ।
- **शिवाजी के प्रान्तीय शासन में गाँव सबसे छोटी इकाई थी।**
- शिवाजी ने अधिकारियों को नकद वेतन प्रदान किया था।

राजस्व प्रशासन

- शिवाजी की राजस्व व्यवस्था रैयतवाड़ी प्रथा पर आधारित थी।
- शिवाजी ने अन्नाजी दत्तो के अधीन भूमि की विस्तृत माप कराई।
- माप का आधार जरीब थी । जिसे काठी नाम से भी जाना जाता था।
- शिवाजी ने भूमि को ठेके पर देने की प्रथा को समाप्त कर उत्पादन के अनुमान पर किसान से लगान निर्धारित किया।
- आरम्भ में शिवाजी ने उपज का 33% भाग 'कर' के रूप में वसूला बाद में इसे बढ़ाकर 40% कर दिया । कृषि को तकाबी ऋण भी प्रदान किया जाता था।
- गाँव के प्राचीन पैत्रक अधिकारी पाटिल और जिले के देशमुख / देशपाण्डे होते थे ।

चौथ :- **चौथ विजित राज्यों के क्षेत्रों से उपज के एक – चौथाई (1/4) के रूप में लिया जाता था।**

सरदेशमुखी :- यह एक अतिरिक्त कर था, जो आय का 10% या 1/10 अंश के रूप में होता था।

सैन्य प्रशासन

- शिवाजी की सैन्य व्यवस्था में किलों का प्रमुख स्थान था। शिवाजी के पास लगभग 280 किले थे।
- **घुड़सवार शिवाजी की सेना के प्रमुख भाग थे जिन्हें 'पागा' कहा जाता था।**
- सर-ए-नौबत घोड़ सेना का सबसे बड़ा सेनापति था।
- घुड़सवार दो प्रकार के बरगीर और शिलेदार थे । बरगीरों को सरकार घोड़े, हथियार आदि उपलब्ध कराती थी जबकि शिलेदार स्वयं के घोड़े व अस्त्र रखते थे।

- भारत में सर्वप्रथम रेल यात्रा का प्रारंभ ग्रेट इंडियन पेनिनसुला रेलवे द्वारा दिया गया था।
- **टेलीग्राफ /प्रथम लाइन कलकत्ता से आगरा के बीच एवं 1853 में डाक व्यवस्था की शुरुआत।**
- डॉक्ट्रिन ऑफ लेप्स (विलय नीति) लागू किया जाना एवं इसके अन्तर्गत सतारा(1848) प्रथा, संबलपुर (1849), झाँसी (1853), नागपुर (1854) इत्यादि पर कब्जा ।
- अवध का नवाब वाजिद अली शाह पर कुप्रशासन का आरोप लगाकर 1856 ई. को डलहौजी द्वारा अंग्रेजी राज्य में विलय।
- वुड्स शिक्षा डिस्पैच (1854) और अंग्रेजों द्वारा जनसमुदाय को शिक्षित करने की जिम्मेदारी लेना।।
- **सभी प्रांतों में लोक निर्माण विभाग (Public Work Department)की स्थापना।**
- **संथाल विद्रोह(1855-56)**
- **विधवा पुनर्विवाह विधेयक (1856) में पारित।**
- **डलहौजी काल के दौरान ही भारत में प्रथम इंजीनियरिंग कॉलेज Roorkee Engineering College की स्थापना हुई थी।**

लॉर्ड कैनिंग (1856 - 62):-

- तीन विश्वविद्यालयों (कलकत्ता, मद्रास एवं बंबई 1857 ई. में) की स्थापना।
- 1857 ई. का विद्रोह।
- **लॉर्ड कैनिंग ईस्ट इण्डिया कम्पनी का अन्तिम गवर्नर जनरल था ।**

गवर्नर

लॉर्ड रॉबर्ट क्लाइव (1757 - 60, 1765-67):-

- **रॉबर्ट क्लाइव को भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है। जिसने 'प्लासी के युद्ध' (23 जून, 1757) में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को पराजित कर पहली बार भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व की नींव रखी थी।**
- कलकत्ता की काउंसिल द्वारा जून 1757 में रॉबर्ट क्लाइव को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया गया तथा दिसंबर 1759 में इस नियुक्ति को कानूनी वैधता दी गई।
- अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ 'इलाहाबाद की संधि'(16 अगस्त 1765)
- **क्लाइव को 'स्वर्ग से उत्पन्न सेनानायक' भी कहा जाता है।**
- इसके समय में **अंग्रेज सैनिकों का एक श्वेत विद्रोह** हुआ था।
- क्लाइव द्वारा बंगाल से सफलतापूर्वक एक **'लुटेरा राज्य'** की स्थापना की ।
- लॉर्ड राबर्ट क्लाइव के कार्य काल में ईस्ट इंडिया कम्पनी को शाहआलम द्वारा बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा में 29 अगस्त 1765 को दीवानी अधिकार दिए गए।
- **दोहरी शासन व्यवस्था लागू।**

हेनरी वैंसिटार्ट (1760-65):-

- **बक्सर की लड़ाई (22 अक्टूबर 1764) ।**
- 20 फरवरी, 1765 ई. में अंग्रेजी एवं नये नवाब के बीच संधि ।
- **बक्सर की लड़ाई के समय वैंसिटार्ट ही बंगाल का गवर्नर था ।**

वायसराय

लॉर्ड कैनिंग (1856-62)

- 1857 ई. के विद्रोह के बाद महारानी विक्टोरिया की उद्घोषणा पर **नवंबर 1856 ई. को भारत सरकार अधिनियम पारित किया गया।**
- इसके तहत **लॉर्ड कैनिंग ब्रिटिश भारत का प्रथम वायसराय बना।**
- ई. आई. सी. ओ. के यूरोपीय सैनिकों द्वारा185 9 ई. में स्वेत विद्रोह।
- 1861 ई. में भारतीय परिषद विधेयक पारित किया गया।

लॉर्ड एल्गिन प्रथम (1862 - 1863)

- 1862 ई. में उसकी अचानक मृत्यु हो गई। सर नेपियर एवं सर डेनिस्थं द्वारा 1862 ई. सेई 1864. तक प्रशासन की देखरेख।

लॉर्ड जॉन लॉरेंस (1864-1869)

- 1865 ई. में भूटान के साथ युद्ध ।
- पंजाब और अवध किराएदारी ,1860 ,अधिनियमित किया गया था।

- भारत में दो अकाल पड़े ,पहला उड़ीसा में और दूसरा बुंदेलखंड और राजपूताना में ।
- इसके समय अवधि के दौरान एक अकाल आयोग सर हेनरी कैम्पबेल की अध्यक्षता मे स्थापित।

लॉर्ड मेयो (1869- 1872)

- भारतीय राजकुमारों की शिक्षा एवं राजनैतिक प्रशिक्षण के लिए दो कॉलेजों की स्थापना। इनमें से प्रथम कठियावाड़ मे राजकोट कॉलेज एवं दूसरा राजस्थान के अजमेर शहर में मेयो कॉलेज की स्थापना।
- **भारत के सांख्यकीय सर्वेक्षण का गठन यानि भारत की प्रथम जनगणना 1872 में प्रारंभ हुई।**
- **कृषि एवं वाणिज्य विभाग की स्थापना।**
- राज्य रेलवे व्यवस्था की शुरुआत।
- अंडमान निकोबार द्वीप समूह में एक कैदी द्वारा 1872 ई. में उसकी हत्या।

लॉर्ड नार्थब्रुक (1872-1876)

- प्रिंस ऑफ वेल्स एडवर्ड III की 1875 ई. में भारत यात्रा।
- अफगनिस्तान के प्रति एक जोशभरी 'अग्र(फॉरवर्ड')' नीति का अनुसरण।
- अफ़गान प्राशन पर उसका त्यागपत्र ।
- कुका आंदोलन की शुरुआत ।
- आयकर का उन्मूलन तथा 1873 में बिहार और बंगाल में अकाल पड़ा ।

लॉर्ड लिटन (1876-1880)

- **1876 ई. का शाही उपाधि अधिनियम ।**
- 1 जनवरी 1877 ई. में दिल्ली दरबार का आयोजन जिसमें **रानी विक्टोरिया को भारत की महारानी(केसर-ए-हिन्द)की उपाधि प्रदान करना।**
- 1878 ई. का वर्नाक्युलर प्रेस विधेयक एवं आर्म्स विधेयक।
- द्वितीय अफ़गान युद्ध 1878-80 सर रिचर्ड स्ट्रेची के अधीन 1878 ई. में प्रथम अकाल आयोग की नियुक्ति ।
- मोहम्मदन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज की नींव अलीगढ़ में 1877 में लॉर्ड लिटन के द्वारा रखी गई थी।

- **वैधानिक सिविल सेवा परीक्षा (1879) जो इंग्लैंड में आयोजित,** उसमें उम्मीदवारों के लिए अधिकतम उम्र सीमा 21 से 19 कर दी गई।

लॉर्ड रिपन (1880 – 1884)

1881 ई. का प्रथम फैक्ट्री विधेयक पारित ।

- **1881 ई. में भारत की प्रथम नियमित जनगणना- (254 million) ।**
- **1882 ई. में स्थानीय स्वशासन की शुरुआत ।**
- वर्ना क्यूलर प्रेस विधेयक 1882 ई. में रद्द ।
- केन्द्रीय वित्त का 1882 ई. में विभाजन।
- **सर विलियम हंटर के अधीन शिक्षक आयोग का 1882 ई. में गठन।**
- 1863 ई. में अकाल संहिता।
- इल्बर्ट बिल विवाद -(1883)यूरोपियों के खिलाफ मामलों की सुनवाई करने के लिए भारतीय न्यायाधीशों पर लगाई गई अयोग्यताओं को हटाया जाना ।
- सिविल सेवा के लिए प्रवेश की अधिकतम उम्र बढ़ाकर 21 वर्ष कर दी गई ।

लॉर्ड डफरिन (1884 - 1888):-

- **तृतीय बर्मा युद्ध(1885 - 88) ।**
- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय लार्ड क्रास राज्य सचिव थे ।**
- इसी के शासनकाल में 28 दिसम्बर 1885 ई. को **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ए. ओ. ह्यूम ने की ।**

प्रश्न - निम्नलिखित कथनों में से कौनसा / कौन से सत्य हैं ? (RAS. 2018)

(i) काँग्रेस के नागपुर सत्र (1920) के पश्चात् प्रांतीय काँग्रेस समितियों का गठन भाषायी आधार पर किया गया था।

(ii) 1948 ई. में काँग्रेस ने भाषायी आधार पर प्रांतो के गठन की माँग को अस्वीकार कर दिया।

निम्नलिखित कूट में से सही उत्तर चुनिए

A. केवल (i)
B. केवल (ii)
C. न तो (i) न ही (ii)
D. (i) और (ii) दोनों
उत्तर – D

लॉर्ड लेन्सडाउन (1888-1894):-
- 1891 ई. को दूसरा फैक्टरी विधेयक पारित हुआ ।
- सिविल सेवा का साम्राज्यीय, प्रांतीय एवं अधीनस्थ तीन भागों में विभाजन ।
- 1892 ई. का भारतीय परिषद् विधेयक ।
- डूरण्ड कमीशन की नियुक्ति एवं इसके द्वारा ब्रिटिश भारत एवं अफगानिस्तान के बीच डूरण्ड रेखा सुनिश्चित करना।

लॉर्ड एल्गिन द्वितीय (1894-1899)
- पूना के चापेकर भाईयों द्वारा 1897 ई. में दो ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या।
- 1896 में बंबई में प्लेग।
- बीकानेर और हिसार जिले में गंभीर सूखे।

लॉर्ड कर्जन (1899-1905):-
- सर थॉमस के अधीन 1902 ई. में विश्वविद्यालयों में आवश्यक सुधारों हेतु सुझाव देने लिए एक्ट आयोग का गठन किया गया, इसकी सिफारिशों के आधार पर 1904 ई. में भारतीय विश्वविद्यालय विधेयक पास किया गया।
- **1904 ई. का प्राचीन स्मारक संरक्षण विधेयक।**
- 1904 ई. में कर्नल यंग हसबैण्ड का तिब्बत अभियान
- दिल्ली के पूसा में कृषि अनुसंधान संस्थान की स्थापना।
- **1905 ई. में बंगाल का विभाजन।**
- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना।**
- 1901 में कृषि इंस्पेक्टर जनरल की नियुक्ति की।

लॉर्ड मिन्टो द्वितीय (1905 - 1910):-
- विभाजन विरोधी एवं स्वदेशी आंदोलन
- 1907 में सूरत अधिवेशन एवं कॉंग्रेस का विभाजन ।
- **1906 ई. में ढाका के नवाब आगा खां एवं अन्य द्वारा मुस्लिम लीग की स्थापना।**
- **मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचन व्यवस्था मार्ले मिन्टो सुधार अधिनियम 1909 ई. के द्वारा किया गया ।**

लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय (1910-1916):-
- **बंगाल विभाजन को खत्म कर मद्रास एवं बंबई की तरह गवर्नरशिप का गठन (1911) ।**
- बिहार एवं उड़ीसा लिए लेफ्टीनेंट गवर्नरशिप और असम के लिए मुख्य कमिशनरशिप।
- राजा जॉर्ज पंचम एवं रानी मैरी के सम्मान में 1911 में दिल्ली दरबार का आयोजन ।
- 1912 ई. में राजकीय राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानान्तरण ।
- **प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत 1914 में हुई थी ।**
- 1915 ई. में गोपाल कृष्ण गोखले की मृत्यु ।
- **मदनमोहन मालवीय एवं पंजाबी नेताओं द्वारा 1915 में हिन्दू महासभा की स्थापना।**

लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916-1921):-
- **दो होमरूल लीगों की स्थापना, पहली तिलक द्वारा अप्रैल 1916 ई. में एवं दूसरी श्रीमति एनीबेसेंट द्वारा सितंबर 1916 में।**
- **लखनऊ अधिवेशन एवं कांग्रेस का पुनर्मिलन (1916) ।**
  महत्वपूर्ण भूमिका - **एनिबेसेंट द्वारा**
- **कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के बीच लखनऊ** समझौता (1916) ।
  महत्वपूर्ण भूमिका - **तिलक द्वारा**
- इनके काल में गाँधी जी द्वारा साबरमती आश्रम की स्थापना (1916), चंपारण सत्याग्रह (1917), अहमदाबाद सत्याग्रह (1918) एवं खेड़ा सत्याग्रह(1918)।
- 1916 में पूना में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना।
- राज्य सचिव मांटेग्यू **(मोंटेगू)** की 1917ई .मे अगस्त घोषणा ।
- मोन्टफोर्ड सुधार या 1919 ई. का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट ।
- एस. एन. बनर्जी के नेतृत्व मे इंडियन लिबरल फेडरेशन की 1916 ई. में स्थापना।
- रोलेट एक्ट मार्च 1919
- **जलियाँवाला बाग हत्याकांड 13 अप्रैल 1919 इसी के शासन काल में हुआ था ।**
- तिलक की मृत्यु । अगस्त 1920
- खिलाफत समिति का गठन और खिलाफत आंदोलन 1919-20 में शुरुआत।
- **असहयोग आंदोलन की शुरुआत । अगस्त 1920 को हुई थी ।**
- दिसंबर 1920 में कांग्रेस का नागपूर अधिवेशन, कांग्रेस के संविधान मे परिवर्तन।

- **सर एस. पी. सिन्हा की बिहार के लेफ्टिनेंट गवर्नर के रूप में नियुक्ति। सर सिन्हा गवर्नर बनने वाले प्रथम और ब्रिटिश संसद के सदस्य बनने वाले दूसरे भारतीय थे, पहले दादा भाई नोरोजी भारतीय थे।**

लॉर्ड रीडिंग (1921-1926)

- **चौरी-चौरा घटना (5 फरवरी 1922) और गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन वापस लेना।**
- सी. आर. दास (देशबंधु) और मोतीलाल नेहरू द्वारा दिसंबर 1922 ई. में स्वराज्य पार्टी का गठन।
- **रौलेट एक्ट रद्द कर दिया जाना।**
- 1923 ई. में भारतीय सिविल सेवा हेतु इंग्लैंड एवं भारत दोनों स्थानों पर एक साथ परीक्षा की शुरूआत।
- भारतीय नौसेना के अधिकारी वर्ग का भारतीयकरण शुरू।
- भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (1925) में स्थापना।
- **9 अगस्त 1925 को काकोरी काण्ड।**

लॉर्ड इरविन(1926-1931):-

- क्रिश्चियन वायसराय के रूप में लोकप्रिय।
- **साइमन कमीशन की नियुक्ति (नवंबर 1927)** और कांस द्वारा कमीशन का बहिष्कार।
- हाईकोर्ट बटलर के नेतृत्व मे इंडियन कमीशन की नवंबर 1927 ई. में नियुक्ति और इसकी प्रतिक्रिया में राज्य की जनता द्वारा अखिल भारतीय रियासती जनता सम्मेलन) All India States Peoples Conference)का दिसंबर1927 ई. में आयोजन।
- **प्रथम भारतीय युवा कांग्रेस का दिसंबर 1928 ई. में सम्मेलन।**
- कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (दिसंबर (1929 और संपूर्ण स्वराज का संकल्प, 20 जनवरी, 1930 ई. में पहला स्वतंत्रता दिवस निश्चित किया जाना।
- **12 मार्च 1930 ई. को गाँधी द्वारा दांडी मार्च के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू।**
- 1930 ई. में कांग्रेस द्वारा प्रथम गोलमेज सम्मेलन का बहिष्कार, गाँधी इरविन-समझौता और मार्च 1931 ई. में आंदोलन की समाप्ति।

लॉर्ड वेलिंगटन (1931-1936):-

- सितंबर 1931 ई. में गाँधी जी द्वारा दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया गया और सम्मेलन की असफलता।
- काँग्रेस बिना प्रतिनिधित्व तीसरा गोलमेज सम्मेलन 1982 में हुआ।
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड द्वारा कम्यूनल एवार्ड की घोषणा।
- यरवदा जेल में गाँधीजी का आमरण अनसन
- **गाँधी जी और अम्बेडकर के बीच पूना पैक्ट (सितंबर 1932)।**
- 1935 ई. का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट।
- 1935 ई. में बर्मा का भारत से अलग होना।
- 1934 ई. में आचार्य नरेंद्र देव और जयप्रकाश नारायण द्वारा सोशलिस्ट काँग्रेस पार्टी की स्थापना।
- 1936 ई. में संपूर्ण भारत किसान सभा की स्थापना।

लॉर्ड लिनलिथगो (1936-1944

- 1937 ई. में अनेक प्रांतों मे काँग्रेस मंत्रिमंडल बना।
- **सुभाष चंद्र बोस** एवं उनके समर्थकों द्वारा **'फॉरवर्ड ब्लॉक 'की 1939 ई. में स्थापना।**
- **द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत (1939)।**
- काँग्रेस मंत्रिमंडल के त्यागपत्र को मुस्लिम लीग द्वारा 1939 ई. में मुक्ति दिवस के रूप में मनाया जाना।
- 23 मार्च 1940 ई. को मुस्लिम लीग द्वारा लाहौर प्रस्ताव में मुस्लिमों के लिए अलग राज्य की मांग।
- 1940 ई. में लिनलिथगो द्वारा अगस्त प्रस्ताव, काँग्रेस द्वारा इसकी अस्वीकृति और गाँधी द्वारा सत्याग्रह की शुरुआत।
- 1941 ई. में सुभाषचंद्र बोस द्वारा भारत से भाग निकलना।
- मार्च 1942 ई. में क्रिप्स मिशन द्वारा भारत को 'स्वशासन 'का प्रस्ताव और काँग्रेस द्वारा इसका बहिष्कार।
- **8 अगस्त 1942 ई. काँग्रेस द्वारा 'भारत छोड़ो आंदोलन 'की शुरुआत सभी काँग्रेस नेताओं को बंदी बनाया जाना।**

लॉर्ड वेवेल (1944 - 1947):-

- सी-राजगोपालाचारी द्वारा C.R. फार्मूला प्रस्तुत करना और इस पर 1944 ई. में गाँधी-जिन्ना, वार्ता की असफलता।

1857 ई. का विद्रोह

- **कारण एवं परिणाम**
- 1857 ई. में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह आधुनिक भारतीय इतिहास की एक अभूतपूर्व तथा युगान्तकारी घटना है। भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना छल, धोखे और विश्वसघात से हुई थी ।
- भारत में जिस तरह ब्रिटिश सत्ता कायम हुई उस तरह इतिहास में और कोई सत्ता कायम नहीं हुई थी।

विद्रोह का स्वरूप

- 1857 के विद्रोह के संबंध में भिन्न भिन्न विचार देते हुए कुछ ने इसे साम्राज्यवादी विस्तार के कारण इसे सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी है । तो कुछ ने इसे दो धर्मों अथवा दो नस्लों का युद्ध बताया है ।
- सम्राज्यवादी विचार धारा के इतिहासकार सर जॉन लॉरेन्स व सर जॉन सीले ने सैनिक विद्रोह की संज्ञा दी ।

विद्रोह के लिए उत्तरदायी कारण

- **गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना 1857 का विद्रोह थी ।**
- इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला दी और कई बार ऐसा प्रतीत होने लगा था कि भारत में अंग्रेजी राज्य का अन्त हो जायेगा यहाँ हम 1857 ई. के विद्रोह के महत्वपूर्ण कारणों का विश्लेषण करेंगे ।

राजनीतिक कारण

- अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आये थे, परन्तु धीरे-धीरे उन्होंने राज्य स्थापना तथा उसके विस्तार का कार्य आरम्भ किया । धीरे-धीरे **भारतीयों की राजनीतिक स्वतंत्रता का अपहरण होता गया और वे अपने राजनीतिक तथा उनसे उत्पन्न अधिकारों से वंचित होते गये ।**
- जिसके फलस्वरूप उनमें बड़ा असंतोष फैला, जिसका विस्फोट 1857 ई. के विद्रोह के रूप में हुआ। इस क्रांति के राजनीतिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) डलहौजी की साम्राज्यवादी नीतिः-

- 1857 की क्रांति के लिए डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति काफी हद तक उत्तरदायी थी। **उसने विजय तथा पुत्र गोद लेने कई निषेध नीतियों द्वारा देशी राज्यों के अपहरण का एक कुचक्र चलाया ।** जिसने सम्पूर्ण भारत के देशी नरेशों को आतंकित कर दिया और उनके हृदय में अस्थिरता तथा आशंका का बीजारोपण कर दिया ।
- **लॉर्ड डलहौजी ने व्यपगत सिद्धान्त या हड़प-नीति को कठोरता पूर्वक अपनाकर देशी रियासतों के निःसन्तान राजाओं को उत्तराधिकार के लिए दत्तक-पुत्र लेने की आज्ञा नहीं दी** और सतारा (1848), नागपुर (1853), झांसी (1854), बरार (1854), संभलपुर, जैतपुर, बघाट, अदपुर आदि रियासतों को कथनी के ब्रिटिश-साम्राज्य में मिला लिया । उसने 1856 ई. में अंग्रेजों के प्रति वफादार अदद रियासत को कुशासन के आधार पर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।
- उसने अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतर दिया । उसने तंजौर और कर्नाटक के नवाबों की राजकीय उपाधियां छीन ली ।
- मुग़ल बादशाह को नजराना देने के लिए अपमानित करना । सिक्कों पर नाम गुदवाने जैसी परम्परा को डलहौजी द्वारा समाप्त करना । आदि घटनाओं ने 1857 के विद्रोह को हवा दी ।

(2) मुग़ल सम्राट के साथ दुर्व्यवहार :-

- अंग्रेजों ने भारतीय शासकों के साथ दुर्व्यवहार भी किया । उन्होंने मुग़ल सम्राट को नजराना देना व सम्मान प्रदर्शित करना बन्द कर दिया इतना ही नहीं **लॉर्ड डलहौजी ने मुग़ल सम्राट की उपाधि को समाप्त करने का निश्चय किया ।**
- उसने बहादुरशाह के सबसे बड़े पुत्र मिर्जा जवाबख्त को युवराज स्वीकार करने से इन्कार कर दिया और **बहादुरशाह से अपने पैतृक निवास स्थान लाल किले को खाली कर कुतुब में रहने के लिए कहा ।**

(3) ब्रिटिश पदाधिकारियों के वक्तव्य-: डलहौजी की साम्राज्यदी नीति के साथ-साथ कुछ अंग्रेज अधिकारियों ने ऐसे वक्तव्य दिये जिससे देशी नरेश बहुत आतंकित हो गये और अपने भावी अस्तित्व के सम्बन्ध मे पूर्ण रूप से निराश हो उठे ।

(4) नाना साहब और रानी लक्ष्मी बाई का असन्तोष :-

- झांसी की रानी लक्ष्मी बाई तथा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहब अंग्रेजों के व्यवहार से बहुत नाराज थे।
- **अंग्रेजों ने झांसी के राजा-गंगाधर राव के दत्तक पुत्र दामोदर राव को उत्तराधिकार से वंचित करके झांसी राज्य को कथनी के राज्य में शामिल कर लिया था ।**
  - इस अत्याचार को रानी लक्ष्मीबाई सहन न कर सकी और क्रान्ति के समय उसने विद्रोहियों का साथ दिया ।

(5) अवध का विलय और नवाब के साथ अत्याचार :-

- अंग्रेजों ने बलपूर्वक लखनऊ पर अधिकार करके नबाव वाजिद अली शाह को निर्वासित कर दिया था और निर्लज्जतापूर्वक महलों को लूटा था |
- बेगमों के साथ बहुत अपमानजनक व्यवहार किया गया था । इससे अवध के सभी वर्ग के लोगों में बड़ा असन्तोष फैला और अवध क्रांतिकारियों का केन्द्र बन गया।

(6) प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था का विध्वंस :-

- अंग्रेजों की विजय के फलस्वरूप प्राचीन राजनीतिक व्यवस्था पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गई थी ।
- **ब्रिटिश शासन से पहले भारतवासी राज्य की नीति को पूरी तरह प्राभावित करते थे परन्तु अब वे इससे वंचित हो गये ।** अब केवल अंग्रेज ही भारतीयों के भाग्य के निर्माता हो गये ।

(7) अंग्रेजों के प्रति विदेशी भावना :-

- भारतीय जनता अंग्रेजों से इसलिए भी असन्तुष्ट थी क्योंकि वे समझते थे कि उनके शासक उनसे हजारों मील दूर रहते हैं । तुर्क, अफगान और मुग़ल भी भारत में विदेशी थे लेकिन वे भारत में ही बस गये थे और इस देश को उन्होंने अपना देश बना लिया था।
- जबकि अंग्रेजों ने ऐसा कोई काम नहीं किया था। अतः भारतीयों के हृदय और मस्तिष्क से अंग्रेजों के प्रति विदेशी की भावना नहीं निकल सकी थी ।

(8) उच्च वर्ग में असंतोष:- देशी राज्यों के नष्ट हो जाने से न केवल उनके नरेशों का विनाश हुआ जबकि उच्च वर्ग के लोगों की स्थिति पर भी बड़ा घातक प्रहार हुआ |

प्रशासनिक कारण-

(1) नवीन शासन-पद्धति को समझने में कठिनाई होना :- भारतीय जिस शासन को सदियों से देखते आ रहे थे, वह समाप्त कर दिया गया था । नई शासन-पद्धति को समझने में उन्हें कठिनाई आ रही थी तथा, उसे वे शंका की दृष्टि से देखते थे ।

(2) भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं से अलग रखने की नीति :-

- अंग्रेजों ने शुरू से ही भारतीयों को प्रशासनिक सेवाओं में शामिल न कर भेद-भाव पूर्ण नीति अपनाई । लॉर्ड कार्नवालिस का भारतीयों की कार्य कुशलता और ईमानदारी पर विश्वास नहीं था । अतः उसने **उच्च पदों पर भारतीयों के स्थान पर अंग्रेजों को नियुक्त कर दिया ।**
- परिणामतः भारतीयों के लिए उच्च पदों के द्वार बन्द हो गये । यद्यपि 1833 ई. के कम्पनी के चार्टर एक्ट में यह आवश्वासन दिया गया था कि धर्म, वंश, जन्म, रंग या अन्य किसी आधार पर सार्वजनिक सेवाओं में भर्ती के लिए कोई भेदभाव नहीं बरता जाएगा, परन्तु अंग्रेजों ने इस सिद्धान्त का पालन नहीं किया ।
- **सैनिक और असैनिक सभी सार्वजनिक सेवाओं में उच्च पद यूरोपियन व्यक्तियों के लिए ही सुरक्षित रखे गये थे |** सेना में एक भारतीय का सबसे बड़ा पद सूबेदार का होता था जिसे 60 या 70 रुपये प्रति माह वेतन मिलता था |
- असैनिक सेवाओं में एक भारतीय को मिल सकने वाला सबसे बड़ा पद सदर अमीन का था जिसे 500/ - रुपये प्रति माह वेतन मिलता था । उच्च पद देना अंग्रेज अपना एकाधिकार समझते थे।

(3) ब्रिटिश न्याय व्यवस्था से भारतीयों में असंतोष :-

- ब्रिटिश न्याय प्रशासन एक भिन्न प्रशासनिक व्यवस्था का प्रतीक था | विधि प्रणाली और सम्पत्ति अधिकार पूरी तरह से नये थे। न्याय प्रणाली में अत्यधिक धन तथा समय नष्ट होता था और फिर भी निर्णय अनिश्चित था |
- भारतीय इस न्याय व्यवस्था को पसन्द नहीं करते थे । अगर एक छोटा सा किसान भी किसी जमींदार की शिकायत करता था तो जमींदार को न्यायालय

में जाना पड़ता था । इस प्रकार सम्मानित व्यक्ति अंग्रेजी न्यायालयों से असंतुष्ट थे ।

(4) दोषपूर्ण भू-राजस्व प्रणाली :-

- **भू-राजस्व प्रणाली को नियमित करने के नाम पर अंग्रेजों ने अनेक जमींदारों के पट्टों की छानबीन की । जिन लोगों के पास जमीन के पट्टे नहीं मिले, उनकी जमीनें छीन ली गई ।**
- बम्बई के प्रसिद्ध इमाम आयोग ने लगभग बीस हजार जागीरें जप्त कर ली थी । लॉर्ड बैन्टिक ने तो माफी की भूमि भी छीन ली । इस प्रकार कुलीन वर्ग को अपनी सम्पत्ति व आय से हाथ धोना पड़ा ।
- **भूमि अपहरण की नीति के कारण तालुकेदारों में बड़ा असंतोष फैला और क्रांति में इन लोगों ने सक्रिय भाग लिया ।**
- किसानों के कल्याण एवं लाभ के नाम पर स्थाई बन्दोबस्त, रैयतवाड़ी व महलवाड़ी प्रणाली लागू की गई थी और हर बार किसानों से पहले की अपेक्षा अधिक लगान वसूल किया गया, जिसके कारण किसान लगातार निर्धन होकर साधारण मजदूर बनता गया ।
- अंग्रेजों की लगान-नीति के विरुद्ध इतना प्रबल विरोध था कि अनेक स्थानों पर बिना सेना की सहायता से लगान जमा नहीं किया जा सकता था।

(5) शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का विकास :-

- **भारत में कम्पनी शासन की सर्वोच्चता स्थापित होने के साथ ही प्रशासन में एक शक्तिशाली ब्रिटिश अधिकारी वर्ग का उदय हुआ ।**
- यह वर्ग भारतीयों से मिलना पसन्द नहीं करता था और हर प्रकार से उन्हें अपमानित करता था । अंग्रेजों के इस प्रजाति भेदभाव की नीति से भारतीय क्रूद्ध हो उठे और उनका यह क्रोध 1857 ई. के विद्रोह के रूप में व्यक्त हुआ।

(6) शिक्षित भारतीयों में ब्रिटिश शासन से असंतोष :-

- शिक्षित भारतीयों को यह आशा थी कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ उन्हें राजनीतिक प्रशासनिक अधिकार प्राप्त हो जायेंगे ।
- लेकिन अंग्रेजों की ऐसी कोई इच्छा नहीं थी । शिक्षित भारतीयों को प्रशासन में कहीं शामिल नहीं किया गया था ।

आर्थिक कारण

- भारत में अंग्रेजी शासन का मूल आधार भारत का आर्थिक शोषण था । अंग्रेजों ने भारतीयों का जितना राजनीतिक शोषण किया, उससे भी बढ़कर उन्होंने आर्थिक शोषण किया । चूंकि अंग्रेज भारत में व्यापारी के रूप में आए थे ।
- अत: शुरू से ही उनका लक्ष्य धन कमाना था। अपने इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्होंने नैतिक और अनैतिक सभी प्रकार के साधनों का प्रयोग किया । 1857 ई. के विद्रोह के आर्थिक कारण निम्नलिखित थे-

(1) धन का विदेश गमन :-

- अंग्रेजों के पूर्व जिन लोगों ने भारत पर आक्रमण किया था, और यहाँ अपना राज्य स्थापित किया था । उन्होंने भारत को ही अपना स्थायी निवास बना लिया था ।
- अतएव भारत की सम्पत्ति भारत में ही रह जाती थी, लेकिन अंग्रेजों ने कभी भी भारत को अपना स्थायी घर नहीं बनाया । इस प्रकार भारत में अनेक तरीकों से धन कमाकर के अन्त में वे अपने देश ले जाते थे । अपने देश से धन का यह गमन भारतीयों को सहन नहीं था ।

(2) भारतीय व्यापार एवं उद्योगों का विध्वंस :-

- **19 वीं शताब्दी में इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति हो चुकी थी इसलिए इंग्लैंड को भारत से कच्चा माल ले जाने और अपने कारखानों में तैयार माल को बेचने के लिए भारतीय बाजार की आवश्यकता थी ।**
- **इन दोनों जरूरतों को पूरा करने के लिए इंग्लैंड ने भारतीय उद्योग धन्धों को नष्ट कर दिया ।** एक ग्रामीण उद्योग के बाद दूसरा -ग्रामीण उद्योग नष्ट होता गया और भारत ब्रिटेन का आर्थिक उपकरण बन गया ।
- चूंकि अंग्रेजों ने भारतीय व्यापार, वाणिज्य और कुटीर उद्योग पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था । अत: भारतीयों में गरीबी तेजी से बढ़ने लगी।

सत्यशोधक समाज 1873

- **इसके संस्थापक ज्योतिबा फूले थी इन्होंने 1873 में महाराष्ट्र में इसकी स्थापना की इससे समाज के नेता निम्न जाति से जुड़े हुए थे।**
- इसका उद्देश्य सामाजिक सेवा करना स्त्रियों में निम्न जाति के बीच आधुनिक शिक्षा का प्रचार प्रसार करना तथा जाति प्रथा के समाप्ति व सामाजिक आर्थिक समानता स्थापित करना था।
- **ज्योतिबा फुले ने 'सार्वजनिक -सत्य धर्म' 'गुलामी' ,'शिवाजी की जीवनी 'नामक पुस्तक लिखी और पुणे में एक बालिका विद्यालय की स्थापना की तथा विधवा पुनर्विवाह पर बल दिया।**

श्रीनारायण धर्म परिपालन योगम आंदोलन 1902

- **केरल में यह एक छतरी आंदोलन था इसकी शुरुआत केरल के दलित ईझावा जाति के श्री नारायण गुरु ने की** उन्होंने कहा कि मानवता ही एक जाति एक धर्म और एक ईश्वर है। इसके निम्नलिखित उद्देश्य थे

1. शिक्षण संस्थानों में दलित छात्रों को प्रवेश का अधिकार दिलाना।
2. सरकारी सेवा में दलितों की भर्ती कराना।
3. मंदिरों में दलितों को प्रवेश दिलाना।
4. दलितों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व दिलाना।

वोक्कंलिगासंग 1905

मैसूर में स्थापित वोककलिगरा संघा एक ब्राह्मण विरोधी संस्थान था। इसमें निम्न जाति के लोगों को अधिकार देने की मांग की गई।

जस्टिस आंदोलन 1917

मद्रास में 1917 में जस्टिस आंदोलन की शुरुआत c.n. मुदालियर t.m. नायर एवं p. प्रयागराज ने की । इसका उद्देश्य गैर ब्राह्मण जाति को विधायिका में प्रवेश दिलाना था वस्तुतः यह पहले दक्षिण भारतीय उदारवादी संघ के नाम से जाना जाता था जिसमें 'जस्टिस नामक समाचार पत्र' का प्रकाशन किया इसी आधार पर इसे जस्टिस आंदोलन कहां गया।

आत्मसम्मान आंदोलन 1925

इस आंदोलन की शुरुआत ई वी रामास्वामी नायर प्रिया ने की उन्होंने समाज में ब्राह्मणों के सर्वोच्च को चुनौती दी और निम्न जाति के लोगों को अधिकार वह राजनीतिक प्रतिनिधित्व देने की बात कही। इस आंदोलन में कहा गया कि धार्मिक कार्यक्रमों में ब्राह्मण की उपस्थिति अनिवार्य है और लोगों से अपील किया गया कि वह विवाह के अवसर पर पूजा पाठ के लिए ब्राह्मणों को आमंत्रित ना करें।

"सारांश"

- 17 मई 1498 को वास्कोडिगामा भारत आने वाला पहला पुर्तगाली था।
- 1503 ई. में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की ।
- पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की।
- पुर्तगालियों द्वारा भारत में गोथिक स्थापत्य कला का आगमन हुआ ।
- डचों ने भारत में अपनी प्रथम फैक्ट्री 1605 ई. में मसूली पट्टनम में स्थापित की।
- 1640 ई. में अंग्रेजों ने मद्रास नगर की स्थापना की।
- बन्दा बहादुर ने 1710 ई. में गुरु नानक व गुरु गोविन्द सिंह के नाम के सिक्के जारी किये ।
- नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता था।
- अंग्रेजों को दीवानी का अधिकार सर्वप्रथम शाह आलम द्वितीय ने दिया था।
- शिवाजी के समय 'चौथ' उपज के एक चौथाई भाग के रूप में तथा सरदेशमुखी आय का 10% के रूप में लिया जाता था।
- शिवाजी को गुरिल्ला युद्ध का प्रतिपादक कहा जाता है।
- मराठों तथा सैयद बंधुओं के मध्य हुई संधि को मराठों का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 7 मार्च 1775 ई. को बम्बई की अंग्रेजी सरकार एवं रघुनाथ राव के मध्य सूरत की संधि हुई।
- 1802 ई. में बाजीराव द्वितीय तथा अँग्रेजों के बीच बसीन की संधि हुई।
- पुरन्दर की संधि 1776 ई. में अंग्रेज सरकार और पूना दरबार के प्रतिनिधि नाना फड़नवीस के मध्य हुई।
- 13 जून 1817 ई. में पेशवा तथा अंग्रेजों के मध्य पूना की संधि हुई।

- लॉर्ड विलियम बैंटिक ने सती प्रथा को समाप्त किया।
- 1853 ई. में बंबई से थाणे के बीच प्रथम रेल चली।
- लॉर्ड कैनिंग ईस्ट इंडिया कम्पनी का अन्तिम गवर्नर जनरल था।
- रॉबर्ट क्लाइव को भारत में ब्रिटिश साम्राज्य का संस्थापक माना जाता है।
- नवम्बर 1856 को भारत सरकार अधिनियम पारित किया गया।
- प्रथम विश्व युद्ध की शुरुआत सन् 1914 में हुई।
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना ए. ओ. ह्यूम ने की थी।
- गाँधी जी और अम्बेडकर के मध्य पूना पैक्ट सितम्बर 1932 में हुआ।
- द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत 1939 ई. में हुई।
- लॉर्ड डलहौजी ने रेल, डाक, तार आदि का प्रयोग भारत में शुरू किया था।
- चर्बी वाले कारतूसों की घटना 1857 ई. के विद्रोह का मुख्य कारण बनी।
- सर्वप्रथम इस विद्रोह की शुरुआत बैरकपुर छावनी से हुई।
- 1861 ई. में भारतीय नागरिक सेवा अधिनियम पारित हुआ।
- राजा राममोहन राय ने मूर्तिपूजा का विरोध किया तथा 1828 में कोलकाता में ब्रह्म समाज की स्थापना की।
- दयानन्द सरस्वती ने 1875 ई. में मुम्बई में आर्य समाज स्थापना की। इन्होंने सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया।
- स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।
- केशव चन्द्र सेन के सहयोग से आत्माराम पांडुरंग मुम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना की।
- काँग्रेस की पहली महिला अध्यक्ष एनी बेसेन्ट थी तथा पहली भारतीय महिला अध्यक्ष सरोजनी नायडू थी।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी किए ने भारत में पहली फैक्ट्री कहाँ खोली?

A. मछलीपट्टनम B. सूरत
C. अरमा D. कलकत्ता
उत्तर - B

प्रश्न-2. किसने वास्कोडिगामा का कालीकट में स्वागत किया?

A. गेस्पर कोरिया B. जमोरिन
C. अल्बुकर्क D. डॉन. अलमदा
उत्तर - B

प्रश्न-3. भारत में पुर्तगालियों की बस्तियों का पहला गवर्नर कौन था ?

A. वास्कोडिगामा B. फ्रांसिस्को डि अल्मीड़ा
C. अल्बुकर्क D. नीनो-ड़ी-कुंहा
उत्तर – B

प्रश्न-4. भारत में क्षेत्रीय शासन स्थापित करने वाला पहला यूरोपीय राष्ट्र था?

A. ब्रिटेन B. हॉलैण्ड
C. फ्रांस D. पुर्तगाल
उत्तर - D

प्रश्न-5. दस्तक शब्द से तात्पर्य है?

A. दंगा B. शुल्क मुक्त व्यापार
C. बंदरगाह D. बाजार
उत्तर - B

प्रश्न-6. प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला के साथ किसने विश्वासघात किया था?

A. मीरजाफर B. मीर कासिम
C. अलीवर्दी खान D. सलीम मुल्ला
उत्तर - A

प्रश्न-7. कर्नाटक युद्धों में अंग्रेजों द्वारा किसे पराजित किया गया?

A. फ्रांसीसियों को B. पुर्तगालियों को
C. डचों एवं पुर्तगालियों को D. डचों को
उत्तर - A

प्रश्न-5. गाँधीजी को किसानों का नेतृत्व करने के लिए चम्पारण में किसने आमंत्रित किया ?

A. राजेन्द्र प्रसाद B. बिन्देश्वरी प्रसाद
C. राजकुमार शुक्ल D. ब्रज किशोर

उत्तर – C

प्रश्न-6. गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन कब शुरू किया?

A. 1920 ई. B. 1930ई.
C. 1940ई. D. 1941ई.

उत्तर – A

प्रश्न-7. "भारत की खोज" के लेखक कौन हैं?

A. महात्मा गाँधी B. जवाहरलाल नेहरू
C. विवेकानंद D. रवींद्रनाथ टैगोर

उत्तर - B

प्रश्न-8. महात्मा गाँधी ने भारत छोड़ो आंदोलन कब आरंभ किया?

A. 1930 ई. B. 1942 ई.
C. 1940 ई. D. 1939 ई.

उत्तर - B

प्रश्न-9. भगत सिंह ने किस स्थान पर बम फेंका था?

A. अल्फ्रेड पार्क B. टाउन हॉल
C. कैंटोनमेंट हॉल D. सेंट्रल असेंबली

उत्तर - D

प्रश्न-10. महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम "राष्ट्रपिता" किसने कहा?

A. जवाहर लाल नेहरू B. वल्लभ भाई पटेल
C. सी. राजगोपालचारी D. सुभाष चंद्र बोस

उत्तर – D

प्रश्न-11. बंगाल विभाजन किस वर्ष में रद्द कर दिया गया?

A. 1919 ई. B. 1909 ई.
C. 1913 ई. D. 1911 ई.

उत्तर - D

- **देश के लिए महत्वपूर्ण योगदानकर्ता**

गोपाल गणेश आगरकर, (1856-95) –

- **महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मण, पत्रकार, समाज सुधारक तथा महान राष्ट्रवादी थे।** ये मराठा और केसरी के संपादक रहे। 1888 में इन्होंने समाज सुधार के अपने विचारों को लोकप्रिय बनाने के लिए साप्ताहिक सुधारक नामक पत्र निकालना प्रारंभ किया।
- **इन्होंने जाति और अस्पृश्यता की निन्दा की** तथा लड़के और लड़कियों के विवाह की न्यूनतम उम्र बढ़ाने के लिए संघर्ष किया। इन्होंने तिलक, एम. जी. रानाडे तथा इस काल के अन्य समाज सुधारकों के साथ कार्य किया।

माधव श्री हरि अणे, (1880-1968) –, जन्म- 29 अगस्त, 1880, महाराष्ट्र; मृत्यु: 26 जनवरी, 1968)

- भारत की आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। उनके पिता एक विद्वान् व्यक्ति थे। माधव श्री हरि अणे लोकमान्य तिलक से अत्यधिक प्रभावित थे।
- ये कुछ समय तक **'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के सदस्य भी रहे। गाँधी जी के 'नमक सत्याग्रह'** के समय इन्होंने भी जेल की सज़ा भोगी।
- **1943 से 1947 ई. तक ये श्रीलंका में भारत के उच्चायुक्त भी रहे। आज़ादी प्राप्त करने के बाद इन्हें बिहार का राज्यपाल भी बनाया गया था।**

अम्बेडकर, बी.आर. (1891-1956) –

- ये जीवन भर दलित वर्गों के नेता रहे और सदा अछूतों की नैतिक तथा भौतिक उन्नति के लिए कार्य किये।
- ये महान विद्वान थे तथा लन्दन से एम.एस.सी. तथा डी.एस.सी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। ये **पेशे से विधिवेत्ता और समान रूप से महान सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ, लेखक तथा शिक्षाविद् थे।**
- 1924 में इन्होंने दलित वर्ग संस्थान की स्थापना की तथा 1927 में समाज समता संघ की स्थापना की, ताकि अछूतों और सवर्ण हिन्दुओं में सामाजिक समानता के संदेश का प्रसार किया जा सके।
- निम्न जातियों को समानता का स्तर दिलाने के लिए इन्होंने अनेक आंदोलन चलाए। ये अंतरिम सरकार

में विधि मंत्री तथा **संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष भी चुने गए थे।**

एस. सुब्रह्मण्यम अय्यर, (1842-1924) –

- सुप्रसिद्ध वकील, न्यायाधीश तथा 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापकों में थे। इन्हें सामान्यतया **'दक्षिण' भारत के 'महान वयोवृद्ध व्यक्ति' के रूप में जाना जाता है।**
- इन्होंने सितम्बर, 1916 में श्रीमती एनी बिसेन्ट द्वारा स्थापित अखिल भारतीय होम रूल लीग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। **मद्रास विश्वविद्यालय के उप-कुलपति नियुक्त होने वाले ये प्रथम भारतीय थे।**

आसफ अली, (1888-1953) –

- एक राष्ट्रवादी मुसलमान और स्वतन्त्रता सेनानी थे। ये कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी रहे।
- 1935-1947 तक केन्द्रीय विधान मण्डल के सदस्य, 1946-1947 में भारत की अन्तरिम सरकार की कार्यकारी परिषद के सदस्य, **1947-48 में संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रथम भारतीय राजदूत तथा उड़ीसा के राज्यपाल भी रहे।**

अबुल कलाम आजाद, (1888-1958) –

- इनका जन्म मक्का में हुआ था। इनके पिता महान रहस्यवादी तथा प्रसिद्ध विद्वान थे और इनकी अरबी माता, मदीना के मुफ्ती की पुत्री थीं।
- ये अरबी, फारसी, उर्दू और इस्लामी शिक्षा के प्रकाण्ड विद्वान थे। 16 वर्ष की अवस्था में उन्होंने आज़ाद का उपनाम धारण किया।
- 1909 में उन्होंने पत्रकारिता का कार्य शुरू किया तथा अल-नदवाह, दी वकील, अल-हिलाल तथा अल-बलघ जैसे बहुत से समाचार-पत्रों का प्रकाशन किया।
- 35 वर्ष की आयु में आज़ाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए। यह पद ग्रहण करने वाले वे सबसे कम उम्र के व्यक्ति थे।

चन्द्रशेखर आज़ाद, (1906.31) –

- ये आधुनिक उत्तर प्रदेश के सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। इन्हें असहयोग आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया तथा मुकदमे के दौरान पूछे जाने पर **इन्होंने अपना नाम आज़ाद, अपने पिता का नाम स्वतन्त्रता तथा अपना घर जेल खाना रखा था।**
- **अदालत का इस तरह अपमान करने के कारण इन्हें कोड़े लगाए गए। तभी से यह आज़ाद के रूप में प्रसिद्ध हुए।**
- ये हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी एसोशिएसन के साथ सक्रियता से जुड़े हुए थे तथा **काकोरी षड्यंत्र केस, लाहौर षड्यन्त्र केस आदि बहुत से क्रांतिकारी तथा आतंकवादी काण्डों से संबद्ध थे।**
- एल्फ्रेड पार्क, इलाहाबाद में पुलिस के साथ अकेले लड़ते हुए जब इनकी पिस्तौल की सारी गोलियाँ समाप्त हो गई तो अपनी पिस्तौल की अंतिम गोली से आत्मोत्सर्ग कर लिया।

इकबाल मुहम्मद, सर (1873.1938) –

- उर्दू के प्रख्यात शायर तथा व्यवसाय से वकील इकबाल अपने जीवन के प्रारंभ में महान राष्ट्रवादी थे। **इन्होंने ही प्रसिद्ध राष्ट्रप्रेमी गीत सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा** लिखा लेकिन बाद में वे मुस्लिम लीग की ओर आकर्षित हुए।
- इन्होंने 1930 में लीग के इलाहाबाद अधिवेशन की अध्यक्षता की जिसमें इन्होने उत्तर-पश्चिम भारत में पृथक् मुस्लिम राज्य का विचार प्रस्तुत किया।
- इसी धारणा को आगे चलकर गति मिली और उसकी परिणति 1947 में पाकिस्तान राष्ट्र के सृजन में हुई। इसलिए इकबाल को पाकिस्तान के विचार का माना जाता है ।

खरशेदजी रुस्तमजी कामा, (1831-1909) –

- वे एक पारसी व्यापारी थे। इनकी सार्वजनिक कार्यों तथा सामाजिक सुधारों में गहरी रुचि थी। इन्होंने पारसियों में सामाजिक-धार्मिक सुधारों का समर्थन किया।
- 1858 में कामा ने साप्ताहिक पारसी पत्र रस्त गोफ्तार का स्वामित्व ग्रहण कर लिया जो नए प्रगतिशील समाज सुधारों का अंग था। **सुविख्यात महिला क्रांतिकारी मैडम भीखाजी कामा उनकी पुत्रवधु थी ।**

मैडम भीखाजी कामा, (1861-1936) -

- **ये भारत की प्रथम सुविख्यात महिला क्रांतिकारी थीं।** इन्होंने बहुत से सुप्रसिद्ध राष्ट्रवादी तथा, वीर सावरकर, सरदार सिंह राना आदि के साथ मिल कर कार्य किया। ये

- रूसी क्रांतिकारियों के संपर्क में भी आईं तथा लेनिन के साथ इन्होंने पत्रचार भी किया, 1909 से पेरिस इनका मुख्यालय हो गया तथा यह हरदयाल और शकलबाला जैसे युवा क्रांतिकारियों का मिलन-स्थल हो गया। स्वतन्त्रता के प्रति इनकी भावना इतनी प्रबल थी कि उग्र क्रांतिकारी तरीके इन्हें सहज प्रतीत होते थे।
- ये यूरोप में रहने वाले भारतीयों की अभिनव भारत समिति की प्रेरक शक्ति भी थीं। जब इन्होंने विदेशी शासकों को बाहर निकालने के अपरिहार्य तरीके के रूप में हिंसा को स्वीकार किया, तब इन्होंने **बम बनाने के लिए युवा क्रांतिकारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की।**
- इन्होंने यूरोप तथा अमेरिका की यात्राएँ कीं ताकि लोगों को भारत की स्थिति के बारे में पता चल सके और उनका समर्थन समाप्त हो सके।
- **1907 में इन्होंने स्टुटगार्ट की समाजवादी कांग्रेस में भाग लिया जहाँ इन्होंने प्रथम भारतीय राष्ट्रीय झण्डे को फहराया, जिसकी डिजाइन** इन्होंने स्वयं ही तैयार की थी। **यही वास्तव में स्वतंत्र भारत के झण्डे का मूल रूप तथा अग्रदूत था।** केवल रंग में अंतर था। **इसमें केसरिया के स्थान पर लाल रंग था।**
  - इसी सम्मेलन में इन्होंने अपनी पूरी शक्ति के साथ स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने के अपने संकल्प की उद्घोषणा की।
  - **इन्होंने यह घोषणा की कि भारत एक गणराज्य होगा तथा हिन्दी उसकी राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्रीय लिपि देवनागरी होगी।**
  - सरदार सिंह राना के साथ ये क्रांतिकारी साहित्य तथा विस्फोटक पदार्थों को तस्करी के द्वारा भारत लाती थीं। भारत की स्वतन्त्रता के लिए इनकी गतिविधियाँ प्रथम विश्व युद्ध तक अबाध गति से चलती रहीं।
  - बाद में फ्रांसीसी सरकार ने इन्हें गिरफ्तार करके विश्व युद्ध के अंत तक तीन वर्ष जेल में कैद रखा। तीस वर्षों तक वे पेरिस में भारत की स्वतन्त्रता के लिए काम करती रहीं।
  - 1935 में 74 वर्ष की अवस्था में वे मुम्बई लौट आईं तथा उसी वर्ष उनकी मृत्यु हो गई। इन्हें **"भारतीय क्रांतिकारियों की माता"** कहकर सम्बोधित करना उनका सही सम्मान है।

लियाकत अली खाँ, (1895-1951) –

- मुस्लिम लीग के प्रमुख सदस्य। इन्होंने 1944 में कांग्रेस और लीग के बीच समझौते के लिए भूलाभाई देसाई से निजी बातचीत की, जिससे वे बाद में मुकर गए। अन्तरिम **केन्द्रीय सरकार में वित्तमंत्री रहे। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री रहे।**

सर सैयद अहमद खाँ, (1817 - 99) –

- ये अलीगढ़ आंदोलन और मुसलमानों के पहले आधुनिक नेता थे। इन्होंने मुसलमानों को उदारवादी शिक्षा के महत्त्व और ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति निष्ठा बनाए रखने के बारे में प्रबोधित किया।
- महान शिक्षाशास्त्री के रूप में इन्होंने अलीगढ़ में मोहम्मडन ऍग्लो-ओरिएण्टल कॉलेज की स्थापना की जो आगे चलकर अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय बना।

मोहनदास करमचन्द गाँधी, (1869-1948) –

इन्हें बापू तथा राष्ट्रपिता के नाम से भी जाना जाता है। ये भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी व्यक्ति थे।

रानी गैंडिनलियु, (1915-81) –

- ये नागा महिला राष्ट्रवादी नेता और नागा नेता जदोनाँग (1905-31) द्वारा प्रारंभ किए गए राजनीतिक आंदोलन की उत्तराधिकारी थीं। इन्होंने मणिपुर से अंग्रेजों को खदेड़ने का प्रयास किया। इन्होंने अपने राजनीतिक प्रचार में महात्मा गाँधी के नाम का इस्तेमाल किया।
- जदोनाँग को फाँसी दिए जाने के पश्चात् इन्होंने **सत्रह वर्ष की अल्पायु में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नागाओं के लोक प्रचलित विद्रोह का संगठन किया।** इनका उग्रवादी राजनीतिक विद्रोह ऐसी शक्ति बन गया था कि इनके अनुयायियों को परास्त करने तथा उन्हें पकड़ने के लिए अंग्रेज सरकार को नियमित सैनिक टुकड़ियाँ तैनात करनी पड़ी।
- 1934 में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और इन्हें चैदह वर्ष जेल में व्यतीत करने पड़े।
- 1937 में जब जवाहर लाल नेहरू असम गए तो वे इनकी गतिविधियों से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने इन्हें **"नागाओं की रानी"** कहकर पुकारा। तभी से गैंडिनलियु के साथ सामान्यतया

रानी की उपाधि जुड़ी हुई है। अन्ततः उन्हें भारत की स्वतंत्रता के बाद जेल से रिहा कर दिया गया।

गोपाल कृष्ण गोखले, (1866-1915) –

- शिक्षाविद्, मानवतावादी समाज सुधारक तथा महान देशप्रेमी थे। ये **कांग्रेस की उदारवादी राजनीति से संबद्ध थे।**
- 1905 में इन्होंने भारत सेवक समाज की स्थापना की और स्वतंत्रता के लिए भारतीय संघर्ष के कार्य को आगे बढ़ाने हेतु इंगलैण्ड तथा दक्षिण अफ्रीका की यात्र की। 1915 में इनकी मृत्यु पर **तिलक ने उन्हें 'भारत का हीरा' कहा था।**

अरविन्द घोष, (1872- 1950) –

- ये प्रमुख बंगाली क्रांतिकारी थे, जो बाद में योगी बन गए। लगभग तेरह वर्षों तक ये अपनी शिक्षा के लिए इंग्लैंड में रहे। लगभग दस वर्षों (1901-10) तक, विशेषकर **बंगाल विभाजन के दौरान, राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय बने रहे तथा स्वदेशी और बहिष्कार के कार्यक्रमों का प्रतिपादन करने** वालों में शामिल रहे।
- इन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि राजनीतिक स्वतंत्रता "हमारे राष्ट्र का जीवन और प्राण है" और औपनिवेशिक स्व-शासन को इन्होंने "राजनीतिक राक्षसपन" की संज्ञा दी 1908-09 में सरकार ने इन्हें माणिकतल्ला बम षड्यंत्र काण्ड में फँसाकर एक वर्ष की कैद की सजा दी, लेकिन अंततः इन्हें छोड़ दिया गया।
- 1910 में ये पाण्डिचेरी चले गए।

रास बिहारी घोष, (1845 - 1921) –

- प्रख्यात वकील, शिक्षाविद्, मानवतावादी और बंगाल से **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक प्रमुख उदारवादी नेता थे । इन्होंने उग्रपंथियों को घातक जनोभोजक तथा अनुभारदायी आन्दोलकारी कहा ।** इन्हें अंग्रजों की न्याय भावना में पूर्ण विश्वास था तथा ये उदारवादी थे । इन्होंने 1907 में सूरत अधिवेशन की अध्यक्षता की।

लाल मोहन घोष, (1849 - 1909) –

- ये महान वक्ता तथा देशभक्त थे । इन्होंने 1879 में ब्रिटिश भारतीय संघ, का इंगलैंड में प्रतिनिधित्व किया ताकि सिविल सेवा में भारतीयों को प्रवेश दिलाया जा सके ।
- ये प्रमुख उदारवादी नेता थे । इन्होंने 1903 में मद्रास(चेन्नई)में आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 19वें अधिवेशन की अध्यक्षता की ।

जोगेश चन्द्र चटर्जी, (1895 - 1969) –

- ये एक क्रांतिकारी थे ।
- ये हिन्दुस्तान समाजवादी गणतन्त्र संघ के संस्थापकों में थे । इन्हें काकोरी षडयंत्र काण्ड में गिरफ्तार किया गया और आजीवन कारावास की सजा दी गई । अपनी रिहाई के उपरान्त इन्होंने 1940 में क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी के नाम से अनुशीलनवादियों का पृथक/ संगठन स्थापित किया । ले
- किन भारत छोड़ो आंदोलन के अवसर पर 1942 में इन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया गया । जोगेश चन्द्र चटर्जी ने विभिन्न जेलों में लगभग 24 वर्ष व्यतीत किए । इनमें से लगभग ढाई वर्ष इन्होंने विभिन्न अवसरों पर भूख हडताल में व्यतीत किए ।

बंकिम चन्द्र चटर्जी, (1838 -1894)

- बंकिम चंद्र चटर्जी या बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय **भारत का राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' लिखने के लिए प्रसिद्ध हैं।** भारत के इस महान सपूत का जन्म 27 जून 1838 को पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले के कांठल पाड़ा नामक गाँव में हुआ था।
- **बंकिम चंद्र चटर्जी कविता और उपन्यास दोनों में माहिर थे।** वर्ष 1865 में, उनकी प्रथम प्रकाशित रचना बांग्ला कृति 'दुर्गेशनंदिनी' प्रकाशित हुई थी।
- फिर उनकी अगली रचनाएं – 1866 में कपालकुंडला, 1869 में मृणालिनी, 1873 में विषवृक्ष, 1877 में चंद्रशेखर, 1877 में रजनी, 1881 में राजसिंह और 1884 में देवी चौधुरानी थीं। बंकिम चंद्र चटर्जी ने 1872 में मासिक पत्रिका 'वंगदर्शन' का भी प्रकाशन किया।
- **"आनंदमठ" उनका सबसे प्रसिद्ध उपन्यास था, जो 1882 में प्रकाशित हुआ, जिससे प्रसिद्ध गीत 'वंदे मातरम्' लिया गया है।** आनंदमठ में ईस्ट इंडिया कम्पनी के वेतन के लिए लड़ने वाले भारतीय मुसलमानों और संन्यासी ब्राह्मण सेना का वर्णन किया गया है।
- यह किताब हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एकता का आह्वान करती है। इस प्रसिद्ध गीत वंदे मातरम् को रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा संगीतबद्ध किया गया था।

- 8 अप्रैल 1894 को ऐसे साहित्यसेवी, देशसेवी, सच्चे भारतीय की मृत्यु से बंगाल ही नहीं बल्कि पूरा भारत शोक में डूब गया।

मोहम्मद अली जिन्ना, (1875-1948) –

- ये प्रमुख वकील, मुस्लिम लीग के नेता तथा पाकिस्तान के संस्थापक थे । इन्होंने अपना राजनीतिक जीवन कांग्रेस से प्रारंभ किया, **लेकिन असहयोग आंदोलन का कड़ा विरोध करते हुए कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया** और उसके बाद ये पूर्णतया लीग की सांप्रदायिक राजनीति से संबं हो गए ।
- 1929 में इन्होंने नेहरु रिपोर्ट को अस्वीकार कर दिया और अपने चौदह सूत्रों को प्रस्तुत किया, जिसमें **मुसलमानों के पृथक / साम्प्रदायिक राजनीतिक हितों के विस्तार की माग की गई** । इन्होंने अपने कुख्यात द्वि राष्ट्र' सिद्धांत का प्रतिपादन किया और 20 मार्च, 1940 को लीग के लाहौर अधिवेशन में पाकिस्तान प्रस्ताव को पारित कराने के लिए प्रमुख रूप से ये ही उत्तरदायी थे ।
- इन्होंने मुसलमानों को भारत छोड़ो आंदोलन से दूर रहने के लिए कहा । 1940 से 1947 तक इन्होंने पाकिस्तान । बनाने के लिए विभेदक नीति का अनुसरण किया । भारत के विभाजन के उपरान्त ये पाकिस्तान के गवर्नर जनरल बने । इन्हें कायदे आजम के नाम से भी जाना जाता है ।

प्रश्न - निम्नलिखित में से कौनसा युग्म सुमेलित नहीं हैं ?

संस्था	प्रवर्तक
A. सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसायटी →	जी. के. गोखले इण्डिया
B. सोशल सर्विस लीग →	एन. एम. जोशी
C. सेवा समिति →	एच. एन. कुंजरु
D. सोशल रिफॉर्म एसोशिएशन →	श्रीराम वाजपेयी

उत्तर – D

रवीन्द्रनाथ टैगोर, (1861-1941) –

- जन्म: 7 मई, 1861, कोलकाता
- मृत्यु: 7 अगस्त, 1941, कोलकाता
- उपलब्धियां: कविता संग्रह गीतांजलि के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार 1913, विश्व-भारती की स्थापना
- रविंद्रनाथ टैगोर एक विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार और दार्शनिक थे। वे अकेले ऐसे भारतीय साहित्यकार हैं जिन्हें नोबेल पुरस्कार मिला है।
- **वह नोबेल पुरस्कार पाने वाले प्रथम एशियाई और साहित्य में नोबेल पाने वाले पहले गैर यूरोपीय भी थे। वह दुनिया के अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाएं दो देशों का राष्ट्रगान हैं – भारत का राष्ट्र-गान 'जन गण मन' और बाँग्लादेश का राष्ट्रीय गान 'आमार सोनार बाँग्ला'।**
- गुरुदेव के नाम से भी प्रसिद्ध रविंद्रनाथ टैगोर ने बांग्ला साहित्य और संगीत को एक नई दिशा दी। उन्होंने बंगाली साहित्य में नए तरह के पद्य और गद्य और बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग किया। इससे बंगाली साहित्य क्लासिकल संस्कृत के प्रभाव से मुक्त हो गया।
- रविंद्रनाथ टैगोर ने भारतीय सभ्यता की अच्छाइयों को पश्चिम में और वहां की अच्छाइयों को यहाँ पर लाने में प्रभावशाली भूमिका निभाई। 16 साल की उम्र में 'भानुसिम्हा' उपनाम से उनकी कवितायेँ प्रकाशित भी हो गयी।
- वह घोर राष्ट्रवादी थे और ब्रिटिश राज की भर्त्सना करते हुए देश की आजादी की मांग की। **जलियाँवाला बाग कांड के बाद उन्होंने अंग्रेजों द्वारा दिए गए नाइटहुड का त्याग कर दिया।**

प्रारंभिक जीवन

- रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरबाड़ी में हुआ। उनके पिता देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता शारदा देवी थी। टैगोर परिवार 'बंगाल रेनैस्सा' (नवजागरण) के अग्र-स्थान पर था। वहां पर पत्रिकाओं का प्रकाशन, थिएटर, बंगाली और पश्चिमी संगीत की प्रस्तुति अक्सर होती रहती थी। इस प्रकार उनके घर का माहौल किसी विद्यालय से कम नहीं था।
- उनके सबसे बड़े भाई द्विजेन्द्रनाथ एक दार्शनिक और कवि थे। उनके एक दूसरे भाई सत्येन्द्रनाथ टैगोर

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "RPSC RAS (PRE.)" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे, जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 7014366728,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम –

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -1, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/ras-pre-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें →	https://wa.link/6r99q8

D. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
उत्तर – (C)

6. संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष कौन थे?
A. जवाहरलाल नेहरू
B. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर
C. डॉ राजेन्द्र प्रसाद
D. सरदार वल्लभ भाई पटेल
उत्तर - B.

7. निम्न में से संविधान सभा के अध्यक्ष कौन थे?

A. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर
B. जवाहरलाल नेहरू
C. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
D. सरदार पटेल
उत्तर - C

अध्याय – 3

संविधान संशोधन

- भारत के संविधान में संशोधन करने का उद्देश्य देश के मौलिक कानून या सर्वोच्च कानून को बदलावों के माध्यम से और मजबूत करना है। संविधान के भाग XX में संशोधन की प्रक्रिया दी गई है। (अनुच्छेद 368)
- संविधान संशोधन की प्रक्रिया न तो ब्रिटेन के समान लचीली है और न ही यूएसए के समान कठोर। यह दोनों का सम्मिलित रूप है। **संसद सविधान में संशोधन तो कर सकती है लेकिन मूल ढांचे से जुड़े प्रावधानों को संशोधित नहीं कर सकती है।** (केशवानन्द भारती वाद, 1973)
- संविधान संशोधन के प्रावधान दक्षिण अफ्रीका के संविधान से लिए गए हैं।
- अनुच्छेद 368 को 24वें और 42वें संशोधन द्वारा क्रमशः 1971 और 1976 में संशोधित किया गया है।

महत्त्वपूर्ण निर्णय : केशवानन्द भारती वाद, 1973 में सर्वोच्च न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि संसद संविधान के मूल ढांचे" में परिवर्तन नहीं कर सकती है।

संविधान संशोधन की प्रक्रिया (अनुच्छेद 368)

विधेयक की प्रस्तुति	संविधान संशोधन विधेयक को संसद के किसी भी सदन में प्रस्तुत किया जा सकता है।
कौन प्रस्तुत कर सकता है ?	इसे मंत्री या किसी भी निजी सदस्य द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।

राष्ट्रपति की भूमिका	ऐसे विधेयक को प्रस्तुत करने के लिए राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति की आवश्यकता नहीं होती है।
पारित करने के लिए आवश्यक बहुमत	विशेष बहुमत सदन के कुल सदस्यों का बहुमत + सदन में उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों का 2/3 बहुमत। (50% + उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों का 2/3)
सदन द्वारा पारित किया जाना	दोनों सदनों द्वारा विधेयक को विशेष बहुमत से पारित किया जाना आवश्यक है।
संयुक्त अधिवेशन (अनुच्छेद 108)	संविधान संशोधन विधेयक पर सदनों की संयुक्त बैठक का प्रावधान नहीं है।
संघात्मक प्रावधानों में संशोधन	विशेष बहुमत + आधे राज्यों की विधानमंडल के साधारण बहुमत से संस्तुति
विधेयक को स्वीकृति देने में राष्ट्रपति की भूमिका	24वां संविधान संशोधन- इसके द्वारा अनुच्छेद 368 में संशोधन करके यह प्रावधान साथ ही यह भी प्रावधान किया गया कि राष्ट्रपति दोनों सदनों से पारित संविधान संशोधन विधेयक पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य है। साथ ही संसद, संविधान के किसी भी प्रावधान को संशोधित कर सकती है।

संविधान संशोधन में राज्य विधानमंडल की भूमिका	राज्य विधानमंडल में संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

साधारण बहुमत	**विशेष बहुमत**	**संसद का विशेष बहुमत और आधे राज्यों की सहमति**
• प्रत्येक सदन में उपस्थित एवं सदन के कुल सदस्यों का बहुमत मतदान करने वाले सदस्यों का बहुमत • यह एक सामान्य कानून पारित करने के ही समान है। • ऐसे संशोधनों को अनुच्छेद 368 के ·	• सदन के कुल सदस्यों का बहुमत (रिक्तियाँ और अनुपस्थितों सहित) और प्रत्येक सदन के उपस्थित एवं मतदान करने वाले सदस्यों का दो-तिहाई बहुमत • उदाहरण: 103 संशोधन के माध्यम से आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के	• विशेष बहुमत + आधे राज्यों की विधानमंडल के साधारण बहुमत से संस्तुति। • ज्यादातर संघीय प्रावधानों को इसी प्रक्रिया द्वारा संशोधित किया जाता है। • उदाहरण: जीएसटी से संबंधित 101वां संशोधन

तहत किया गया संशोधन नहीं माना जाता है। • उदाहरण: हाल ही में सर्वोच्च नयायालय के न्यायाधीशों की संख्या 31 से बढ़ाकर 34 की गयी है।	लिए 10% आरक्षण।	

प्रश्न. निम्न वक्तव्यों पर विचार कर सही उत्तर का चयन कीजिए -

कथन (A) - सरकारिया कमीशन की सिफारिश के अनुसार अनुच्छेद 356 का प्रयोग कम से कम होना चाहिए

कारण (R) - जिन राजनीतिक दलों ने केन्द्र में सरकार बनाई उन्होंने अनुच्छेद 356 का दुरुपयोग किया।

कूट -

a. **(A) और (R) दोनों सही है एवं (R) A की सही व्याख्या नहीं करता है।**

b. **(A) और (R) दोनों सही है एवं (R) A की सही व्याख्या करता है।**

c. **(A) सही है, परन्तु (R) गलत है।**

d. **(A) गलत है, परन्तु (R) सही है।**

उत्तर - B

विभिन्न प्रावधान और आवश्यक बहुमत के प्रकार

- नए राज्यों का प्रवेश/स्थापना (अनुच्छेद 2)
- नए राज्यों का गठन और मौजूदा राज्यों की सीमा और नाम में परिवर्तन (अनुच्छेद 3)
- दूसरी अनुसूची (वेतन, भते और विशेषाधिकार)
- राज्यों में विधान परिषद् का गठन/उत्सादन (अनुच्छेद 169)
- संसद में गणपूर्ति (अनुच्छेद 100)
- संसद सदस्यों का वेतन और भत्ता (अनुच्छेद 106)
- संसद की प्रक्रिया के नियम (अनुच्छेद 118)
- संसद में अंग्रेजी का उपयोग
- सर्वोच्च न्यायालय में जजों की संख्या

प्रश्न. निम्न में से किस संवैधानिक संशोधन द्वारा मिजोरम को राज्य का दर्जा दिया गया था -

A. 54 वाँ **B. 55 वाँ**

C. 52 वाँ **D. 53 वाँ**

उत्तर - D

साधारण बहुमत

- संसद, उसके सदस्यों और समितियों के विशेषाधिकार (अनुच्छेद 105)
- सर्वोच्च न्यायालय की अधिकारिता में वृद्धि (अनुच्छेद 138)
- आधिकारिक भाषा का उपयोग (अनुच्छेद 343)
- नागरिकता (अनुच्छेद 5-11)
- संसद और राज्य विधानसभाओं के चुनाव
- निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन (अनुच्छेद 82)
- छठवीं अनुसूची (अनुच्छेद 244)
- केंद्र शासित प्रदेश
- पांचवीं अनुसूची [अनुच्छेद 244 (1)]

विशेष बहुमत

- मूल अधिकार
- राज्य के नीति निदेशक तत्व

राष्ट्रीय दल का दर्जा हासिल करने के लिए आवश्यक शर्तें :

1. लोक सभाआम चुनाव अथवा राज्य विधान सभा चुनाव में किन्हीं चार अथवा अधिक राज्यों में कुल डाले गए वैध मतों का छह प्रतिशत प्राप्त करना जरूरी होगा।
2. इसके अलावा इसे किसी एक राज्य अथवा राज्यों से विधान सभा की कम से कम चार सीटें जीतनी होंगी।
3. लोक सभा में दो प्रतिशत सीटें हों और ये कम से कम तीन विभिन्न राज्यों में हासिल की गयी हों।

74वाँ संविधान संशोधन

1992 में यह संशोधन किया गया और इसके द्वा स्थानीय नगरीय शासन सम्बन्ध में व्यवस्था का प्रावध किया गया और बारहवीं अनुसूची जोड़कर उसे 18 विषय आबंटित किये गये। इसमें भी महिलाओं को 33 प्रतिश आरक्षण की व्यवस्था की गई है। यह अधिनियम 1 जून, 1993 को लागू किया गया।

सारांश

- भारतीय संविधान में भी परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप उसे संशोधित और व्यवस्थित करने की व्यवस्था है। हालांकि इसकी संशोधन प्रक्रिया ब्रिटेन के समान आसान अथवा अमेरिका के समान अत्यधिक कठिन नहीं है।
- दूसरे शब्दों में, भारतीय संविधान न तो लचीला है, और न ही कठोर यद्यपि देशों का समिश्रण है।
- संविधान के संशोधन का आरंभ संसद के किसी भी सदन में इस प्रयोजन के लिए विधेयक पुनः स्थापित करके ही किया जा सकेगा और राज्य विधानमंडल में नहीं।
- विधेयक को किसी मंत्री या गैर-सरकारी सदस्य द्वारा पुनः स्थापित किया जा सकता है और इसके लिए राष्ट्रपति की पूर्व स्वीकृति आवश्यक नहीं है।
- विधेयक को दोनों सदनों में विशेष बहुमत से पारित कराना अनिवार्य है यह बहुमत सदन की कुल सदस्य संख्या के आधार पर सदन में उपस्थित सदस्यों के दो तिहाई बहुमत या मतदान द्वारा होना चाहिए।
- प्रत्येक सदन में विधेयक को अलग-अलग पारित कराना अनिवार्य है। दोनों सदनों के बीच असहमति होने पर दोनों सदनों की संयुक्त बैठक में विधेयक को पारित कराने का प्रावधान नहीं है।
- यदि विधेयक संविधान की संघीय व्यवस्था के संशोधन के मुद्दे पर हो तो इसे आधे राज्यों के विधानमंडलों से भी सामान्य बहुमत से पारित होना चाहिए। यह बहुमत सदन में उपस्थित सदस्यों के बीच मतदान के तहत् हो।
- संसद के दोनों सदनों से पारित होने एवं राज्य विधानमंडलों की संस्तुति के बाद जहाँ आवश्यक हो, फिर राष्ट्रपति के पास सहमति के लिए भेजा जाता है।
- राष्ट्रपति विधेयक पर सहमति देगें। वे न तो विधेयक को अपने पास रख सकते हैं और न ही संसद के पास पुनर्विचार के लिए भेज सकते हैं।
- राष्ट्रपति की सहमति के बाद विधेयक एक अधिनियम बन जाता है (संविधान संशोधन अधिनियम) और संविधान में अधिनियम की तरह इसका समावेश कर लिया जाता है।
- संविधान संशोधन तीन प्रकार से (i) संसद के साधारण बहुमत द्वारा संशोधन (ii) संसद के विशेष बहुमत द्वारा संशोधन (iii) संसद के विशेष बहुमत द्वारा एवं आधे राज्य विधान मंडलों की संस्तुति के उपरांत संशोधन।
- 24 वां संविधान संशोधन अधिनियम, 1971 ने राष्ट्रपति के लिए संविधान संशोधन विधेयक पर सहमति के लिए बाध्य बनाया।
- अमेरिका में भी कांग्रेस (अमेरिकी विधायिका) द्वारा दो तिहाई राज्य विधानमंडलों की याचिका पर संवैधानिक सभा द्वारा संशोधन किया जा सकता है।

- **अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न**

1. भारत के संविधान का अनुच्छेद 368 संबंधित है-

A. संसद की संविधान संशोधन की शक्ति से
B. संविधान में संशोधन के लिए संसद द्वारा अपनाई जाने वाली प्रक्रिया से
C. संसद में दो तिहाई बहुमत द्वारा तथा कम से कम दो तिहाई राज्यों द्वारा अनुसमर्थन
D. संसद के दोनों सदनों के दो तिहाई उपस्थित एवं मतदान करने वाले सदस्यों द्वारा

उत्तर - C

2. एक संवैधानिक संशोधन को कम से कम आधे राज्यों की विधायिकाओं द्वारा एक संकल्प के द्वारा अनुसमर्थन भी कराना पड़ता है अगर इसका आशय किसी प्रकार का परिवर्तन करना है -

A. मौलिक अधिकारों में
B. नीति निर्देशक सिद्धांतों में
C. मौलिक कर्तव्यों में
D. उच्च न्यायालय संबंधी प्रावधानों में

उत्तर - D

3. एक संविधान संशोधन जिसका उद्देश्य एक नये राज्य का सृजन है अवश्यमेव पारित होना चाहिए।

A. संसद में साधारण बहुमत द्वारा
B. संसद में साधारण बहुमत द्वारा तथा कम से कम आधे राज्यों द्वारा अनुसमर्थन
C. संसद में दो-तिहाई बहुमत द्वारा तथा कम से कम दो-तिहाई राज्यों द्वारा अनुसमर्थन
D. संसद के दोनों सदनों के दो तिहाई उपस्थित एवं मतदान वाले सदस्यों द्वारा

4. संविधान के किस भाग और अनुच्छेद में संविधान संशोधन की प्रक्रिया का उल्लेख है?

A. भाग -I अनुक्रमांक -3
B. भाग VIII, अनुक्रमांक -239
C. मात्र - XVI, अनुक्रमांक- 336
D. भाग - XX, अनुक्रमांक - 368

उत्तर - D

5. भारतीय संविधान की कोंनसी विशेषता दक्षिण अफ्रीका के संविधान से ली गई है?

A. संसदीय प्रणाली
B. मूल अधिकार
C. संविधान संशोधन
D. मूल कर्तव्य

उत्तर - C

6. संविधान संशोधन कितने प्रकार से किया जाता है?

A. 2
B.3
C. 6
D. 9

उत्तर - B

7. संविधान संशोधन विधेयक सर्वप्रथम कहाँ प्रस्तुत किया जाता है -

A. संसद में
B. लोकसभा
C. राज्यसभा
D. विधानमंडल

उत्तर - A

8. सिंधी भाषा को किस संवैधानिक संशोधन द्वारा शामिल किया गया था?

A. 15 वाँ संशोधन
B. 21 वाँ संशोधन
C. 24 वाँ संशोधन
D. 31 वाँ संशोधन

उत्तर - C

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 5

मौलिक अधिकार

भारत के संविधान के **भाग तीन में अनु. 12 से 35 तक में मौलिक अधिकारों से सम्बन्धित** प्रावधान है।

मौलिक अधिकारों की अवधारणा को **U.S.A से** अपनाया गया है। भारत की व्यवस्था में मौलिक अधिकारों के निम्नलिखित महत्व हैं ।

(1) मौलिक अधिकारों के माध्यम से राजनीतिक एवं प्रशासनिक लोकतंत्र की स्थापना होती है। अर्थात् कोई भी नागरिक प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में राजनीति में भागीदारी कर सकता है और प्रत्येक नागरिक अपनी योग्यता के आधार पर प्रशासन का हिस्सा बन सकता है।

(2) मौलिक अधिकारों के माध्यम से सरकार की तानाशाही अथवा व्यक्ति विशेष की इच्छा पर नियंत्रण स्थापित होता है।

(3) मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सुरक्षा स्थापित होती हैं ।

(4) मौलिक अधिकारों के माध्यम से विधी के शासन की स्थापना होती है।

(5) मौलिक अधिकारों के माध्यम से अल्पसंख्यक और दुर्बल वर्ग को सुरक्षा प्राप्त होती है।

(6) मौलिक अधिकारों के माध्यम से पंथनिरपेक्ष राज्य की अवधारणा को सुरक्षा प्राप्त होती हैं और इसको बढ़ावा मिलता है।

(7) मौलिक अधिकार सामाजिक समानता एवं सामाजिक न्याय यात्रा की स्थापना करते हैं।

(8) मौलिक अधिकारों के माध्यम से व्यक्ति की गरिमा एवं सम्मान की रक्षा होती है।

(9) मौलिक अधिकार सार्वजनिक हित एवं राष्ट्र की एकता को बढ़ावा देते है।

मौलिक अधिकारों की विशेषताएँ

(1) **मौलिक अधिकार न्यायालय में वाद योग्य हैं । अर्थात् मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने पर सुरक्षा के लिए न्यायालय में अपील की जा सकती है।**

(2) कुछ मौलिक अधिकार केवल नागरिकों से सम्बंधित है। जबकि कुछ मौलिक अधिकार व्यक्ति से संबंधित है।

(3) **मौलिक अधिकारों पर युक्तियुक्त प्रतिबन्ध लगाया गया है।**

(4) मौलिक अधिकार राज्य के विरुद्ध प्रदान किए गये है। इसलिए ये राज्य के लिए नकारात्मक जबकि व्यक्ति के लिए सकारात्मक है।

(5) ये राज्य के प्राधिकार की कम करते है और व्यक्ति के सम्मान को बढ़ावा देते हैं।

(6) संसद को भी यह अधिकार नही कि वह मौलिक अधिकार से सम्बंधित मूल ढ़ाचे में परिवर्तन कर सके । (नकारात्मक परिवर्तन)

(7) आपातकाल के समय अनु० 20 और 21 के तहत प्राप्त मौलिक अधिकारों को छोड़कर अन्य मौलिक अधिकार निलंबित किए जा सकते हैं।

(8) मौलिक अधिकार शत्रु देश के नागरिक तथा अन्य देशों को प्राप्त नहीं हैं।

प्रश्न. निम्नांकित कथनों पर विचार कीजिए?

A. मूलअधिकारों एवं राज्य नीति के निदेशक तत्वों को यथासंभव प्रभावी बनाने के लिए साम्य संरचना का सिद्धांत अपनाया गया है।

B. 1980 के मिनर्वा मिल्स केस में उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 14 एवं 19 में उल्लेखित मूल अधिकारों पर अनुच्छेद 39(ख) एवं (ग) में उल्लेखित राज्य नीति के निदेशक तत्वों की वरीयता से संस्थापित की है

कूट -

a. केवल A सही है।

b. केवल B सही है।

c. (A) एवं (B) दोनों सत्य है।

d. (A) एवं (B) दोनों गलत है।

उत्तर - c

मौलिक अधिकारों की आलोचना –

(1) इनका कोई स्पष्ट दर्शन नहीं है। अधिकांश मौलिक अधिकारों की व्याख्या उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय पर छोड़ दी गई है।

(2) इनमें स्पष्टता का अभाव है और ये सामान्य लोगों की समझ से बाहर है।

(3) मौलिक अधिकार आर्थिक व्यय की स्थापना नहीं करते।

(4) **आपातकाल के समय इनका निलबन हो जाता है।**

note- अनुच्छेद – 21 का निलंबन किसी भी परिस्थिति में नहीं हो सकता ।

(5) निवारक निरोध जैसे प्रावधान मौलिक अधिकारों को कमजोर करते हैं और राज्य को नागरिकों पर हावी कर देते हैं ।

(6) **संसद के अधिकार हैं कि अनुच्छेद - 368 का प्रयोग कर इनमे कमी कर सकती है।**

(7) मौलिक अधिकारों के सम्बन्ध में मिलने वाला न्याय अत्यधिक महंगा हैं तथा प्रकिया जटिल है।

मौलिक अधिकार

अनु. 12 राज्य -	**अनु. 13**
(i) संघ सरकार एवं संसद (ii) राज्य सरकार एवं विधानमंडल (iii)स्थानीय प्राधिकरण / प्राधिकारी (iv) सार्वजनिक अधिकारी अन्य वे निजी संस्थाए जो राज्य के लिए कार्य करती हो	कोई भी विधि जो मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करती हैं तो अतिक्रमण की सीमा तक शून्य हो जाएगी । **विधि** (i) स्थाई विधि – संसद एवं विधानमण्डल द्वारा निर्मित (ii) अस्थाई विधि – जब राष्ट्रपति व राज्यपाल अध्यादेश जारी करें । (iii) कार्यपालिका के द्वारा निर्मित नियम/विधि (iv) ऐसी विधि जो संविधान पूर्व की हो

प्रश्न. निम्न में से कौन सा मूल अधिकार भारतीय संविधान में नागरिकों को नहीं दिया गया है?

a. देश के किसी भाग में बसने का अधिकार

b. लिंग समानता का अधिकार

c. सूचना का अधिकार

d. शोषण के विरुद्ध अधिकार

उत्तर – c

(1) समता का अधिकार :- (अनु. 14-18)

(i) विधि के समक्ष एवं विधियों का समान संरक्षण-

संविधान के अनु० 14 में विधि के समक्ष समता एवं विधियों के समान संरक्षण का प्रावधान हैं । **विधी के समक्ष समता की अवधारणा ब्रिटेन से** प्रभावित हैं । विधी के समक्ष समता से आशय हैं, विधी सर्वोच्च होगी। और कोई भी विधिक व्यक्ति विधी से ऊपर नही होगा।

विधी के समक्ष समता की निम्नलिखित विशेषताए होती हैं –

(a) कोई भी व्यक्ति (गरीब, अमीर, प्राधिकारी अथवा सामान्य व्यक्ति, सरकारी संगठन गेर सरकारी संगठन) विधी से ऊपर नही होगा ।

(b) किसी भी व्यक्ति के लिए अथवा व्यक्ति के पक्ष में विशेषाधिकार नहीं होंगे।

(c) न्यायालय सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करेंगा।

विधि के समक्ष समता के सिद्धांत के भारत के संबंध में निम्नलिखित अपवाद है।

(i) भारत का राष्ट्रपति अथवा राज्यों के राज्यपाल पर पद पर रहते हुए किसी भी प्रकार का आपराधिक मुकदमा नही चलाया जाएगा।

(ii) राष्ट्रपति अथवा राज्यपाल को इन पदों पर रहते हुए लिए गए निर्णयों के सम्बन्ध में न्यायालय में प्रश्नगत नही किया जायेगा ।

(iii) कोई व्यक्ति यदि संसद अथवा राज्य विधानमंडल की कार्यवाही को उसी रूप में प्रकाशित करता हैं तो उसे दोषी नही माना जायेगा ।

(iv) संसद अथवा राज्य विधानमंडल के सदस्यों को सदन की कार्यवाही के आरम्भ होने के 40 दिन पूर्व तथा कार्यवाही के समाप्त होने के 40 दिन बाद तक किसी दीवानी मामले में न्यायलय में उपस्थित होने के लिए बाध्य नही किया जायेगा ।

(v) विदेशी राजनयिक अथवा कूटनीतिज्ञ फौजदारी मामलों एवं दीवानी मामलों से मुक्त होंगे ।

(vi) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों जैसे – UNO, ADB, WB, IMF आदि के अधिकारी एवं कर्मचारी दीवानी एवं फौजदारी मामलों से मुक्त होंगे ।

विधियों के समान संरक्षण की अवधारणा U.S.A. की देंन है ।

विधियों के सामान संरक्षण से आशय हैं । "समान के साथ सामान व्यवहार तथा असमान के साथ असमान व्यवहार"

इस अवधारणा को सकारात्मक माना जाता हैं, क्योंकि इसके माध्यम से किसी के साथ अन्याय नही होता । भारत में बाल सुधार कानून, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए विशेष कानून, महिलाओ के लिए विशेष कानून इसका उदाहरण हैं ।

कुछ आधारो पर विभेद का प्रतिषेध

- अनु. 15 में यह प्रावधान हैं कि राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान को लेकर विभेद नही करेगा । यह व्यवस्था राज्य और व्यक्ति दोनों पर समान रूप से लागू होती हैं ।
- इसमें प्रावधान हैं कि राज्य के द्वारा दुकानों, सार्वजनिक भोजनालयो, होटल, मनोरंजन के स्थान आदि पर उपर्युक्त आधारों पर भेदभाव नही किया जायेगा ।
- इसके अलावा राज्य निधि से पोषित कुओ, तालाबो, स्नानघाट आदि का प्रयोग करने से किसी व्यक्ति को उपर्युक्त आधारों पर रोका नही जायेगा।
- इसमें यह भी प्रावधान हैं कि राज्य महिलाओ एवं बच्चो के लिए विशेष व्यवस्था कर सकता हैं ।
- इसमें यह भी व्यवस्था है कि राज्य SC,ST तथा शैक्षणिक एवं सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों के लिए शैक्षणिक संस्थाओ में आरक्षण कर सकता हैं ।
- इसमें प्रावधान हैं कि राज्य आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए शैक्षणिक संस्थाओ में आरक्षण कर सकता है।

लोक नियोजन के सम्बन्ध में अवसर की समता (अनु. - 16)

अनु. 16 में यह प्रावधान कि राज्य के अधीन किसी भी पद पर नियुक्ति के सम्बन्ध में अवसर की समता होगी। केवल धर्म, वंश, जाति, लिंग तथा जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा।

लेकिन निम्नलिखित मामलो में अवसर की समता के सिद्धांत का उल्लंघन किया जा सकता है –

(1) संसद किसी विशेष रोजगार के लिए निवासी की शर्त शामिल कर सकती है। इसी प्रावधान के तहत अनेक राज्यों में राज्य के मूल निवासियों को विशेषाधिकर प्रदान किए गए हैं।

(2) किसी धर्म से संबंधित नियुक्ति के मामले में धर्म विशेष के होने की सीमा लगाई जा सकती है।

(3) विशेष वर्ग के लिए अलग व्यवस्था की जा सकती है। जैसे- SC, ST, शैक्षणिक और सामाजिक दृष्टि से पिछड़ा वर्ग तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग तथा कुछ राज्यों में महिलाओ के सम्बन्ध में विशेष प्रावधान है।

को अधिकार नही देता, जो नागरिक तो हैं लेकिन निवासी नही हैं ।

- **अनु.29 में यह भी प्रावधान हैं कि राज्य के द्वारा संचालित तथा राज्य निधि के आधार पर वंचित नही किया जायेगा।**
- अनु. 30 :- शिक्षा संस्थाओं की स्थापना एवं उनका प्रशासन चलाने का अल्प संख्यक वर्गों का अधिकार -
- धर्म या भाषा आधार पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गों को को अपनी रूची के शिक्षण संस्थानों की स्थापना करने एवं इनका प्रशासन चलाने का अधिकार है ।
- अल्पसंख्यक वर्ग ले द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान को यह सुनिश्चित करना होगा कि संन्स्थान के लिए अर्जित चल अथवा अचल संपत्ति किसी प्रचलित विधि का अतिक्रमण करे ।
- राज्य ऐसे किसी शिक्षण संस्थान को यदि सहायता देता हैं तो धर्म अथवा भाषा के आधार पर भेदभाव नही करेगा ।
- अनु. 30 राज्य को यह अधिकार भी देता हैं कि राज्य से सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थान धर्म भाषा से सम्बंधित शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा प्रणाली को ही अपनाए ।

<u>कुछ विधियों की सुरक्षा से सम्बंधित प्रावधान :-</u>

<u>(1) संपदाओ आदि के अर्जन से सम्बंधित उपबंध करने वाली विधियों की सुरक्षा (अनु. 31-A)</u>

अनु. 13 के तरह भी राज्य को अधिकार हैं कि-

(i) वह किसी संपदा का अर्जन कर सकता है। (लोकहित में)

(ii) किसी संपत्ति का प्रबंध लोक हित में स्वयं कर सकता है।

(iii) दो या दो से अधिक निगमों को लोक हित में मिला सकता है।

(iv) किसी निगम के प्रबंध को, सचिवो, निदेशको, या उसके शेयर धारकों के अधिकार में कमी या वृद्धि कर सकता है।

(v) किसी खनिज संसाधन या खनीज तेल को प्राप्त करने या खोजने के उद्देश्य से भूमि का अधिग्रहण कर सकता है। और इसके लिए किसी करार को समय से पहले समाप्त किया जा सकता है।

इस सम्बन्ध में यदि अनु.14 व 19 का अतिक्रमण भी होता है । तो भी ऐसे कार्य पर नकारात्मक प्रभाव नही पड़ेगा ।

<u>(2) कुछ अधिनियमों और विनियमों का विधिमान्यकरण :- (अनु. 31-B)</u>

राज्य के द्वारा किसी प्रकार की विधि बनाकर नोवीं अनुसूची में शामिल की जाती है । तो ऐसी विधि विधिमान्य होगी और यह नही समझा जायेगा कि यह भाग 3 का अतिक्रमण करती हैं ।

<u>(3) कुछ नीति निदेशक तत्वों को प्रभावित करने वाली विधियों की सुरक्षा :- (अनु. 31-c)</u>

अनु. 13 की किसी बात के होते हुए कोई विधि जो भाग 4 के सभी सिद्धांतो या कुछ सिद्धांतो को प्रभावी करने के लिए लागू की जाती हैं । तो ऐसी विधि इस आधार पर शून्य नही समझी जाएगी कि यह अनु. 14 अथवा अनु. 19 का अतिक्रमण करती हैं ।

यदि ऐसी कोई विधि किसी राज्य विधानमंडल के द्वारा बनाई जाती हैं तो तब ही लागू होगी, जब राष्ट्रपति इसका अनुमोदन करे ।

<u>(6) संवैधानिक उपचारों का अधिकार (अनु. 32) सशस्त्र बलों के मौलिक अधिकारो के सम्बन्ध में प्रावधान</u>

संसद को यह अधिकार हैं कि भाग 3 के द्वारा प्राप्त अधिकारी को निम्नलिखित के लिए सीमित कर सकती हैं -

(i) सशस्त्र बलों के सदस्यों

(ii) लोक व्यवस्था बनाये रखने वाले सदस्यों

(iii) सूचना संगठनों के सदस्यों

उपर्युक्त के सम्बन्ध में इनको सहयोग देने वाले नाई, मोची, मैकेनिक, ड्राईवर, बावर्ची आदि पर भी प्रतिबन्ध लागु होंगे । यदि ये उपर्युक्त को सेवा प्रदान करते हैं ।

मार्शल लॉ अथवा सैनिक शासन के क्षेत्र में मौलिक अधिकार पर प्रतिबन्ध (अनु.34)

(1) अधित्यजन का सिद्धांत – *इससे आशय हैं कि जिन नागरिकों अथवा व्यक्तियों को मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं । वे मौलिक अधिकारों का त्याग नही कर सकते ।*

उदा. अनु. 21 प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का अधिकार देता हैं । लेकिन इससे यह आशय नही हैं कि कोई व्यक्ति आत्महत्या करने का अधिकार रखता है ।

(2) पृथक्करणीयता का सिद्धांत - संसद अथवा राज्य विधानमंडल के द्वारा बनाई गई कोई विधि मौलिक अधिकारों के अतिक्रमण की सीमा तक ही शून्य होगी । *अर्थात् उस विधि के केवल उन प्रावधानों को ही शून्य माना जायेगा । जो मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करते हो ।*

(3) आच्छादन का सिद्धांत – *यह सिद्धांत तय करता हैं कि संविधान के लागु होने से पूर्व की कोई विधि यदि मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करती हैं तो ऐसी विधि सक्रिय नही रहेगी । अर्थात् विधि शून्य नही होगी । लेकिन उसका प्रभाव समाप्त हो जायेगा ।*

इस मामले की सम्पूर्ण विधि प्रभावहीन नही होगी । विधि का केवल वह भाग ही प्रभावहीन होगा । जो मौलिक अधिकारों का अतिक्रमण करता हैं ।

(4) भावी प्रवर्तन का सिद्धांत – *इससे आशय हैं । व्यक्ति को मौलिक अधिकारों की सुरक्षा उस दिन या उसके बाद से प्राप्त होगी । जिस दिन से मौलिक अधिकार प्रभावी हुए ।*

(5) न्यायिक पुनरवलोकन का सिद्धांत- केशवानंद भारती वाद *में सर्वोच्च न्यायालय ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया । इसमें व्यवस्था की गई कि* ***संसद के द्वारा बनाई गई ऐसी कोई भी विधि जो मूल ढाचे का अतिक्रमण करती है । अथवा संविधान की मूल भावना के विरुद्ध हो तो सर्वोच्च न्यायालय को उस विधि को शून्य घोषित करने का अधिकार हैं ।***

रिट के प्रकार

- *बंदी प्रत्यक्षीकरण*
- *परमादेश*
- *प्रतिषेध*
- *उत्प्रेषण*
- *अधिकार पृच्छा*

बंदी प्रत्यक्षीकरण

अर्थ (प्रस्तुत किया जाय)

यह उस व्यक्ति के संबंध में न्यायालय द्वारा जारी आदेश हैं, जिसे हिरासता में रखा गया है। उसे इसके सामने प्रस्तुत किया जाय । तब न्यायालय मामले की जांच करता है, यदि हिरासत में लिए गये व्यक्ति का मामला अवैध है तो उसे स्वतंत्र किया जा सकता है। इस तरह यह किसी को जबरन हिरासत में रखने के विरुद्ध है।

यह रिट तब जारी नहीं की जा सकती जब

(i) हिरासत कानून सम्मत है।

(ii) कार्यवाही किसी विधानमंडल या न्यायालय की अवमानना के तहत हुई हो।

(iii) न्यायालय द्वारा हिरासत

(iv) हिरासत न्यायालय के न्यायक्षेत्र से बाहर हुई हो।

परमादेश

(अर्थ हम आदेश देते हैं।)

यह एक नियंत्रण है, जिसे न्यायालय द्वारा सार्वजनिक अधिकारियो (सार्वजनिक इकाई, निगम, अधीनस्थ न्यायालयों या सरकार के खिलाफ) जारी किया जाता है ताकि उनसे कार्यों और नकारने के संबंध में पूछ जा सके ।

अध्याय – 8

राष्ट्रपति

- भारत में **'राष्ट्र प्रमुख'** के रूप में **राष्ट्रपति** के **पद की व्यवस्था** को अपनाया गया हैं । ब्रिटिश क्राउन और अमेरिकी राष्ट्रपति से भिन्न, संविधान निर्माताओं ने भारतीय व्यवस्था के अनुरूप इस पद के एक संतुलित स्वरूप को अपनाया । **गणतांत्रिक प्रणाली** होने के कारण संविधान में **'निर्वाचित राष्ट्रपति'** के प्रावधान को शामिल किया गया ।

कार्यपालिका प्रमुख

- मंत्रिमंडलीय कार्यपालिका में सामान्यतः दो प्रमुख होते हैः एक **'वास्तविक प्रमुख' एवं दूसरा 'नाममात्र या औपचारिक प्रमुख' । भारत में राष्ट्रपति नाममात्र प्रमुख है।** तथा राष्ट्रपति कार्यालय की प्रकृति काफी सीमा तक औपचारिक हैं ।
- शासन व्यवस्था में औपचारिक प्रमुख की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती हैः
- राष्ट्र प्रमुख के रूप मेंः **राष्ट्रपति देश की एकता, अखंड़ता एवं एकजुटता का प्रतीक हैं** । अतः व्यवहारिक रूप से राजप्रमुख न होते हुए भी भारतीय राष्ट्रपति को राष्ट्रप्रमुख की भूमिका प्रदान की गयी हैं।
- दलगत राजनीति से मुक्त रखने हेतु राष्ट्रपति कार्यालय को दलगत राजनीति से ऊपर माना जा सकता हैं ।
- प्रशासन की निरंतरता हेतु- मंत्रिपरिषद् का कार्यकाल अनिश्चित होता हैं और यह लोकसभा में बहुमत पर निर्भर करता हैं । ऐसे में प्रशासन में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए एक निश्चित कार्यकाल वाले कार्यालय का होना आवश्यक हैं ।
- संघवादी स्वरूप को बनाए रखने हेतुः भारत के संदर्भ में एक अतिरिक्त कारण, संघवाद भी हैं । राज्य विधानसभाओं के सदस्य भी राष्ट्रपति के चुनाव में भाग लेते हैं । इसलिए, यह कहा जा सकता हैं कि राष्ट्रपति संघ के अतिरिक्त राज्यों का भी प्रतिनिधित्व करता हैं ।

- **संविधान के भाग 5 के अनुच्छेद 52 से 78 तक में संघ की कार्यपालिका का वर्णन हैं ।**
- **अनुच्छेद 52 के अनुसार, भारत का एक राष्ट्रपति होगा ।** यहाँ ''होगा'' शब्द के लिए ''shall'' का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि भारत का राष्ट्रपति अपने पद पर सदैव विधमान होगा । यह पद न तो कभी रिक्त रखा जा सकता हैं और न ही इसे कभी समाप्त किया जा सकता हैं । राष्ट्रपति का चुनाव, इसके कार्यकाल की समाप्ति से पहले ही संपन्न करवाए जाने का प्रावधान किया गया हैं । अस्वस्थता के कारण अस्थायी अनुपस्थिति आदि के मामले में उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति का पद धारण करेगा जब तक कि राष्ट्रपति अपना पदभार पुनर्ग्रहण न करें ।

स्थायी कार्यपालिका एवं अस्थायी कार्यपालिका

अनुच्छेद 53 (1) के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होगी और वह इसका प्रयोग इस संविधान के अनुसार स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा करेगा ।

विवरण

- राष्ट्रपति, अपनी इस कार्यपालिकीय शक्ति का प्रयोग मुख्यतः दो प्रकार के अधीनस्थ अधिकारियों के माध्यम से करता हैः
- स्थायी कार्यपालि या नौकरशाही
- अस्थायी या राजनीतिक कार्यपालिका
- स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही
- स्थायी कार्यपालिका के अंतर्गत अखिल भारतीय सेवाएँ (IAS, IPS, IFoS), प्रांतीय सेवाएँ] स्थानीय सरकार के कर्मचारी और लोक उपक्रमों के तकनीकी एवं प्रबंधकीय अधिकारी सम्मिलित होते हैं ।
- नौकरशाही अथवा स्थायी कार्यपालिका की आवश्यकता क्यों घ्
- संविधान निर्माता ब्रिटिश शासन के दौरान अपने अनुभव से गैर-राजनीतिक एवं व्यावसायिक रूप

से दक्ष प्रशासनिक मशीनरी के महत्व को जानते थे ।

- *नौकरशाही, वह माध्यम हैं जिसके द्वारा सरकार की लोकहितकारी नीतियाँ जनता तक पहुँचती हैं ।*
- *सरकार के स्थायी कर्मचारी के रूप में कार्य करने वाले ये प्रशिक्षित एवं प्रवीण अधिकारी, नीतियों को बनाने व उसे लागू करने में मंत्रियों का सहयोग करते हैं ।*
- *वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में नीति-निर्माण एक अत्यंत ही जटिल कार्य बन गया हैं जिसके लिए विशेषज्ञता एवं गहन ज्ञान की आवश्यकता हैं । इसके लिए दक्ष एवं स्थायी कार्यपालिका की आवश्यकता हैं ।*
- *राजनीतिक या अस्थायी कार्यपालिका का ध्यान सामान्यतः नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन में अल्पकालीन राजनीतिक लाभ पर केंद्रित होता हैं । जबकि, स्थायी कार्यपालिका दीर्घकालीन समाजिक - आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ही नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन में मंत्रियों को परामर्श देती हैं ।*
- *सरकारो के बदलने के बावजूद भी स्थायी कार्यपालिका, नीतियों में निरंतरता एवं लोकप्रशासन में एकरूपता बनाए रखने* में *अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं ।*
- *स्थायी कार्यपालिका एवं राजनीतिक कार्यपालिका के मध्य संबंध*
- *संसदीय शासन प्रणाली में, राजनीतिक कार्यपालिका (मंत्रीपरिषद्, प्रधानमंत्री सहित) सरकार के प्रभारी होते हैं एवं स्थायी कार्यपालिका या प्रशासन इनके नियंत्रण एवं देखरेख में होता हैं ।*
- *यह मंत्री की जिम्मेदारी है कि वह प्रशासन पर राजनीतिक नियंत्रण रखे ।*
- *राजनीतिक कार्यपालिका, जहाँ सामूहिक रूप से लोकसभा या विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती हैं,* 1ण2 *वहीं स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही अपने संबंधित* 1ण3 *विभागों के मंत्रियों के प्रति उत्तरदयी होती हैं ।*
- *नौकरशाही से यह अपेक्षा की जाती हैं कि यह राजनीतिक रूप से तटस्थ हो, अर्थात् नौकरशाही, नीतियों पर विचार करते समय किसी राजनीतिक दृष्टिकोण या विचारधार का समर्थन नहीं करेगी ।*
- *लोकतंत्र में सरकारों के बदलने पर नौकरशाही की जिम्मेदारी है कि वह नई सरकार को अपनी नीति बनाने एवं लागू करने में मदद करें ।*
- *हमारा संविधान राष्ट्रपति के पद का सृजन करता हैं किंतु शासन की प्रणाली राष्ट्रपतीय नहीं हैं । शासन की राष्ट्रपतीय और संसदीय प्रणाली को समझना एवं उनके भेद जानना आवश्यक हैं । राष्ट्रपति प्रणाली के मुख्य लक्षण इस प्रकार हैं:-*
- *राष्ट्रपति राज्य का अध्यक्ष होता हैं और साथ ही शासनाध्यक्ष भी । वह राज्य व्यवस्था मंे शीर्षस्थ होता हैं । वह वास्तव में कार्यपालक होता हैं, नाममात्र का नहीं । उसमें जो शक्तियाँ निहित हैं उनका वह व्यवहार में और वास्तव में उपयोग करता हैं ।*
- *सभी कार्यपालिका शक्तियाँ राष्ट्रपति में निहित होती हैं । राष्ट्रपति द्द्वारा नियुक्त मंत्रिमंड़ल उसे केवल सलाह देता हैं यह आवश्यक नही हैं कि वह उनकी सलाह माने । वह उनकी सलाह लेकर अपने विवेक के अनुसार कार्य कर सकता हैं ।*
- *राष्ट्रपति जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होता हैं । राष्ट्रपति के पद की अवधि विधान-मंड़ल की इच्छा पर आश्रित नहीं हैं । विधान-मंड़ल न तो राष्ट्रपति का निर्वाचन करता हैं और न उसे उसके पद से हटा सकता हैं ।*
- *राष्ट्रपति और मंत्रिमंड़ल के सदस्य, विधान मंड़ल के सदस्य नहीं होते हैं । राष्ट्रपति विधान-मंड़ल की अवधि के अवसान के पूर्व उसका विघटन नहीं कर सकता ।* ***विधान-मंड़ल राष्ट्रपति की पदावधि को महाभियोग द्वारा ही समाप्त कर सकता हैं अन्यथा नहीं*** *। इस प्रकार राष्ट्रपति और विधान-मंड़ल नियत अवधि के लिए निर्वाचित होते हैं और एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं । एक का दूसरे में हस्तक्षेप नहीं होता।*

<u>राष्ट्रपति पद के लिए अर्हताएँ</u>

अनु. 58 के अनुसार *राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित अर्हताओं को पूर्ण करना आवश्यक हैं:*

- वह भरत का नागरिक हो ।
- वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हों ।
- वह लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने के योग्य हों।
- वह संघ सरकार अथवा किसी राज्य सरकार अथवा किसी स्थानीय प्राधिकरण अथवा किसी सार्वजनिक प्राधिकरण में लाभ के पद पर न हों ।

राष्ट्रपति की पदावधि (Term of Office)

- अनु. 56 के अनुसार, राष्ट्रपति की पदावधि, उसके पद धारण करने की तिथि से पांच वर्ष तक होती हैं । हालाँकि वह निम्नलिखित रीतियों से अपने कार्यकाल के दौरान ही पदमुक्त हो सकता हैः
- भारत के उपराष्ट्रपति को लिखित में त्यागपत्र सौंपकर ।
- अनुच्छेद - 60 में राष्ट्रपति की शपथ का प्रावधान है।
- संविधान का अतिक्रमण करने पर अनुच्छेद 61 में वर्णित महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा उसे पदमुक्त किया जा सकता हैं । अनु. 61(1) के तहत, महाभियोग हेतु एकमात्र आधार **'संविधान का अतिक्रमण'** उल्लिखित हैं ।
- यदि राष्ट्रपति का पद उसकी मृत्यु, त्यागपत्र, निष्कासन अथवा किन्हीं अन्य कारणों से रिक्त हो तो उपराष्ट्रपति, नये राष्ट्रपति के निर्वाचित होने तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा । **यदि उपराष्ट्रपति, का पद रिक्त हों, तो भारत का मुख्य न्यायाधीश (और यदि यह भी पद रिक्त हो तो उच्चतम न्यायालय का वरिष्ठतम न्यायाधीश) कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा ।**
- **पद रिक्त होने की तिथि से छह महीने के भीतर नए राष्ट्रपति का चुनाव करवाया जाना आवश्यक हैं ।** वर्तमान या भूतपूर्व राष्ट्रपति, संविधान के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए इस पद के लिए पुनर्निर्वाचन का पात्र होगा ।

निर्वाचन प्रणाली

- भारत के **राष्ट्रपति के निर्वाचन (अनु. 55)** के लिए **आनुपातिक प्रतिनिधत्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत पद्धति को** अपनाया गया हैं । इस पद्धति के तहत निर्वाचन, **गुप्त मतदान के** माध्यम से एक निर्वाचक मंडल द्वारा किया जाता हैं ।
- भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप से **अप्रत्यक्ष चुनाव प्रक्रिया को अपनाया** गया हैं । (अमेरिकी राष्ट्रपति की निर्वाचन प्रक्रिया सैद्धांतिक रूप से अप्रत्यक्ष जबकि व्यावहारिक रूप से प्रत्यक्ष हैं ।)

प्रश्न. सुमेलित कीजिए -

सूची -1	सूची -2
भारत के राष्ट्रपति	**चुनावी विवरण**
(a) राजेन्द्र प्रसाद	(i) निर्विरोध निर्वाचित
(b) जाकिर हुसैन	(ii) द्वितीय वरीयता की मतगणना
(c) वी.वी गिरी	(iii) दो कार्यकालों के लिए निर्वाचित
(d) नीलम संजीव रेड्डी	(iv) पद धारण के दौरान मृत्यु

कूट :-	A	B	C	D
(a)	iii	iv	ii	i
(b)	i	iii	iv	ii
(c)	iii	ii	i	iv

उत्तर - a

निर्वाचक मंड़ल (Electoral college)

निर्वाचक मंड़ल में सम्मिलित होते हैः

- **संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य ।**
- **राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य**
- **दिल्ली और पुदुचेरी संघ शासित प्रदेशों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य(70 वें** संविधान संशोधन अधिनियमए 1992 द्वारा शामिल ।

- राष्ट्रपति भारत की आकस्मिक निधि से, किसी अदृश्य व्यय हेतु अग्रिम भुगतान की व्यवस्था कर सकता हैं ।
- **राष्ट्रपति राज्य व केंद्र के मध्य राजस्व के बँटवारें के लिए प्रत्येक पांच वर्ष में एक वित्त आयोग (अनुच्छेद 280 के अधीन) का गठन करता हैं ।**

राजनयिक शक्तियाँ

राष्ट्रपति को बाह या विदेशी मामलों में व्यापक राजनयिक शक्तियाँ प्राप्त हैं । अन्य देशों के साथ संबंधों को बनाए रखने के उद्देश्य से उन देशों के लिए वह राजदूतों व उच्चायुक्तों की नियुक्ति करता हैं । विदेशी राष्ट्रों के राजनयिक प्रतिनिधियों को भी अपनी पहचान राष्ट्रपति के पास प्रस्तुत करनी होती हैं । **राष्ट्रपति ही अंतर्राष्ट्रीय मामलों व मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करता हैं । इसके अतिरिक्त सभी अतंर्राष्ट्रीय संधियाँ व समझौते राष्ट्रपति के नाम पर किए जाते हैं ।** हालाँकि, वे संसद के अनुमोदन के अधीन हैं ।

सैन्य शक्तियाँ

- राष्ट्रपति, भारत के सैन्य बलों का सर्वोच्च सेनापति होता हैं । इस क्षमता में **वह थल सेना, वायु सेना और नौसेना के प्रमुखों की नियुक्ति करता हैं ।** वह युद्ध के प्रारम्भ या समाप्ति की घोषणा कर सकता हैं हाँलांकि, यह संसद की अनुमति के अधीन हैं ।

न्यायिक शक्तियाँ

- राष्ट्रपति, उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सहित अन्य न्यायाधीशों और उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति करता हैं । उच्च न्यायलय के न्यायाधीशों के स्थानान्तरण का अधिकार भी राष्ट्रपति को प्राप्त हैं ।
- अनु. 143 के अनुसार, राष्ट्रपति, उच्चतम न्यायालय से कानून या तथ्य के किसी ऐसे प्रश्न, जिसमें राष्ट्रहित या लोकहित से संबंधी व्यापक महत्व का प्रश्न निहित हों, पर सलाह प्राप्त कर सकता हैं । हालाँकि, यह उच्चतम न्यायालय पर निर्भर करता हैं कि वह सलाह दे या न दे तथा दूसरी ओर राष्ट्रपति भी, दिए गए परामर्श को मानने के लिए बाध्य नहीं हैं ।

क्षमादान की शक्ति

संविधान के अनुच्छेद 72 के अंतर्गत निहित क्षमादान इत्यादि की शक्ति राष्ट्रपति का, देश की जनता द्वारा उनमें विश्वास के रूप में निहित किया गया, एक संवैधानिक कर्तव्य हैं ।

1. राष्ट्रपति निम्नलिखित मामलों में किसी भी दोषी व्यक्ति के दंड को क्षमा, उसका प्रविलंबन, विराम या परिहार करने की शक्ति रखता हैं -

   (क) **ऐसे सभी मामलों में जहाँ दंड कोर्ट मार्शल (सैन्य न्यायालय) द्वार दिया गया हों** ।

   (ख) **ऐसे सभी मामलों में जहाँ संघ** की **कार्यपालिका शक्ति के विस्तार से संबंधित** किसी **भी कानून के उल्लंघन के विरुद्ध किसी** अपराध **के लिए दंड़ दिया गया हों** ।

   (ग) **ऐसे सभी मामलों में जहाँ मृत्युदंड़ दिया गया** हों ।

2. **खंड 1 के उपखंड** (क) की कोई बात, संघ के सशस्त्र बलों के किसी अधिकारी की, सैन्य न्यायालय द्वारा पारित दंडादेश के निलंबन, परिहार या लघुकरण की, विधि द्वारा प्रदत शक्ति पर प्रभाव नहीं डालेगी । इन शब्दों के अर्थ को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता हैं:

1. **क्षमा (Pardon)** इसमें दण्ड़ और बंदीकरण दोनों को हटा दिया जाता हैं और दोषी को सभी दण्ड़, दंड़ादेशों और निरहर्ताओं से मुक्त कर दिया जाता हैं।
2. **प्रविलंबन (Reprieve)**: इसका अर्थ हैं, किसी दंड़ (विशेष रूप से मृत्युदंड़) पर अस्थायी रोक लगाना । इसका उद्देश्य दोषी व्यक्ति को राष्ट्रपति से क्षमायाचना अथवा दंड़ के स्वरूप में परिवर्तन की याचना के लिए अतिरिक्त समय उपलब्ध करवाना हैं ।
3. **परिहार (Remission)** इसका अर्थ हैं, दंड़ की प्रकृति में परिवर्तन किए बिना उसकी अवधि को कम करना । उदाहरण के लिए, दो वर्ष के कठोर

5. प्रधानमंत्री का चुनाव कौन करता है?

a. मंत्री परिषद्

b. मुख्यमंत्री

c. संसद के सदस्य

d. संसद के सदस्य और विधानसभा सदस्य

उत्तर - c

6. भारतीय संविधान के अनुसार तथ्यात्मक संप्रभुता निवास करती है?

a. संसद में b. राष्ट्रपति में

c. प्रधानमंत्री में d. जनता में

उत्तर - c

7. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 74 और 75 किन विषयों पर विचार करते हैं?

a. मंत्रीपरिषद् b. लोकसभा के अध्यक्ष

c. भारत के राष्ट्रपति d. मंत्रिमंडल के सदस्य

उत्तर - a

8. वह प्रधानमंत्री कौन था जिसे संसद ने मतदान द्वारा अपदस्थ कर दिया था?

a. इंदिरा गांधी b. मोरार जी देसाई

c. वी.पी सिंह d. चंद्रशेखर

उत्तर - c

9. राष्ट्रीय एकता परिषद् (एन.आई.सी) का अध्यक्ष कौन होता है?

a. प्रधानमंत्री b. वित्त मंत्री

c. गृह मंत्री d. राष्ट्रपति

उत्तर – a

अध्याय-10

भारतीय संसद

संघीय विधानमंडल (संसद)

- 'संसद' शब्द अंग्रेजी के 'पार्लियामेंट' का हिन्दी रूपान्तरण है। इसकी उत्पत्ति फ्रेंच शब्द 'Parler' (जिसका अर्थ है बोलना या बातचीत करना) और लैटिन शब्द 'Parliamentum' से हुई है।
- लैटिन भाषी लोग इसे भोजन के बाद की जाने वाली वार्ताओं के लिए प्रयोग करते थे। यह वार्ता पादरी लोग अपने-अपने पूजा गृहों में करते थे और इन वार्ताओं को 13वीं सदी की एकलवादी सरकारों ने 'गरिमाविहीन' कहकर निंदा की थी।
- मैथ्यू पेरिस ऑफ सेन्ट अल्बान्स, वह प्रथम व्यक्ति था जिसने 1239 और पुनः 1249 ई. में 'Parliament' शब्द का पादरियों, अर्लो, और लार्डों की महान परिषद् के लिए प्रयोग किया था।
- तब से यह शब्द विभिन्न मुद्दों एवं समसामयिक विषयों पर बातचीत करने का मंच सुलभ कराने वाली सभाओं के लिए प्रयोग किया जाने लगा।

प्रश्न. कथन (A) भारत की संघात्मक संरचना का मुख्य उद्देश्य इसकी बहुआयामी विविधताओं में से एक राष्ट्र का निर्माण करना और राष्ट्रीय एकता को संरक्षित रखना था।

कारण (R) विविधताओं के संमजन से एक सशक्त न कि कमजोर भारतीय राष्ट्रीयता का निर्माण हुआ है

कूट -

A. (A) और (R) दोनों सही हैं एवं (R), A) की सही व्याख्या करता है।

B. (A) और (R) दोनों सही हैं एवं (R), A) की सही व्याख्या नही करता है।

C. (A) सही है परन्तु (R) गलत है।

D. (A) गलत है परन्तु (R)सही है।

उत्तर :-A

- **भारत की संघात्मक व्यवस्था में केन्द्रीय विधानमंडल को संसद कहते हैं।**
- एक विचारधारा और जनता की प्रतिनिधिक संस्था के रूप में संसद युगों से उन सिद्धांतों की चिरस्थायी स्मारक रही है जिनका हम नैतिक और राजनीतिक रूप से सदैव समर्थन करते रहे हैं।
- जब तक संसद जनाकांक्षाओं की अभिव्यक्ति तथा उसे पूरा करने वाला निकाय के रूप में कार्य करती रहेगी, तब तक यह देश में अशांति, असंतोष एवं अराजकता को रोकने का सबसे सशक्त माध्यम बनी रहेगी।
- संभवतः इन्हीं कारणों से **महात्मा गांधी ने कहा था कि, 'संसदीय सरकार के बिना हमारा अस्तित्व कुछ भी नहीं रहेगा।'**
- भारतीय संविधान के अनु. 79 के अनुसार संघ के लिए एक संसद होगी जो राष्ट्रपति और दो सदनों से मिलकर बनेगी जिनके नाम राज्यसभा और लोकसभा होंगे।
- राज्यसभा को उच्च सदन या द्वितीय सदन भी कहा जाता है, इसी प्रकार लोकसभा को निम्न सदन या प्रथम सदन कहते हैं।
- राज्यसभा को उच्च सदन तथा लोकसभा को निम्न सदन कहने का कारण उसमें चुनकर आने वाले सदस्यों की तुलनात्मक योग्यता है।
- परम्परागत रूप में ऐसा माना जाता है कि लोक सभा में जनता द्वारा चुनकर ऐसे लोग आते हैं जो लोकप्रिय तो हाते हैं किन्तु यह आवश्यक नहीं कि वे अत्यंत योग्य एवं विद्वान ही हों, इसमें ऐसे लोग भी प्रायः आते रहे हैं जिनके पास अत्यंत मामूली किताबी ज्ञान भी न रहा हो,
- जबकि राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा चुने हुए लोग करते हैं, अतः उसके सदस्य लोकसभा के सदस्यों की तुलना में अधिक योग्य तथा जानकार होंगे, इसीलिए लोकसभा को निम्न सदन तथा राज्यसभा को उच्च सदन कहते हैं।
- विधेयक पहले लोकसभा में प्रस्तुत किए जाते हैं और यहां से पारित हो जाने के बाद वे राज्यसभा में भेजे जाते हैं।
- चूंकि अधिकांश विध 'यक पहले लोकसभा में आते हैं और बाद में वे राज्यसभा में भेजे जाते हैं।
- अतः विधयेयकों के प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से लोकसभा को प्रथम सदन तथा राज्यसभा को द्वितीय सदन कहा जाता है।
- प्रथम और द्वितीय सदन कहने का एक आधार और भी है। लोकतंत्र में जनता सर्वोच्च होती है।
- चूंकि लोकसभा के सदस्यों का चुनाव जनता द्वारा प्रत्यक्ष होता है और राज्यसभा का चुनाव जनता द्वारा अप्रत्यक्ष अर्थात् जनता के प्रतिनिधियों द्वारा होता है, इसलिए भी लोकसभा को प्रथम सदन तथा राज्यसभा को द्वितीय सदन कहा जाता है।
- **अनु. 79 में राष्ट्रपति को संसद का अनिवार्य अंग बताया गया है क्योंकि वह संसद के सत्र को आहूत करता है, उसका स्थगन कर सकता है और लोकसभा का विघटन कर सकता है।**
- **कोई भी विधेयक, जिसे संसद के दोनों सदनों ने पारित कर दिया है, वह राष्ट्रपति की अनुमति से ही 'विधि' का रूप धारण करता है।**

प्रश्न. निम्नलिखित में से किस विधायी सदन को समाप्त किया जा सकता है ?

(A) लोकसभा **(B) राज्यसभा**

(C) विधान परिषद् **(D) विधानसभा**

उत्तर :-C

- संसद से पारित हुए विधेयकों का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि, राष्ट्रपति ने उसपर अपनी सहमति न दे दी हो।

लोकसभा

- **प्रथम लोकसभा का गठन 17 अप्रैल, 1952 को हुआ था।** लोकसभा के गठन के सम्बन्ध में

विशेष अधिवेशन

- राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा को नामंजूर करने के लिए लोकसभा का विशेष अधिवेशन तब बुलाया जा सकता है।
- **जब लोकसभा के अधिवेशन में न रहने की स्थिति में कम से कम 1/10 सदस्य राष्ट्रपति को अधिवेशन बुलाने के लिए लिखित सूचना दें या जब अधिवेशन चल रहा हो, तब लोकसभा को इस आशय की लिखित सूचना दें।**
- **ऐसी लिखित सूचना अधिवेशन बुलाने की तिथि के 14 दिन पूर्व देनी पड़ती है।**
- ऐसी सूचना पर राष्ट्रपति या लोकसभाध्यक्ष अधिवेशन बुलाने के लिए बाध्य हैं।

लोकसभाध्यक्ष - लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -

- लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।
- लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।
- **लोकसभाध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।**
- लोकसभाध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।
- कार्यकारी अध्यक्ष जो लोकसभा में सबसे अधिक उम्र का सदस्य होता है।
- आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है। **लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।**
- **लोकसभा के सदस्यों के बहुमत से पारित प्रस्ताव द्वारा अपने पद से हटाया जा सकता है।**
- लोकसभाध्यक्ष का कार्य एवं शक्तियाँ लोकसभा के सम्बन्ध में काफ़ी अधिक है, जिनका वर्णन निम्न प्रकार किया जा सकता है-

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

1. उत्तर प्रदेश	80	2. महाराष्ट्र	48
3. पश्चिम बंगाल	42	4. बिहार	40
5. तमिलनाडु	39	6. मध्य प्रदेश	29
7. कर्नाटक	28	8. गुजरात	26
9. राजस्थान	25	10. आंध्र प्रदेश	25
11. ओडिशा	21	12.केरल	20
13. तेलंगाना	17	14. असम	14
15. झारखण्ड	14	16. पंजाब	13
17. छत्तीसगढ़	11	18. हरियाणा	10
19. जम्मू / कश्मीर	6	20. उत्तराखण्ड	5
21. हिमाचल प्रदेश	4	22.आंध्रप्रदेश	2
23. गोवा	2	24. मणिपुर	2
25. मेघालय	2	26. त्रिपुरा	2
27. मिजोरम	1	28. नागालैंड	1
29. सिक्किम	1		

केन्द्रशासित प्रदेशलोकसभा सदस्यों की संख्या

1. दिल्ली	7	2.अंडमान निकोबार	1
3.चण्डीगढ़	1	4. दादरा / नागर हवेली	1
5. दमन एवं दीव	1	6. लक्षद्वीप	1
7. पुदुचेरी	1		
8. जन्मुकश्मीर	5		
9 लद्दाख	1		

राज्यसभा

संसद के दो सदन हैं - लोक सभा और राज्यसभा। राज्यसभा संसद का उच्च और द्वितीय सदन है। राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है। और इसके सदस्य विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधि होते हैं। **यह एक स्थाई सदन है और कभी भंग नहीं होता, किन्तु इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद स्थान खाली कर देते हैं,** जिनकी पूर्ति नए सदस्यों से होती है। भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।

राज्यसभा में अधिक-से-अधिक 250 सदस्य हो सकते हैं। इनमें 238 राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों

- यह संसदीय सरकार की परंपराओं पर आधारित हैं। **प्रत्येक राजनीतिक दल का संसद में सहायक नेता के रूप में अपना व्हिप होता है।**
- **इसका उद्देश्य अपनी पार्टी के नेताओं को बड़ी संख्या में सदन में उपस्थित रखने और संबंधित मुद्दे के पक्ष या खिलाफ में पार्टी के अनुसार उनके सहयोग को सुनिश्चित करना होता है। यह संसद में सदस्यों के व्यवहार पर नजर रखता है।**
- यदि किसी दल का सदस्य व्हिप के निर्देशों का उल्लंघन करता है और पार्टी उसे यदि 15 दिन में क्षमा नहीं करे तो उसकी दल की सदस्यता समाप्त हो जाती है ।

- परिसीमन [Delimi]- "किसी राज्य के विभिन्न निर्वाचित मतदाताओं की संख्या में संतुलन बनाना ही परिसीमन कहलाता है।
- **1952, 63, 73, 2003. में परिसीमन किया जा चुका हैं।**
- **2026 तक राज्य वार लोकसभा सीटों की संख्या अपरिवर्तित रहेगी ।**
- वर्तमान में तेलंगाना की "मलकांन गिरी" सर्वाधिक मतदाताओं वाली लोकसभा सीट है।
- लक्षद्वीप में न्यूनतम मतदाता हैं।

राज्यसभा	**लोकसभा**
(1) "अनुच्छेद 19 के अनुसार राज्यसभा को नयी "अखिल भारतीय योजना के गठन का अधिकार है।	मंत्रिपरिषद् लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होती है।
(2) अनुच्छेद 249 के अनुसार 2/3 बहुमत से किसी विषय को राष्ट्रीयता महत्वता घोषित कर सकती हैं इस स्थिति में उस पर कानून बनाने का अधिकार संसद को मिल सकता हैं	धन विधेयक, वित्त विधेयक लोकसभा में पुनः गठित के अनुसार किये जाते हैं।

संयुक्त बैठक अनुच्छेद- 108

- कोई विधेयक अधिनियम तभी बनता है जब दोनों सदनो द्वारा पारित कर दिया जाए।
- "किसी भी विधेयक का दोनों सदनों द्वारा पारित होना अनिवार्य है। (धन विधेयक को छोड़कर)
- यदि कोई विधेयक एक सदन द्वारा पारित करने के बाद दूसरे सदन द्वारा खारिज कर दिया जायें अथवा 6 माह तक रोक लिया जाये तो इस स्थिति में दोनों सदनों की संयुक्त बैठक बुलायी जा सकती हैं। संयुक्त बैठक में वह विधेयक साधारण बहुमत से पारित किया जा सकता है।
- संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा के अध्यक्ष द्वारा की जाती हैं। उसकी अनुपस्थिती में लोकसभा उपाध्यक्ष, राज्यसभा के सभापति अथवा किसी अन्य वरिष्ठ सदस्य द्वारा अध्यक्षता की जा सकती हैं। परन्तु उपराष्ट्रपति किसी भी स्थिति में इसकी अध्यक्षता नहीं करता

<u>संसदो की निरर्हताएँ:-</u>

- अनुच्छेद- 102 में संसदों की निरर्हता का उल्लेख हैं । इस सन्दर्भ में कोई भी मुकदमा सबसे उच्च न्यायालय में प्रस्तुत किया जाता है।
- अनुच्छेद- 103 में संसदो की निरर्हता का निर्णय राष्ट्रपति द्वारा लिया जाता हैं।
- अनुच्छेद- 101 यदि कोई सदस्य लगातार 60 बैठकों से अनुपस्थिति रहता हैं तो उसकी सदस्यता समाप्त कर दी जाती है।
- सु ब्रह्मण्यम स्वामी की सदस्यता आपातकाल इसी के तहत समाप्त की गयी थी।
- 1954 में H.G. बुडुगतल ने रिश्वत लेने के आधार पर लोकसभा से इस्तीफा लिया था ।
- ऑपरेशन चक्रव्यूह व ऑपरेशन दुर्योधन के दौरान भी लोकसभा के सदस्यों की सदस्यता समाप्त कर दी गई थी।

<u>सांसदों के विशेषाधिकार (Act-105)</u>

अनुच्छेद - 105 के तहत सांसदों को विशेषाधिकार प्रदान किये गये हैं । सांसदों को संसद में या उसकी

बैठकों में अभिव्यक्ति की असीमित स्वतंत्रता दी गयी हैं। संसद तथा संसदीय बैठकों में कही गई कोई बात पर कोई मुकदमा नहीं चलाया जा सकता हैं।
सांसदों के व्यक्तिगत आचरण पर आरोप नहीं किया जा सकता। (इसी आधार पर आर.के. करंजिया को दण्डित किया गया था)

- सत्र के 40 दिन पूर्व या 40 दिन पश्च्यात दीवानी मसलो पर सांसदों पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता ।
- सत्र के दौरान आपराधिक मसलो में भी स्पीकर की अनुमति के बगैर सांसदों को गिरफ्तार नहीं किया जा सकता ।

कोरम – किसी भी सदन की बैठक उस स्थिति में संचालित [अनु. 100 (iii)] की जा सकती हैं, **जब सदन की कुल संदस्य संख्या का 10% उपस्थित हों। यही कोरम हैं।**
लोकसभा व राज्यपाल के नियमानुसार कोरम हेतु 1/3 सदस्यों की आवश्यकता होती है ।

विपक्ष का नेता
प्रत्येक सदन में सबसे बड़े विपक्षी दल को जिसे कम से कम 10% सीटे प्राप्त हों, विपक्ष का नेता घोषित किया जाता हैं ।

- 1977 से विपक्ष के नेता को कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया गया था ।
- 1966 में सर्वप्रथम संगठन कांग्रेस के राम सुमद्र सिंह को विपक्ष का नेता घोषित किया था।
- 1977 में लोकसभा में y-B-Chavan तथा राज्यसभा में कमलापति त्रिपाठी को विपक्ष का नेता घोषित किया गया।

सचेतक / Whip- प्रत्येक दल, सम्बन्धित सदन में अपने दो पदाधिकारी की घोषणा करता हैं
(1) संसदीय दल का नेता
(2) सचेतक (Whip)

- सचेतक का मुख्य कार्य अपने दल में अनुशासन बनाये रखना हैं। दल-बदल विरोधी कानून उसी के निर्देशो पर आधारित होता है।
- संसद के दो सत्रों के बीच अधिकतम 6 माह का अवकाश हो सकता है।
- संसद की वर्ष में 90 दिन बैठक होनी चाहिए ।

<u>भारत की लोकसभायें</u>

1. (1952-57)
"इसमें कई क्षेत्रो से 2-2 सांसद चुने गये। नवम्बर 1951 से ही चुनाव प्रारंभ हो कुल 500 सीटों में से 489 सिटो के लिए चुनाव हुए ।
कांग्रेस को 364 सीटे मिली, C.P.I. (16 सीटे) सबसे बड़ा विपक्षीय दल थी ।
- श्यामदास मुखर्जी ने अनेक दलों को मिलाकर एक दल बनाया।

2. (1957-62)
3. (1962-67)
<u>1963 में पहली बार अविश्वास प्रस्ताव नेहरू सरकार के जे. बी. कृपलानी द्वारा रखा गया</u> । "राम मनोहर लोहिया का चौदह आने बनाम चार आने, भाषण लोकप्रिय हुआ ।

4. **(1967-70)**
पहली लोकसभा जो बीच में ही भंग कर दी गई । **1969 में कांग्रेस का विभाजन हो गया था ।** इन्दिरा गाँधी सरकार अल्प-मत में आ गयी थी। क्योंकि कांग्रेस का विभाजन हो गया था। साम्यवादियो के सहयोग से सरकार बचायी।

5. 1971-77 (सबसे लम्बा)
5 मार्च 1971 को अचानक चुनाव करा दिये गये। कांग्रेस – आर. को 2/3 बहुमत मिला। 1975 में आपातकाल लागू किया गया ।
सर्वाधिक 29 अध्यादेश इसी वर्ष जारी किये गए । 42वे संविधान – संशोधन द्वारा लोकसभा का चुनाव 1 वर्ष बढ़ा दिया गया था । आपातकाल के कारण इसमें 1 वर्ष की और वृद्धि कर दी गई । यह लोकसभा

धन-विधेयक (अनुच्छेद- 110)

धन विधेयक पारित होने पर सरकार को धन एकत्र करने की अनुमति मिलती हैं ।

- **धन विधेयक में 6 बिन्दु होते हैं - कर की दर बढ़ाया, घटाना, संचित निधि से धन निकालना या जमा करना, संचित निधि का लेखा एवं लेखा परीक्षण ।**
- धन विधेयक पर लोकसभा का विशेषाधिकार होता है, राज्यसभा इसे अधिकतम 14 दिन तक ही रोक सकती हैं। यदि किसी विधेयक में उपरोक्त 6 बातों के अतिरिक्त कुछ और भी होता है, तो उसे वित्त विधेयक कहा जाता है वित्त विधेयक पर राज्य सभा का समान अधिकार होता है।
- **विनियोग विधेयक - विनियोग विधेयक पारित होने के बाद ही सरकार संचित निधि से धन निकाल सकती है।**

- बजट के बाद सरकार संसद में विभिन्न प्रस्ताव के माध्यम से अतिरिक्त धन प्राप्त कर सकती है।

○ अनुपूरक माँगे - यह माँगें वित्तीय वर्ष समाप्त होने के पूर्व संसद में रखी जाती है।

(ii) अतिरिक्त मांगे - यह माँगे वित्तीय वर्ष समाप्त होने के बाद संसद में रखी जाती है।

(iii) अपवाद माँगे - यह माँगे विशेष प्रयोजन के लिये संसद में रखी जाती हैं।

(iv) प्रत्यानुदान - यह माँगें आपातकालीन स्थितियों का सामना करने के लिये संसद में रखी जाती हैं।

प्रश्न. 15वीं लोकसभा में आंग्ल - भारतीय समुदाय के दो मनोनीत में से एक केरल से है और अन्य है?

(A) मिजोरम **(B) गोवा से**

(C) छत्तीसगढ़ **(D) मणिपुर**

उत्तर :-C

प्रश्न. भारत के किस राज्य में सर्वप्रथम महिला मुख्यमंत्री नियुक्त हुई थी ?

(A) उत्तर प्रदेश में **(B) बिहार**

(C) तमिलनाडु **(D) दिल्ली**

उत्तर :-A

सारांश

- संसद, केन्द्र सरकार का विधायी अंग है। संसदीय प्रणाली, जिसे सरकार का ' बेस्ट मिंस्टर मॉडल' भी कहते हैं। अपनाने के कारण भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में संसद एक विशिष्ट व केन्द्रीय स्थान रखती है।
- संविधान के अनुसार भारत की संसद के तीन अंग हैं - राष्ट्रपति, लोकसभा व राज्यसभा। 1954 में राज्य परिषद् एवं जनता का सदन के स्थान पर क्रमशः राज्यसभा एवं लोकसभा शब्द को अपनाया गया।
- राज्यसभा में राज्य व संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिनिधि होते हैं, जबकि लोकसभा संपूर्ण रूप में भारत के लोगों का प्रतिनिधित्व करती है।
- राष्ट्रपति संसद के किसी भी सदन का सदस्य नहीं होता है और न ही वह संसद मे बैठता है लेकिन राष्ट्रपति संसद का अभिन्न अंग है।
- राष्ट्रपति दोनों सदनों का सत्र आहुत करता है या सत्रावसन करता है, लोकसभा को विघटित कर सकता है, जब सदन का सत्र न चल रहा हो, वह अध्यादेश जारी कर सकता है।
- राज्यसभा की अधिकतम संख्या 250 निर्धारित है इनमें से 238 सदस्य राज्यों व संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिनिधि (अप्रत्यक्ष रूप में निर्वाचित) होंगे जबकि 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किए जायेंगे।

- लोकसभा की अधिकतम संख्या 552 निर्धारित की गई है। इनमें से 530 राज्यों के प्रतिनिधि, 20 संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिनिधि होते हैं, एंग्लो इंडियन समुदाय के दो सदस्यों को राष्ट्रपति नामित करता है।
- राज्यसभा एक स्थायी संस्था है और इसका विघटन नहीं होता किन्तु इसके एक-तिहाई सदस्य हर दूसरे वर्ष सेवानिवृत्त होते हैं। राष्ट्रपति द्वारा हर तीसरे वर्ष की शुरुआत में मनोचयन होता है।
- लोकसभा अस्थाई संस्था है, सामान्य तौर पर इसकी अवधि आम चुनाव के बाद पहली बैठक से 5 वर्ष के लिए होती है। इसके बाद स्वयं विघटित हो जाती है।
- संविधान के अनुसार किसी व्यक्ति को संसद की सदस्यता से अयोग्य ठहराया जा सकता है, अगर उसे दसवीं अनुसूची के उपबंधों के अनुसार, दल- बदल दोषी पाया जाता है।
- संसद के दोनों सदनों के सदस्यों को संसद द्वारा निर्धारित वेतन एवं भत्ते लेने का अधिकार है। संविधान में इनके लिए पेंशन का कोई प्रावधान नहीं है लेकिन संसद अपने सदस्यों को पेंशन देती है।
- लोकसभा अध्यक्ष और उपाध्यक्ष व राज्यसभा के सभापति और उप-सभापति के वेतन व भत्ते भी संसद निर्धारित करती है। वह भारत की संचित निधि पर भारित है और वह संसद के वार्षिक मत के अधीन नहीं है।
- संसद के प्रत्येक सदन के अपने पीठासीन अधिकारी होते हैं लोकसभा में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष और राज्यसभा में सभापति और उप-सभापति होते हैं इसके अलावा लोकसभा में सभापति का पैनल व राज्यसभा में उप-सभापति का पैनल भी नियुक्त किया जाता है।
- संसद के दोनों सदनों में एक-एक 'विपक्ष का नेता ' होता है विपक्ष में सबसे बड़ी पार्टी के सदस्य कुल सदस्यों के दसवें हिस्से के करीब होने चाहिए।

• अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. भारत की संघीय व्यवस्थापिका को किस नाम से जाना जाता है ?

(A) लोकसभा (B) राज्यसभा
(C) प्रतिनिधि सभा (D) संसद

उत्तर :-D

2. भारतीय संसद के कितने सदन हैं ?

(A) एक (B) दो
(C) तीन (D) चार

उत्तर:-B

3. संसद के स्थायी सदन हैं ?

(A) लोकसभा (B) राज्यसभा
(C) उपयुक्त दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

उत्तर:-B

4. भारतीय संसद बनती है?

(A) केवल लोकसभा द्वारा
(B) राज्यसभा एवं लोकसभा के द्वारा
(C) लोकसभा में राष्ट्रपति द्वारा
(D) लोकसभा, राज्यसभा एवं राष्ट्रपति के द्वारा

उत्तर :- (D)

5. निम्नलिखित में से कौन संसद का अनन्य भाग्य नहीं है ?

(A) राष्ट्रपति (B) उपराष्ट्रपति
(C) लोकसभा (D) राज्यसभा

उत्तर:-B

नोट – प्रिय उम्मीदवारों, यहाँ हमने केवल SAMPLE ही दिया है, पूरा टॉपिक नही दिया है / यदि आपको हमारे नोट्स के सैंपल अच्छे लगे हों तो कम्पलीट नोट्स खरीदने के लिए नीचे दिए गये हमारे संपर्क नंबर पर कॉल कीजिए या लिंक पर क्लिक करें / दोस्तों, हमें पूर्ण विश्वास है कि ये नोट्स आपकी "RPSC RAS (PRE.)" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे और आप "INFUSION NOTES" के साथ इस परीक्षा में जरूर सफल होंगे, धन्यवाद /

RAS Pre. 2021 की परीक्षा में हमारे नोट्स में से 74 प्रश्न आये थे , जबकि cutoff मात्र 64 प्रश्न पर गयी थी /

संपर्क करें – 8233195718, 8504091672, 9694804063, 7014366728,

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम | -

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
REET (लेवल -1, 2)	2021	98 (150 में से)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	13 सितम्बर	113 (200 में से)

राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	95 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (1st शिफ्ट)	56 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like REET, UPSC, SSC Etc.

दोस्तों, इनका proof देखने के लिए नीचे दी गयी लिंक पर क्लिक करें या हमारे youtube चैनल पर देखें –

RAS PRE. 2021 – https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=136s

VDO PRE. – https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari – https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=103s

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

अन्य परीक्षाओं में भी इसी तरह प्रश्न आये हैं Proof देखने के लिए हमारे youtube चैनल (Infusion Notes) पर इसकी वीडियो देखें या हमारे नंबरों पर कॉल करें।

संपर्क करें- 7014366728, 8233195718, 9694804063, 8504091672

ONLINE ORDER के लिए OFFICIAL WEBSITE	Website- https://bit.ly/ras-pre-notes
PHONE NUMBER	+918504091672 9887809083 +918233195718 9694804063
TELEGRAM	https://t.me/infusion_notes
FACEBOOK PAGE	https://www.facebook.com/infusion.notes
WHATSAPP करें	https://wa.link/6r99q8